।।ओ३म्।।

दान
देवपूजा
संगतिकरण

दान
देवपूजा
संगतिकरण

वेदों की
ओर लौटो !

सारे संसार को
श्रेष्ठ बनाओ !!

वैदिक यज्ञ एवं भजन माला

आर्य समाज भगवती नगर

कार्यकारिणी सदस्य

वैदिक हवन संध्या

वेद एक ऐसा 'वृत्त' है
जिसकी 'परिधि' कहीं भी नहीं
है परंतु 'केंद्र' सब जगह है।

प्रकाशक

आर्य समाज, भगवती नगर

गंगापुर सिटी

प्रकाशक :
आर्य समाज, भगवती नगर
गंगापुर सिटी, जिला–सवाई माधोपुर (राजस्थान)

संकलन :
अनीता डाँस, कुशला खूँटेटा, मिथलेश गुप्ता, राधा अग्रवाल,
एवं समस्त महिला मण्डल आर्य समाज
भगवती नगर, गंगापुर सिटी।

प्रकाशन सहयोगी :
रामदयाल डाँस (प्रधान), रमेश चन्द्र (किशोरपुर वाले)
राजेश आर्य (मंत्री), सूरजमल सैक्रेट्री (प्रचार मंत्री)
सुरेश डाँस (कोषाध्यक्ष) एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य
आर्य समाज, भगवती नगर, गंगापुर सिटी

संस्करण : प्रथम (प्रति 1000)
मूल्य : 50/– (पचास रुपये मात्र)

मुद्रक एवं टाईप सेटिंग :
ओमप्रकश अग्रवाल
संगम ऑफसेट प्रिन्टर्स
आर्य समाज रोड़, उदेई मोड़, गंगापुर सिटी
मो. 9928122362

हमारे प्रेरणास्त्रोत

पं. मदनमोहन आर्य

गंगापुर सिटी आर्य समाज के स्तम्भ पं. मदन मोहन आर्य वैसे तो किसी परिचय के मोहताज नहीं है फिर भी आपके समक्ष एक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है।

आपका जन्म वर्ष 1944 हिरण्याकश्प नगरी हिण्डौन सिटी के सामान्य एवं पौराणिक अग्रवाल परिवार में हुआ, आपकी शिक्षा दीक्षा भी हिण्डौन सिटी, वर्तमान जिला करौली में ही सम्पन्न हुई। बचपन से ही आपके आर्यवीर दल की शाखाओं के माध्यम से आर्य समाज, हिण्डौन सिटी से जुड़ने के कारण वैदिक विचारधारा का प्रभाव आपके अर्न्तमन को छूने लगा था।

वैदिक विचारधारा में आपका दृढ़ संकल्प होने के कारण एक प्रचारक के रुप में आपका आगमन गंगापुर सिटी में हुआ और यहाँ एक किराये के मकान में आर्य समाज की शाखा की स्थापना कर दैनिक हवन एवं प्रवचन का श्रेष्ठ कार्य प्रारम्भ किया। धर्म के सही मर्म को समझाने के लिए दिन-रात मेहनत करते हुए आपने धीरे-2 अनेक परिवारों को आर्य समाज से जोड़ा, जिसके परिणामस्वरुप शहर आर्य समाज के भवन का निर्माण सम्भव हो सका।

आपके प्रभावशाली व्यक्तित्व, वैदिक धर्म के प्रति कर्मठता व ओजस्वी प्रवचनों की निरन्तर शहर में चर्चा होने लगी और धीरे-2 आर्य परिवार का रुप विस्तृत होने लगा। परिणामस्वरुप आज गंगापुर सिटी में दूसरे आर्य समाज भवन का निर्माण भी भगवती नगर, गंगापुर सिटी के रुप में हमारे सामने है। जिसमें प्रतिदिन हवन एवं प्रवचन कार्य निरन्तर चल रहा है।

समय-2 पर हिन्दू धर्म के लिये जब भी आवश्यकता महसूस हुई आपने जी-जान से अपने कर्त्तव्य को अंजाम तक पहुँचाया है।

कैलादेवी में बकरे की बली को बन्द करवाने, गौवंश संरक्षण, गंगापुर सिटी मुख्य सड़क से मीट मार्केट बन्द करवाने तथा विधर्मियों

द्वारा हिन्दू धर्म की बेटियों को बहला–फुसलाकर ले जाने पर आपने अपने निडरता व कर्मठता का परिचय दिया एवं जान की परवाह ना करते हुए शासन–प्रशासन व विधर्मियों के समक्ष डटकर खड़े रहे और अपनी जायज मांग को मनवाकर ही दम लिया।

1 अगस्त 1980 में बैलों से भरी मालगाड़ी को आपने अपने प्रयासों द्वारा बैलों को मुक्त कराकर एक आंदोलन खड़ा किया जिसके फलस्वरुप राजस्थान में गौवंश निकासी प्रतिबंध कानून बना।

वर्तमान में आपके प्रयासों से ही शहर में आर्यवीर दल की 2 शाखाएँ संचालित हो रही है, जिसमें बच्चों को धर्म, संस्कृति एवं आत्मरक्षा की शिक्षाऐं बचपन से ही दी जा रही है।

आर्य समाज के प्रचार को गति देने एवं महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिए प्रतिवर्ष वेदकथा एवं यज्ञ का आयोजन वृहद स्तर पर आपके सानिध्य में किया जाता है। इसी समय गुरुकुलों के सहायतार्थ राशि एकत्रित करके भिजवाई जाती है, जहाँ पर वेदों के अनेक विद्वान प्रतिवर्ष तैयार हो रहे है। आप समय–2 पर गुरुकुलों का भ्रमण करने भी जाते है और गुरुकुलों की सहायता में सदैव अग्रणी रहते है। गुरुकुलों में आपको खीर वाले बाबा के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि पंडितजी जब भी गुरुकुलों में जाते है वहाँ खीर का प्रसाद वितरण अवश्य करवाते है जिससे वहाँ अध्ययनरत विद्यार्थी आपको देखते ही 'खीर वाले बाबा' के नाम से सम्बोधित करते हैं।

राष्ट्रीय एवं प्रांतीय स्तर पर होने वाले सभी कार्यक्रमों में आप एक वक्ता के रुप में भाग लेते रहे है। आपने ओजस्वी वक्ता के रूप में गंगापुर शहर का नाम दूर दराज के क्षेत्र में रोशन किया है।

आपने भारतीय संस्कृति के मूल्यों को सजाने व संवारने के लिए एक विद्यालय आर्य बाल विद्या मंदिर की भी स्थापना की जो वर्तमान में बालाजी चौक, गंगापुर सिटी में संचालित है।

अन्त में परमात्मा से यही विनती एवं हृदय के भाव है कि आपका मार्गदर्शन एवं सानिध्य लम्बे समय तक मिलता रहे, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ धर्म के सही मर्म को समझ सके। अन्धविश्वास की जगह तार्किक एवं वैज्ञानिक ढंग से उनके सोचने समझने के तौर तरीके बन सके। इसी शुभ कामना के साथ।

सादर नमस्कार !

—ओमप्रकाश आर्य

अनुक्रमणिका

क्र.सं	विषय	पृष्ठ सं.
1.	प्रभाती	7
2.	प्रातर्वन्दना	7
3.	ब्रह्मयज्ञ : वैदिक सन्ध्या	7
4.	अथ आचमनमन्त्राः	8
5.	अथेन्द्रियस्पर्शमन्त्राः	8
6.	साधक का शिवसंकल्प	9
7.	अथेश्वरप्रार्थनापूर्वकमार्जनमन्त्राः	10
8.	अथ प्राणायाममन्त्राः	11
9.	अथ अघमर्षणमन्त्राः	11
10.	अथ मनसापरिक्रमामन्त्राः	12
11.	उपस्थानमन्त्राः	14
12.	अथ समर्पणम्	16
13.	अथ नमस्कारमन्त्र	16
14.	देवयज्ञ : अग्निहोत्र	18
15.	अथ आचमनमन्त्राः	18
16.	अंग–स्पर्श–मन्त्राः	18
17.	ईश्वर–स्तुति–प्रार्थनोपासना मन्त्राः	18
18.	अथ स्वस्तिवाचनम्	21
19.	अथ शान्तिकरणम्	27
20.	यज्ञोपवीत मंत्र	33
21.	अग्न्याधानमन्त्रः	33
22.	समिदाधान के मन्त्र	34
23.	पंचघृताहुतय :	34
24.	जल प्रसेचनमन्त्राः	35
25.	आघारावाज्याहुतिमन्त्र	35
26.	आज्यभागाहुतिमन्त्र	36
27.	प्रातःकालीन आहुति के मंत्र	36
28.	सायंकालीन आहुति के मंत्र	38
29.	विशेष मंत्रो से आहुतियां	39
30.	राष्ट्रीय प्रार्थना मंत्र	39
31.	व्याहृत्याहुतिमन्त्राः	39
32.	स्विष्टकृदाहुतिमन्त्रः	40
33.	प्राजापत्याहुति मन्त्रः	40
34.	पूर्णाहूति	40
35.	अथ भूतयज्ञः (बलिवैश्वदेवयज्ञः)	40
36.	यज्ञ–प्रार्थना	41
37.	त्वमेव माता च पिता	42
38.	उद्घोष	43
39.	विशेष आहुतियाँ आज्याहुतिमन्त्राः अष्टाज्याहुतिमन्त्राः	44
40.	पौर्णमासी की आहुतियाँ	45
41.	अमावस्या की आहुतियाँ	45
42.	अथ पितृयज्ञः	46
43.	अथ अतिथियज्ञः	46
44.	जन्म दिवस–वर्षगांठ	46
45.	वैवाहिक वर्षगांठ	49
46.	आर्यपर्व–पद्धति	51
47.	नवसंवत्सर	51
48.	आर्य समाज स्थापना दिवस	53
49.	श्रीरामनवमी	54
50.	हरि तृतीया (हरयाली तीज)	54
51.	श्रावणी (ऋषितर्पण)	54
52.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	57
53.	विजयादशमी	57
54.	शारदीय नवसस्येष्टि (दीपावली) दयानंद बलिदान	58
55.	नवसस्येष्टि की 31 विशेष आहुतियाँ	59
56.	मकर सौर–संक्रान्ति	62
57.	वसन्त पंचमी	63
58.	दयानन्द बोधोत्सव	63
59.	होलिकोत्सव	64
60.	मुझमें ओम तुझमें ओम	65
61.	नमस्कार भगवान तुम्हे	65
62.	हे ज्ञानवान भगवन हमको	66
63.	दो घड़ी भगवान का ले	67
64.	होगा सुखमय सब संसार	68
65.	सुबह शाम भजन करे ले	68
66.	प्रभु की शरण में तेरा तन	69
67.	एक बाग लगाया है	70

क्र.सं	विषय	पृष्ठ सं.
68.	दाता तेरे सुमरन का	71
69.	प्रभु तेरा ओम नाम	72
70.	मेरी बहना ओम को	73
71.	प्रभु नाम जप ले सुबह	74
72.	प्रभु तेरे चरणों में हम सब	74
73.	तेरे पूजन को भगवान	75
74.	सत्संग में आ शुभ कर्म	75
75.	काशी जाकर देख लिया	76
76.	वेद पढ़ा जाय और हवन	77
77.	कण–कण में बसा प्रभु देख	77
78.	प्रभु में ध्यान लगाले अरे	78
79.	सब का तू मालिक	79
80.	जिस दिन घमण्ड अपने	79
81.	सब का दाता एक है	80
82.	यह जग रैन बसेरा	81
83.	भक्त जनों का रखवाला	81
84.	सुख आये चाहे दुख आये	82
85.	जन्म जन्म के चक्कर	83
86.	प्रभु का प्यार	84
87.	सत्संग वाली नगरी चल	85
88.	इतनी दया करो भगवान	86
89.	योगी आया था वेदो वाला	86
90.	रहे ऋषि दयानन्द तेरी युग	88
91.	जागो तो एक बार जागो	89
92.	जग को जगाने वाला आर्य	90
93.	शिवरात्रि मुबारक हो	90
94.	इस कुल का दीपक प्यारा	91
95.	देते सभी बधाई जन्म दिन	92
96.	सब मिल के देओ बधाई	92
97.	होके मन में मगन गा रहे	93
98.	आज का दिन प्यार लेके	94
99.	खुशी का दिन आया है	94
100	शुभ विवाह की वर्षगांठ पर	95
101	सदा सुखी सम्पन्न जोड़ी	96
102	यह मंगल भवन बन जाना	97
103	धागों का त्यौहार है राखी	97
104.	प्यारे प्रीतम से कर मेल	98
105.	होली है जी होली है रंग	98
106	अरी बहना सोलह संस्कार	100
107	जिसके लिए इस देश की	101
108.	हुआ शुभ जन्म लालन का	102
109.	बनकर सूरज चांद गगन में	102
110.	नर तेरो चोला रतन अमोल	103
111.	फूलों से तुम हंसना सीखो	103
112.	ओम की बोलो जयकार	104
113.	कंचन जैसी काया काउ	105
114.	चरित्र अमर था कृष्ण	106
115.	तेरी आयु बीती जाय	107
116.	सुख भी मुझे प्यारे है	108
117.	परमपिता से प्यार नहीं	109
118.	भरोसा नाथ है तेरा	110
119.	प्रभु सारी दुनिया में ऊंची	111
120.	तेरी लीला का तेरी माया	112
121.	हर पल में हो प्रभु सुमिरन	112
122.	जाप ना किया तुने	113
123.	संसार के लोगों से आशा	113
124.	तू मंदिर–मंदिर क्या भटके	114
125.	जीवन में जिसने यश ना	114
126.	गुणगान करो जगदीश्वर	115
127.	विश्वपति जगदीश तुम	116
128.	हम सब मिलके दाता	117
129.	जीवन की रुलाती	117
130.	प्रभु का प्यार	118
131.	ओम ओम बोलो	119
132.	प्रातः समय प्रभु गुणगान	120
133.	ईश्वर सबका एक है	120
134.	एक दिन बिक जायेंगे	121
135.	ईश्वर सबका एक है	122
136.	वेदों से जो दूरी थी	123
137.	ईश्वर किसे कहते है	124
138.	उपासना किसकी व कैसे	124
139.	आप जीव अंश है या पूर्ण	124
140.	हमारा जन्म क्यों?	125
141.	वायु शुद्धि हेतु हवन	127
142.	ज्ञानी व्यक्ति पाप से बच	128
143.	देवता कौन	128
144.	सत्संग	129
145.	वेद ज्ञान सबके लिए	135
146.	एक विचार	136

प्रभाती

ओं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम।।1।।
प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह।।2।।
भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वै र्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम।।3।।
उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ।।4।।
भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।

प्रातर्वन्दना

ओ३म् में ही आस्था, ओ३म् में ही विश्वास।
ओ३म् में ही शक्ति, ओ३म् में ही संसार।
ओ३म् से ही होती है, अच्छे दिन की शुरुआत।।

ब्रह्मयज्ञ : वैदिक सन्ध्या

गायत्री मन्त्र

ओ३म्। भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।। —यजु:० ३६.३

तूने हमें उत्पन्न किया पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम दुःखियों के कष्ट हरता तू।
तेरा महान् तेज है छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु–वस्तु में तू हो रहा है विद्यमान।
तेरा ही धरते ध्यान हम माँगते तेरी दया।

ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला।
भगवन् हमारी बुद्धि को सत्य मार्ग पर चला।।

आत्म–निवेदन : हे सर्वरक्षक, प्राणस्वरुप, दुःखों का नाश कर, सर्वसुख प्रदाता परमेश्वर ! आपने इस संसार को रचकर प्रकाशित किया है। हम आपके इस सवितास्वरुप का वरण (अनुकरण) करते हैं। आप पाप–ताप के नाश करने वाले हैं। हे देव ! हम आपके इस पापनाशक तेज को धारण करें। धारण किया हुआ यह तेज हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर, सत्कर्मों में प्रेरित करें।

अथ आचमनमन्त्रः

जलपात्र से दाहिने हाथ की हथेली में जल लेकर निम्नलिखित मन्त्र को एक ही बार बोलकर तीन बार आचमन करें। इससे कण्ठस्थ कफ की थोड़ी–सी निवृत्ति होती है। जल न हो तो आचमन न करें।

मन्त्रोच्चारण अवश्य करें–

ओ३म्। शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शँयोरभिस्त्रवन्तु नः।। *–यजुः० ३६.१२*

देवीस्वरूप ईश्वर ! पूरण अभीष्ट कीजे।
यह नीर हो सुधामय कल्याण–दान दीजे।।

आत्म–निवेदन : हे दिव्य गुणोंवाले सर्वव्यापक प्रभुदेव! आप सांसारिक–सुख व मोक्ष–आनन्द के देनेवाले हो। आप हमें सब ओर से सुख–शान्ति प्रदान कीजिए। आप कल्याणकारी हो, हमारा कल्याण कीजिए!

अथेन्द्रियस्पर्शमन्त्राः

बाएँ हाथ की हथेली में जल लेकर सीधे हाथ की मध्यमा और अनामिका (दूसरी और तीसरी) अंगुलियों से जल–स्पर्श करके

पहले दाहिने और फिर बाएँ अंगों का निम्नलिखित मन्त्रों से स्पर्श करें—

ओं वाक् वाक्।	– इससे मुँह का दायाँ, बायाँ भाग।
ओं प्राणः प्राणः।	– इससे नाक का दायाँ और बायाँ भाग।
ओं चक्षुश्चक्षुः।	– इससे दायीं ओर बायीं आँख।
ओं श्रोत्रं श्रोत्रम्।	– इससे दायाँ और बायाँ कान।
ओं नाभिः।	– इससे टूँडी।
ओं हृदयम्।	– इससे हृदय।
ओं कण्ठः।	– इससे कण्ठ (गला)।
ओं शिरः।	– इससे मस्तक।
ओं बाहुभ्यां यशोबलम्।	– इससे दोनों बाहु (भुजाएँ)।
ओं करतलकरपृष्ठे।	–इससे दोनों हथेली और पृष्ठभाग।

साधक का शिवसङ्कल्प

तन–मन–वचन से होंगे हम शुद्ध कर्मकारी।
दुष्कर्म से बचेंगी ये इन्द्रियाँ हमारी।।
वाणी विशुद्ध होगी, प्रिय प्राण शक्तिशाली।
होंगी हमारी आँखें, शुभ दिव्य ज्योतिवाली।।
ये कान ज्ञानभूषित, नाभि महत् सुखारी।
होगा हृदय दयामय ! निर्मल नृधर्मधारी।।
भगवान तेरी गाथा गाएगा कण्ठ मेरा।
सिर में सदा रमेगा, गौरव अनन्त तेरा।।
होंगे ये हाथ मेरे, यश–ओज–तेजधारी।
मेरी हथेलियाँ ये होंगी, पवित्र प्यारी।।

आत्म–निवेदन – हे सर्वशक्तिमन् प्रभुदेव ! मेरी वाक् इन्द्रिय और उसकी शक्ति बलवान् हो, मेरी प्राणेन्द्रिय व प्राणशक्ति

बलवान हो, मेरी आँखें व उनकी दृश्यशक्ति बलवान् हो, मेरी कर्णेन्द्रिय व श्रवणशक्ति बलवान हो। हे स्वामिन् ! मेरी नाभि, मेरा हृदय, मेरा कण्ठ और मेरा मस्तिष्क अपने–अपने कार्य में सक्षम व समर्थ होवें। मेरे दोनों हाथ बलवान् व यशस्वी हों, मेरी हथेलियाँ और उनका पृष्ठभाग भी सशक्त और यशस्वी हो।

अथेश्वरप्रार्थनापूर्वकमार्जनमन्त्राः

पुनः उसी प्रकार बायीं हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की उन्हीं दोनों अंगुलियों से शरीर के अंगों पर निम्नलिखित मन्त्रों से मार्जन करें, अर्थात् जल छिड़कें –

ओं भूः पुनातु शिरसि। – इससे सिर पर।
ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। – इससे दोनों नेत्रों पर।
ओं स्वः पुनातु कण्ठे। – इससे कण्ठ (गले) पर।
ओं महः पुनातु हृदये। – इससे हृदय पर।
ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। – इससे नाभि (टूँडी) पर।
ओं तपः पुनातु पादयोः। – इससे दोनों पैरों पर।
ओं सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि। – इससे पुनः सिर पर।
ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र। – इससे सभी अङ्गों पर।

प्राणों के प्राण प्रभुवर! मस्तक पवित्र कर दो।
पावन पिता! दयाकर आँखों में ज्योति भर दो।।
आनन्दमय अधीश्वर! हमको सुकण्ठ दीजे।
मेरे हृदय–सदन में, सर्वेश! वास कीजे।।
जग के पिता! हमारी हो नाभि निर्विकारी।
पद भी पवित्र होवें शुभ ज्ञान–ज्योति धारी।।
पुनि–पुनि पवित्र शिर हो, हे सत्यरूप स्वामी।
सर्वाङ्ग शुद्ध होवें, व्यापक विभो नमामि।।

अथ प्राणायाममन्त्राः

शरीर को सीधा रख, दोनों हाथों की अधखुली–सी मुट्ठियों की पीठ घुटनों के ऊपर रखकर भीतर की वायु को बलपूर्वक बाहर निकालकर जितनी देर रोक सकें, बाहर ही रोके रक्खें, फिर धीरे–धीरे भीतर जाने दें और वहाँ भी कुछ देर रोकें। फिर बाहर निकालकर जितनी देर रोक सकें, रोकें। यह एक प्राणायाम हुआ। ऐसे–ऐसे कम–से–कम तीन और अधिक–से–अधिक २१ प्राणायाम करें।

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः । ओं महः।
ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम्।। —*तैत्ति. १.२७*

सभी हम प्रभो! अब शरण आपकी हैं।
हुई दूर बाधा, जो भव–ताप की हैं।।

अथ अघमर्षणमन्त्राः

ओ३म्। ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः।।1।।
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।।2।।
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।3।।

—ऋ. १०.१९०.१–३

ऋत सत्य से ही तूने संसार को बनाया।
तेरा ही दिव्य कौशल है सिन्धु ने लखाया।।
पहले के कल्प–जैसे रवि–चन्द्र को सजाया।
दिन–रात पक्ष संवत् में काल को सजाया।
द्यौ–अन्तरिक्ष–धरणी सब नेम पर टिकाये।
तू रम रहा सभी में तुझमें सभी समाये।।

अघमर्षण–विधि के पश्चात् यहाँ पुनः इस मन्त्र को एक

बार बोलकर तीन बार आचमन करें—

ओ३म्। शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शँयोरभिस्रवन्तु नः।। *—यजु:० ३६.१२*

सन्ध्या के आरम्भ में शिखा को बाँधते हुए, जो गायत्री मन्त्र बोला था वहाँ से लेकर अब तक बोले गये मन्त्रों के अर्थों का इस समय अच्छी प्रकार मन से मनन करें, ईश्वर का ध्यान तथा उपासना करें।

अथ मनसापरिक्रमामन्त्राः

नीचे लिखे मन्त्रों से सर्वव्यापक परमात्मा की स्तुति—प्रार्थना करें। इन छह मन्त्रों से परम प्रभु ओम् की सत्ता को सब दिग्—दिगन्तरों में अनुभव करते हुए सम्पूर्ण विश्व के साथ द्वेष—भावना को नष्ट करके मैत्रीभाव स्थापित कर निर्भय, निःशङ्क उत्साही, आनन्दित और पुरुषार्थी रहें।

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

—अथर्व. का. ३ सू. २७, मन्त्र १

हे ज्ञानमय प्रकाशक! बन्धन—विहीन प्यारा।
प्राची में रम रहा है, रक्षक पिता हमारा।।
रवि—रश्मियों से जीवन पोषण—विकास पाता।
अज्ञान—अन्धकार में भी तू ही प्रभा दिखाता।।
हम बार—बार भगवन्! करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर वह तेरे न्याय—हस्ते।।

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

तू इन्द्ररूप भगवन् ! दक्षिण में भी दिखाता।
जड़ जीव—जन्तुओं से तू ही हमें बचाता।।

वैदिक–सुधा पिलाता तू ज्ञानियों के द्वारा।
तुझसे लगन लगी है सर्वस्व तू हमारा।।
हम बार–बार स्वामिन्! करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर वह तेरे न्याय–हस्ते।।

प्रतीची दिग्वरूणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

पश्चिम में वास तेरा तू ही वरूण कहाता।
विषधारियों के भय से, हमको सदा बचाता।।
सब प्राणियों का पोषण, करता हैं अन्न द्वारा।
दुःख में तुही है साथी, सुख में तुही सहारा।।
हम बार–बार भगवान् ! करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर वह तेरे न्याय–हस्ते।।

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

हे सोमरूप स्वामी ! उत्तर दिशा निहारा।
तेरी उपासना है, भव–सिन्धु में सहारा।।
विद्युत् बनाके तूने, भूलोक जगमगाया।
जीवों में उसकी सत्ता सञ्चार कर सजाया।।
हम बार–बार भगवन् ! करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हों परस्पर वह तेरे न्याय–हस्ते।।

ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरूध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।

हे विष्णु सर्वव्यापी ! दृढ़ता हमें सिखाओं।
कर्त्तव्य में निरत रह, हँसना हमें बताओ।।
रक्षण तू कर रहा है, सन्तानवत् हमारा।
दु:ख–सुख सभी समय में साथी सखा हमारा।।
हम बार–बार भगवन् ! करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर, वह तेरे–न्याय हस्ते।।

ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपति: शिवत्रो रक्षिता वर्षमिषव:। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भें दध्म:।।

अन्तर–दृगों में भगवन् ! ऊपर भी दृष्टि आते।
ऋतु सिद्ध वृष्टि होती, सब सृष्टि को चलाते।।
भौतिक विभूतियाँ हैं, तेरी प्रकट निशानी।
कैसे कहेगी वाणी, ऐसी अकथ कहानी।।
हम बार–बार भगवन् ! करते तुम्हें नमस्ते।
जो द्वेष हो परस्पर, वह तेरे–न्याय हस्ते।।

उपस्थानमन्त्रा:

तत्पश्चात् परमात्मा का उपस्थान, अर्थात परमेश्वर के निकट मैं और मेरे अति निकट परमात्मा है, ऐसी बुद्धि करके करें–

ओं उद्वयन्तमसस्परि स्व: पश्यन्तऽउत्तरम्।
देवन्देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।१।।

रवि–रश्मि के रचैया ! पावन प्रभा दिखा दो।
अज्ञान की तमिस्त्रा भूगोल से मिटा दो।।
देवों के देव ! दिन–दिन हो दिव्य–दृष्टि प्यारी।
श्रुतिगान को न भूले रसना कभी हमारी।।

उदु त्यञ्जातवेदसन्देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम्।।२।।

इन बाह्म चक्षुओं से वह दृष्टि में न आया।
चाहा पता लगाना उसका पता न पाया।।
होकर निराश जब मैं घर लौट आ रहा था।
सृष्टि का जर्रा-जर्रा प्रभु-गान गा रहा था।।
दर्शन प्रभु के करके जब मन मेरा न माना।
भरकर खुशी में, उसने गाया नया तराना।।
जीवन में ज्योति, प्राणों में प्रेरणा तुम्हीं हो।
मन में मनन, बदन में नव-चेतना तुम्हीं हो।।

चित्रन्देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरूणस्याग्ने।
आप्रा द्यावांपृथिवीऽअन्तरिक्षँ्सूर्यऽऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च
स्वाहा।।३।। —यजुः० ७.४२

अद्भुत स्वरूप तेरा, तेरी अनूप करनी।
हैं आपमें अवस्थित द्यौ, अन्तरिक्ष, अवनी।।
तेरी कृपा से प्रभुवर ! सच्चा प्रकाश पाया।
श्रद्धा की अञ्जली ले तेरे समीप आया।।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्तांच्छुक्रमुच्चरत्।। पश्येम शरदः शतञ्जीवेम
शरदः शतँ्श्रृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः
स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात्।।४।। —यजुः० ३६.२४

जगदीश ! यह विनय है, हम वीरवर कहावें।
होकर शतायु स्वामिन् ! तुमसे लगन लगावें।।
सौ साल तक हमारी आँखे हों ज्योतिधारी।
कानों में शब्द सम्यक् सुनने की शक्ति सारी।।

वाणी विराट् प्रभु की विरूदावली सुनावे।
परतन्त्रता है पातक स्वातन्त्र्य मन्त्र गावे।।
सौ वर्ष से अधिक भी जीवित रहें सुखारी।
सर्वाङ्ग की क्रियाएँ स्थिर रहें हमारी।।

तदनन्तर नीचे लिखे गायत्री (सावित्री व गुरुमन्त्र) का यथावकाश अर्थ–विचारपूर्वक मन से अधिकाधिक जप करें। गायत्री मंत्र का उच्चारण. उसका अर्थज्ञान और तदनुसार आचरण करें।

ओ३म्। भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।५।। —*यजुः० ३६.३*

प्राण–प्रदाता सङ्कट–त्राता, हे सुखदाता ओम् ओम्।
सविता माता पिता वरेण्यं भगवन् भ्राता ओम् ओम्।।
तेरा शुद्ध स्वरूप करें हम, धारण धाता ओम् ओम्।
प्रज्ञा प्रेरित कर सुकर्म में, विश्व विधाता ओम् ओम्।।

इस प्रकार से सब मन्त्रों के अर्थों के चिन्तन से परमेश्वर की सम्यक् उपासना करके आगे समर्पण करें–

अथ समर्पणम्

हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयानेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।

अथ नमस्कारमन्त्र :

अन्त में निम्नलिखित मन्त्र द्वारा परमपिता परमात्मा को विनीत भाव से नमस्कार करें–

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। —*यजुः० १६.४१*

हे मान्यवर महेश्वर ! मंगल करो हमारा।
पावन प्रकाश पाएँ परमार्थ पुण्य द्वारा।।
हे शान्तस्वरूप स्वामी ! मन शान्त हो हमारा।
बहती रहे हृदय में, अविरल सुज्ञान धारा।।
फिर अन्त में पिताजी ! तुमको नमन करें हम।
वेदों के ज्ञान द्वारा जीवन सफल करें हम।।

आत्म–निवेदन : हे मोक्षानन्दस्वरुप ! हे सुखस्वरुप प्रभो ! आपको हमारा बारम्बार नमन। हे सबका कल्याण करने वाले, हे समस्त सांसारिक सुखों के रचने व देनेवाले प्रभो! आपको हमारा बारम्बार नमन। हे कल्याणप्रद अतिशय कल्याण के देने वाले प्रभुदेव ! आपको हम सम्पूर्ण शक्ति से सर्वतोभावेन, सर्वात्मना समर्पित होकर बार–बार नमन करते हैं, आप हमारे नमन को स्वीकार कीजिए।

देवयज्ञ : अग्निहोत्र

यज्ञ– 'यज्ञ' उसको कहते है जिसमें विद्वानों का सत्कार, यथायोग्य शिल्प, अर्थात् रसायन जोकि पदार्थविद्या, उससे उपयोग और विद्यादि शुभ गुणों का दान, अग्निहोत्र आदि जिनसे वायु, वृष्टिजल, ओषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुँचाना है, उसको उत्तम समझता हूँ। *–स्वामी दयानन्द*

आचमनमन्त्रा :

शान्तचित्त होकर शुद्ध आसन पर बैठें और दाई हथेली में निर्मल जल लेकर इन तीन मन्त्रों से तीन आचमन करें–

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।।१।। इससे पहला

ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ।।२।। इससे दूसरा

ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ।। 3।। इससे तीसरा

–तैत्ति. प्र. १०, अनु. ३२.३५

अंङ्ग–स्पर्श–मन्त्रा :

ओं वाङ्.म आस्येऽस्तु ।।१।। इससे मुख कद स्पर्श करें।

ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ।।२।। इससे नाक के दोनों छिद्र छुए।

ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ।।३।। इससे दोनों आंखे स्पर्श करें।

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।।४।। इससे दोनों कान स्पर्श करें।

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ।।५।। इससे दोनों भुजाओं को स्पर्श करें।

ओम् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ।।६।। इससे दोनों जांघों को स्पर्श करें।

ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।।७।।
इससे समस्त शरीर का मार्जन करें।

ईश्वर–स्तुति–प्रार्थनोपासनामन्त्रा :

ओ३म्। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।

यद्भद्रं तन्न आ सुव।।१।। —यजुः० ३०.३

तू सर्वेश सकल सुखदाता, शुद्धस्वरूप विधाता है,
उसके कष्ट नष्ट हो जाते, शरण तेरी जो आता है।
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनों से, हमको नाथ बचा लीजे,
मङ्गलमय! गुण–कर्म–पदारथ प्रेम–सिन्धु हमको दीजे।।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम।।२।।

—यजुः० १३.४

तू ही स्वयं प्रकाश सुचेतन, सुखस्वरूप दुःखत्राता है,
सूर्य–चन्द्रलोकादिक को, तू रचता और टिकाता है।
पहले था, अब भी है तू ही, घट–घट में व्यापक स्वामी,
योग, भक्ति, तप द्वारा तुझको, पावें हम अन्तर्यामी।।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।३।।

—यजुः० २५.१३

तू ही आत्मज्ञान बलदाता ! सुयश विज्ञजन गाते हैं,
तेरी चरण–शरण में आकर, भवसागर तर जाते हैं।
तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे बिसराने में,
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु, तुझसे लगन लगाने में।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽइद्राजा जगतो बभूव।
य ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।४।।

—यजुः० २३.३

तूने अपनी अनुपम माया से जग–ज्योति चमकाई है,
मनुज और पशुओं को रचकर, निज महिमा प्रगटाई है।
अपने हिय–सिंहासन पर श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं,

भक्तिभाव से भेंटें लेकर शरण तुम्हारी आते हैं।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः।
योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।५।।

—यजुः० ३२.६

तारे, रवि–चन्द्रादिक रचकर निज प्रकाश चमकाया है,
धरणी को धारण कर तूने कौशल अलख जगाया है।
तू ही विश्व–विधाता, पोषक ! तेरा ही हम ध्यान धरें,
शुद्ध भाव से भगवन् ! तेरे भजनामृत का पान करें।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।६।।

—ऋ. १०.१२१.१०

तुझसे बड़ा न कोई जग में, सबमें तू ही समाया है,
जड़–चेतन सब तेरी रचना, तुझमें आश्रय पाया है।
हे सर्वोपरि विभो ! विश्व का तूने साज सजाया है,
धन–दौलत भरपूर दीजिए, यही भक्त को भाया है।

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवाऽ अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।।७।।

—यजुः० ३२.१०

तू गुरु है, प्रजेश भी तू है, पाप–पुण्य–फलदाता है,
तू ही सखा बन्धु मम तू ही, तुझसे ही सब नाता है।
भक्तों को इस भव–बन्धन से तू ही मुक्त कराता है,
तू है अज, अद्वैत महाप्रभु ! सर्वकाल का ज्ञाता है।

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम।।८।।

—यजुः० ४०.१६

तू है स्वयं प्रकाश हे प्रभो ! सबका सिरजनहार तुही,
रसना निशदिन रटे तुम्हीं को ! मन में बसता सदा तुही।
कुटिल पाप से हमें बचाते रहना हरदम दयानिधान !
अपने भक्त जनों को भगवन् ! दीजे यही विशद वरदान।

अथ स्वस्तिवाचनम्

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम् ।।१।। —ऋ. १.१.१

विश्व–विधाता के चरणों पर जीवन पुष्प चढ़ाऊँ ।
जिसने यह ब्रह्माण्ड सँवारा, उसकी गाथा गाऊँ।।

सं नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये ।।२।। —ऋ. १.१.६

जैसे सुत को शिक्षा देकर पिता सुजान बनाता है।
जगत्–पिता वैसे ही हमको ज्ञान–पियूष पिलाता है।।

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना।।३।।
—ऋ. ५.५१.११

विद्युत, पवन, मेघ, नभ, धरणी मोदमयी भयहारी।
विद्वानों की वाणी होवे, सुखद सर्व–हितकारी ।।

स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ।।४।।
—ऋ. ५.५१.१२

जगत् पिता सबके स्वामी, सदा स्वस्ति कल्याण करें।
विविध रुप से ध्यान धरें हम, स्वस्ति सुमंगल गान करें।।

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः।।५।।
—ऋ. ५.५१.१३

हे रुद्र ! प्रभुदेव हमारे, हमारी सदा रक्षा करें।
पापकर्मों से बचें हम, स्वस्ति के पथ पर बढ़े।।

स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि।।६।।

—ऋ. ५.५१.१४

प्राण—अपान सदा सुख देवें विद्युत भद्र बन जावें।
'ओ३म्' परमेश कृपा कर जीवन में उल्लास बढ़ावें।।

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ।।७।। —ऋ. ५.५१.१६

सूर्य—चन्द्र के स्वस्ति पथ पर हम प्रभु चलते रहें।
ज्ञानी दानी, बन अहिंसक सत्संग सदा करते रहें।।

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।८।।

—ऋ. ७.३५.१५

यज्ञव्रती, विद्वान सर्वदा कर्म—तत्व बतलावें।
अन्तस्तल में ज्योति जगाकर, श्रेय—मार्ग दिखलावें।।

येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।
उक्थशुष्मान्वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये।।६।।

—ऋ. १०.६३.३

वेद, धरती—माता, मेघ, मधुर अमृतरस प्रदान करें।
आदित्य ब्रह्मचारी, ज्ञानी, कर्मठजन सदा कल्याण करें।।

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद् देवासो अमृतत्वमानशुः।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये।।१०।।

—ऋ. १०.६३.४

यश गूँजे द्युलोक में शक्ति सदा कल्याण करें।
अमरत्व को पाते सदा वे, पूजनीय महान रहें।।

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम्। ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये ।।११।।

—ऋ. १०.६३.५

आदरभरी मधुर वाणी से, जी भरके सम्मान करें।
याज्ञिक, सुव्रती, ब्रह्मचारी, हमारा सदा कल्याण करें।।

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन। को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये।।१२।।

—ऋ. १०.६३.६

यज्ञों 'औ' गुण-स्तुतियों के, फल का वही प्रदाता है।
दुःखों का हर्त्ता प्रभु है, वह सबका स्वस्ति-विधाता है।।

येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः। त आदित्या अभयं शर्मयच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये।।१३।।

—ऋ. १०.६३.७

जिसने अनल और मारुत, जल, भूविद्या फैलाई।
उसकी सुयश-पताका जग में गौरव से लहराई।।

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः। ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ।।१४।।

—ऋ. १०.६३.८

जड़-चेतन के ज्ञानी ऋषिगण, हमको शक्ति प्रदान करें।
किये-अन-किये पाप-कर्म से, आज हमारा उत्थान करें।।

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽ होमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्। अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये।।१५।।

—ऋ. १०.६३.९

वेद वचनों से हमारी ससम्मान स्तुति लीजिये।
आत्म-रक्षा हित ही हमारा सुमंगल कीजिये।।

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।

दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्त्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ।।१६।।

—ऋ. १०.६३.१०

वेद–ज्ञान से जीवन अपना निर्मल स्वच्छ बनावें।
धर्म–डाँड से खेकर उसको लक्ष्य तीर पहुँचावें।।

विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ।।१७।।

—ऋ. १०.६३.११

यज्ञादिक सत्कर्मों से विद्वान सुमार्ग दर्शावें।
स्वयं अभय हो सुख बरसावें, सबको सुखी बनावें।।

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः। आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरु णः शर्मयच्छता स्वस्तये।।१८।।

—ऋ. १०.६३.१२

द्वेष पाप अशुभ कर्मों को दूर सदा हमसे धरें।
दान–यज्ञ शुभ–कर्म नित्य हमारे में भरें।।

अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये।।१६।।

—ऋ. १०.६३.१३

आदित्य देवगण जन–जन को, सन्मार्ग पर सदा चलावें।
धर्मपालन कर प्रजासहित वे, आनन्द–मार्ग पर बढ़ जावें।।

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ।।२०।।

—ऋ. १०.६३.१४

जीवनरुपी रथ को पावनपथ पर सदा बढ़ावें।
जग के उपकारी कामों में बस आगे बढ़ते जावें।।

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति। स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ।।२१।।

—ऋ. १०.६३.१५

सेना, सुत, जल, धेनु, धन—मार्ग सुगम बनाओ।
वातावरण विशुद्ध बनाकर वैर—विरोध मिटाओ।।

स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति।
सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा।।२२।।

—ऋ. १०.६३.१६

गुणवती धन—धान्य सम्पन्न पृथिवी सदा कल्याण करे।
इस वीर मातृभूमि का मिलकर हम सब सम्मान करें।।

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽ इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माघश ँ् सो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ।।२३।। —यजु. १.१

वही अन्नदाता, बलदाता वही पिता कहलाता।
गोरक्षा—यज्ञादि कर्म कर नर उसके ढिंग जाता।।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।।२४।।

—यजु. २५.१४

शुभ कर्म संकल्प हों, सब भाँति सदा कल्याण हो।
विद्वज्जनों से ही सदा चहुँ दिश हमारा त्राण हो।।

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ँ रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवाना ँ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।२५।।

—यजु. २५.१५

सरल देवगण से प्रतिभा पा हम अपना कल्याण करें।
उनके आदर्शों पर चल हम नव जीवन—निर्माण करें।।

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।।२६।।

—यजु. २५.१८

चर और अचर जगत्पति से हम निर्मल नेह लगावें।
शुद्ध हृदय से करें प्रार्थना, प्रभु शरण हो जावें।।

स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।२७।।

—यजु. २५.१९

यशस्वी ऐश्वर्यशाली ! हमारा सदा कल्याण करे।
सर्वज्ञाता, पालक, रक्षक, आनन्दित हमें भगवान करे।।

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।।२८।।

—यजु. २५.२१

हे देव! कानों से सदा ही भद्र हम सुनते रहें।
भद्र आँखों से लखें, सुकर्म अङ्गों से सदा करते रहें।।

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि ।।२९।। —सा.पू. १.१.१

ज्योतिस्वरुप! मेरे अन्तर में दिव्य ज्योति फ़ैलाओ।
कर्मयोग के तत्त्व सुझाकर नर–तन सफल बनाओ।।

त्वमग्ने यज्ञानाँ होता विश्वेषाँ हितः।
देवेभिर्मानुषे जने ।। ३०।। —सा.पू. १.१.२

जग के सकल यज्ञ के होता सच्चिदानन्द कहलाते।
भक्तिभाव से तमको भज नर भवसागर तर जाते।।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रुपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ।।३१।। —अथर्व. १.१.१

सकल जगत् के धारक स्वामी! विनय मेरी स्वीकार करो।
मेरे अन्तःकरण, तन में बल शक्ति का आज संचार करो।।

अथ शान्तिकरणम्

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ।।१।।

—ऋ. ७.३५.१

विद्युत, अग्नि, पवन, जल सारे, सुख सौभाग्य बढ़ावै।
रोग–शोक–भय त्रास पास हमारे कभी न आवें।।

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ।।२।।

—ऋ. ७.३५.२

सत्य, धन, ऐश्वर्य, सुबुद्धि सदा शान्ति बढ़ावें।
प्रभु के पद–पंकज पर श्रद्धा के हम पुष्प चढ़ावें।।

शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरुची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु।।३।।

—ऋ. ७.३५.३

सबका पोषक–धारक ईश्वर सदा शान्ति बरसावै।
भूमि, पर्वत, मेघ, देव, सदा सुख–शान्ति बरसावें।।

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्राावरुणावश्विना शम्।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः।।४।।

—ऋ. ७.३५.४

हे ईश ! पवन, चन्द्र रवि हमारे दुःख–सन्ताप मिटावें।
दिवस प्रमोदपूर्ण, रजनी भी सुख–सौन्दर्य बढ़ावें।।

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णु।।५।।

—ऋ. ७.३५.५

द्यौ, धरणी, रवि, चन्द्र सत्कर्म में सुखदायक बन जावें।
अन्न–ओषधि–वनस्पति से हम सदा सम्यक् लाभ उठावें।।

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुण: सुशंस:।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाष: शं नस्त्वष्टाग्निाभिरिह श्रृणोतु।।६।।

—ऋ. ७.३५.६

निर्मल नीर नीरोगी होवें, भानु सुख बरसावें।
विश्वकर्मा की ज्ञान—गंगा में गोता सदा लगावें।।

शं न: सोमो भवतु ब्रह्म शं न: शं नो ग्रावाण: शमु सन्तु यज्ञा:।
शं न: स्वरुणां मितयो भवन्तु शं न: प्रस्व: शम्वस्तु वेदि:।।७।।

—ऋ. ७.३५.७

जगदीश का वेदज्ञान, ओषधियाँ सुख सदा बढ़ावें।
यज्ञकर्म से जग में मानव मनवांछित फल पावें।।

शं न: सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्त्र: प्रदिशो भवन्तु।
शं न: पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं न: सिन्धव: शमु सन्त्वाप:।।८।।

—ऋ. ७.३५.८

जल, प्राण, पर्वत, दिशाएँ, रवि, रक्षक सब बन जावें।
वसुधा शान्त सुरम्य, समूचे जीव—जन्तु सुख पावें।।

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभि: शं नो भवन्तु मरुत: स्वर्का:।
शं नो विष्णु: शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायु:।।९।।

—ऋ. ७.३५.९

धरती—गगन, भानु—जल वायु नित उल्लास बढ़ावें।
विद्वानों के वचनामृत से धर्मतत्व पा जावें।।

शं नो देव: सविता त्रायमाण: शं नो भवन्तुषसो विभाती:।
शं न: पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्य: शं न: क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भु:।।१०।।

—ऋ. ७.३५.१०

सकल जगत का श्रष्टा प्रभु ही हमारी रक्षा सदा करे।
सुप्रभात हो सुखकर, शान्ति—वर्षा मेघामृत करे।।

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिषाच: शमु रातिषाच: शं नो दिव्या: पार्थिवा: शं नो अप्या:।।११।।

—ऋ. ७.३५.११

भू—नभ के सब पदार्थ मंगलदायक होवें।
विज्ञानी प्रकृति के सारे गूढ़ रहस्य बतावें।।

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु।।१२।।

—ऋ. ७.३५.११

सत्यवक्ता विद्वान, गौ—घोड़े सदा कल्याण करें।
याज्ञिक मात—पिता भी हमको शान्ति—सुख का दान करें।।

शं नो अज एकपाद् देवा अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः।
शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ।।१३।।

—ऋ. ७.३५.१३

अजर अमर अभय अखिलेश्वर को हम ध्यावें।
उत्पत्ति—स्थिति—प्रलयकार को पलभर नहीं भुलावें।।

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शन्नोऽस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।।१४।।

—यजु. ३६.८

सकल जगत् में फैल रही दिव्य ज्योति प्रभु [illegible]वें।
दोपाये, चौपाये सदा ही सुख—शान्ति उसी की [illegible]भावें।।

शन्नो वातः पवताँ शन्नस्तपतु सूर्य[illegible]
शन्न कनिक्रदद् देवः पर्जन्योऽअभिर्वषतु ।।१[illegible]।।

—[illegible]ु. ३६.१०

पवन बहे विमल वसुधा पर, भानु रश्मि चमकावे।
समय—समय पर बरसे बादल, कभी अकाल न [illegible]वे।।

अहानि शम्भवन्तु नः शँ रात्रीः प्रति धीयताम्।
शन्नऽइन्द्राग्नि भवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रावरुणा रातहव्या।
शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रा सोमा सुविताय शं योः।।१६।।

—यजु. ३६.११

दिवस—निशा मंगलमय, विद्युत, अनल लाभ पहुँचावें।

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टाग्निाभिरिह शृणोतु।।६।।

—ऋ. ७.३५.६

निर्मल नीर नीरोगी होवें, भानु सुख बरसावें।
विश्वकर्मा की ज्ञान—गंगा में गोता सदा लगावें।।

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः।
शं नः स्वरुणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः।।७।।

—ऋ. ७.३५.७

जगदीश का वेदज्ञान, ओषधियाँ सुख सदा बढ़ावें।
यज्ञकर्म से जग में मानव मनवांछित फल पावें।।

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्त्रः प्रदिशो भवन्तु।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः।।८।।

—ऋ. ७.३५.८

जल, प्राण, पर्वत, दिशाएँ, रवि, रक्षक सब बन जावें।
वसुधा शान्त सुरम्य, समूचे जीव—जन्तु सुख पावें।।

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः।।६।।

—ऋ. ७.३५.६

धरती—गगन, भानु—जल वायु नित उल्लास बढ़ावें।
विद्वानों के वचनामृत से धर्मतत्व पा जावें।।

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तुषसो विभातीः।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः।।१०।।

—ऋ. ७.३५.१०

सकल जगत का श्रष्टा प्रभु ही हमारी रक्षा सदा करे।
सुप्रभात हो सुखकर, शान्ति—वर्षा मेघामृत करे।।

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।।११।।

—ऋ. ७.३५.११

भू—नभ के सब पदार्थ मंगलदायक होवें।
विज्ञानी प्रकृति के सारे गूढ़ रहस्य बतावें।।

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु।।१२।।

—ऋ. ७.३५.११

सत्यवक्ता विद्वान, गौ—घोड़े सदा कल्याण करें।
याज्ञिक मात—पिता भी हमको शान्ति—सुख का दान करें।।

शं नो अज एकपाद् देवा अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः।
शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ।।१३।।

—ऋ. ७.३५.१३

अजर अमर अभय अखिलेश्वर को हम ध्यावें।
उत्पत्ति—स्थिति—प्रलयकार को पलभर नहीं भुलावें।।

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शन्नोऽस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।।१४।।

—यजु. ३६.८

सकल जगत् में फैल रही दिव्य ज्योति प्रभु [illegible]वें।
दोपाये, चौपाये सदा ही सुख—शान्ति उसी की अ[illegible]भावें।।

शन्नो वातः पवताँ शन्नस्तपतु सूर्य[illegible]
शन्न कनिक्रदद् देवः पर्जन्योऽअभिर्वषतु ।।१५।।

—[illegible]ु. ३६.१०

पवन बहे विमल वसुधा पर, भानु रश्मि चमकावे।
समय—समय पर बरसे बादल, कभी अकाल न [illegible]वे।।

अहानि शम्भवन्तु नः शँ रात्रीः प्रति धीयताम्।
शन्नऽइन्द्राग्नि भवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रावरुणा रातहव्या।
शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रा सोमा सुविताय शं योः।।१६।।

—यजु. ३६.११

दिवस—निशा मंगलमय, विद्युत, अनल लाभ पहुँचावें।

अन्न जलोषधि रोगनिवारक भू—माता से पावें।।

शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतयै।
शँयोरभिस्त्रवन्तु नः।। १७।। —यजु. ३६.१२

देवीस्वरुप ईश्वर ! पूर्ण अभीष्ट कीजे।
यह नीर हो सुधामय कल्याणदान दीजे।।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।१८।।
—यजु. ३६.१७

द्यौ, अन्तरिक्ष, भूमि, जल, वनस्पति ओषधि रोग निवारे।
विश्वदेव की दिव्य दया से सुख शान्ति दें सारे के सारे।।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत। पश्येम शरदः शतं जीवेम
शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः
स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ।।१६।।
—यजु. ३६.२४

जगदीश ! यह विनय है, हम वीरवर कहावें।
होकर शतायु स्वामिन् ! तुमसे लगन लगावें।।
सौ साल तक हमारी आँखें हों ज्योतिधारी।
कानों में शब्द सम्यक् सुनने की शक्ति सारी।।
वाणी विराट् प्रभु की विरुदावली सुनावें।
परतन्त्रता है पातक स्वातन्त्र्य मन्त्र गावें।।
सौ वर्ष से अधिक भी जीवित रहें सुखारी।
सर्वाङ्ग की क्रियाएँ स्थिर रहें हमारी।।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।२०।।
—यजु. ३४.१

प्रभो ! जागते हुए सदा जो, दूर—दूर तक जाता है।

सोते में भी दिव्य शक्तिमय, कोसों दौड़ ल[illegible] है।।
दूर–दूर वह जानेवाला, तेजों का भी तेज [illegible]धान।
नित्य युक्त शुभसंकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान।।

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।२१।।

—यजु. ३४.३

जिसके द्वारा बुद्धिमान सब, नाना करतब करते हैं।
सत्कर्मों को करें मनीषी, वीर युद्ध में बढ़ते है।।
पूजनीय अतिशय जिसका है, प्रजावर्ग में अद्भुत मान।
नित्य युक्त शुभसंकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान्।।

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु । यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।२२।।

—यजु. ३४.४

जिससे धैर्य, शक्ति, चिन्तन तथा ज्ञान रहता भरपूर।
प्राणिमात्र में अमृतमय है, और प्रकाश का बहता पूर।।
जिसके बिना नहीं चलता है, निश्चय कोई कार्यविधान।
नित्य युक्त शुभसंकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान्।।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।२३।।

—यजु. ३४.४

अमर तत्व जो तीन काल का, भेद यथावत् भाता है।
बुद्धि, ज्ञान की पाँच इन्द्रियाँ, अहंकार से नाता है।।
सात हवन करनेवालों का, जिसमें फैला यज्ञ–विज्ञान।
नित्य युक्त शुभसंकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान्।।

यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तँ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।२४।।

—यजु. ३४.५

चार वेद निगमागम सारे, ईश ज्ञान के सुन्दर स्त्रोत।
रथ के पहिये में ज्यों आरे, वैसे रहते ओत–प्रोत।।
जंगम जग का चित्त अचल हो, जिसमें रहता निष्ठावान्।
नित्य युक्त शुभसंकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान्।।

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।२५।।

—यजु. ३४.६

मानव मन को बाँध डोर से, इधर–उधर ले–जाता है।
चतुर सारथी ज्यों घोड़ों को, उत्तम चाल चलाता है।।
हृदय–देश में सदा विराजे, जो अतिगामी अजर महान्।
नित्य युक्त शुभसंकल्पों से, वह मन मेरा हो भगवान्।।

स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते।
शँ राजन्नोषधीभ्यः ।।२६।। *—साम. उत्तरा. १.१.३*

धेनु, अश्व, अन्न, औषध हमारा कल्याण कमावें।
भगवन् आप सदा हमपर सुख–शान्ति बरसावें।।

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ।।२७।।

अथर्व. १६.१५.५

मेरे प्रभु अन्तर्यामी ! सब विधि अभय प्रदान करें।
अन्तरिक्ष, द्यावापृथिवी सब दिशा भय का नाश करें।।

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् । अभयं
नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ।।२८।।

अथर्व. १६.१५.६

मित्र–अमित्र जाने–अनजाने, दिन–रात अभय बनावें।
सभी दिशाएँ मित्र बनें, जीवन में निर्भयता लावें।।

यज्ञोपवीत

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
ओं यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।।

अग्न्याधानमन्त्रः

ओं भूर्भुवः स्वः।।

इस मन्त्र का उच्चारण करके घृत का दीपक जला, उससे कपूर में लगा, किसी एक पात्र में धर, उसमें छोटी-छोटी समिधा लगाके यजमान वा पुरोहित उस पात्र को दोनों हाथों में उठा, यदि गर्म हो तो चिमटे से पकड़कर निम्न मन्त्र से अग्न्याधान करे-

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।।

वेदी के बीच में अग्नि को धर, उस पर छोटे-छोटे काष्ठ और थोड़ा कपूर धर, निम्न मन्त्र पढ़के व्यजन = पंखे से अग्नि को प्रदीप्त करें-

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सँसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

जब अग्नि समिधाओं से प्रविष्ट होने लगे तब चन्दन की अथवा पलाश आदि की आठ-आठ अंगुल की तीन समिधाएँ घृत में डुबा, उनमें से एक-एक निकाल निम्नलिखित मन्त्रों से एक-एक समिधा को अग्नि में चढ़ाएँ-

समिदाधान के मन्त्र

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।।
इदमग्नये जातवेदसे – इदन्न मम।।

इस मन्त्र से पहली समिधा चढ़ाएँ।

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा।। इदमग्नये – इदन्न मम।।

इससे और

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा।।
इदमग्नये जातवेदसे–इदन्न मम।।
इस मन्त्र से, अर्थात् दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा चढ़ाएँ।

तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा।। इदमग्नयेऽङ्गिरसे – इदन्न मम।।

इस मन्त्र से तीसरी समिधा की आहुति देवें।

इन मन्त्रों से समिदाधान करके नीचे लिखे मन्त्र से पाँच घृत की आहुति देवें।

पञ्चघृताहुतयः

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।।
इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम।।

तत्पश्चात् अञ्जलि में जल लेके वेदी के पूर्व आदि दिशा और चारों ओर छिड़काएँ –

जलप्रसेचनमन्त्राः

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व।।

इस मन्त्र से पूर्व में (दक्षिण से उत्तर की ओर) जल सेचन करें।

ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व।। इससें पश्चिम में, (दक्षिण से उत्तर की ओर)

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व।। इससे उत्तर में (पश्चिम से पूर्व की ओर) जल सेचन करें।

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।।

इस मन्त्र को बोलकर वेदी के चारों ओर जल छिड़काएँ।

निम्न आहुतियाँ मुख्य होम के आदि और अन्त में दी जाती हैं। इनमें यज्ञकुण्ड के उत्तर भाग में जो एक आहुति और यज्ञकुण्ड के दक्षिणभाग में जो दूसरी आहुति देनीं होती है, उनका नाम 'आघारा–वाज्याहुति' है और जो कुण्ड के मध्य में दो आहुतियाँ दी जाती हैं उनका नाम 'आज्यभागाहुति' है, अतः घृतपात्र में से स्त्रुवा को भर अंगूठा, मध्यमा और अनामिका से स्त्रुवा को पकड़ के–

आघारावाज्याहुतिमन्त्र

अब निम्नलिखित मन्त्रों से दो घृताहुतियाँ प्रज्वलित अग्नि पर देवें–

ओम् अग्नेय स्वाहा।। इदमग्नये – इदन्न मम।।

वेदी के उत्तरभाग में अग्नि में (पश्चिम से पूर्व की ओर)

ओं सोमाय स्वाहा।। इदं सोमाय – इदन्न मम।।

दक्षिणभाग अग्नि में (पश्चिम से पूर्व की ओर)

आज्यभागाहुतिमन्त्र

निम्नलिखित दो मन्त्रों से यज्ञ कुण्ड के मध्य में दो घृताहुति देवें–

ओं प्रजापतये स्वाहा।। इदं प्रजापतये–इदघ मम।।१।।

ओम् इन्द्राय स्वाहा।। इदमिन्द्राय–इदघ मम।।२।।

प्रातः कालीन आहुति के मन्त्र

तदनन्तर निम्नलिखित मन्त्रों से घृत तथा शाकल्य (सामग्री) की आहुति देवें।

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।।१।।

ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।२।।

ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।३।।

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या।

जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा।।४।।

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।।

इदमग्नये प्राणाय – इदन्न मम।।

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ।।

इदं वायवेऽपानाय – इदन्न मम।।

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।।

इदमादित्याय व्यानाय – इदन्न मम।।

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।।

इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः – इदन्न मम।।

ओं आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो३म् स्वाहा।।

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।

तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।

यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा।।

ओम् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम स्वाहा।।

अधिक होम करना हो तो गायत्री मन्त्र और 'विश्वानि देव' मन्त्र से करें।

तत्पश्चात् गायत्री–मन्त्र–

ओ३म्। भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

सायंकालीन आहुति के मंत्र

आघारावाज्याहुतिमन्त्र

अब निम्नलिखित मन्त्रों से दो घृताहुतियाँ प्रज्वलित अग्नि पर देवें–

ओम् अग्नेय स्वाहा।। इदमग्नये – इदन्न मम।।

वेदी के उत्तरभाग में अग्नि में (पश्चिम से पूर्व की ओर)

ओं सोमाय स्वाहा।। इदं सोमाय – इदन्न मम।।

दक्षिणभाग अग्नि में (पश्चिम से पूर्व की ओर)

आज्यभागाहुतिमन्त्र

निम्नलिखित दो मन्त्रों से यज्ञ कुण्ड के मध्य में दो घृताहुति देवें–

ओं प्रजापतये स्वाहा।। इदं प्रजापतये–इदन्न मम।।१।।
ओम् इन्द्राय स्वाहा।। इदमिन्द्राय–इदन्न मम।।२।।

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।१।।
ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।२।।
ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।३।।

इस मन्त्र का मन में उच्चारण करके तीसरी आहुति देवें।

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या।

जुषाणोऽग्निर्वेतु स्वाहा।।४।।

नोट : अगर हवन एक समय ही करते है तो प्रातः सायं दोनों समय की आहुतियाँ एक साथ देवें। और यदि हवन प्रातः सायं दोनों समय अलग–अलग करते हैं तो दोनों समय की आहुतियाँ अलग–अलग समय पर दें।

निम्न मन्त्रों से प्रातः –सायं आहुति दें–

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।।
इदमग्नये प्राणाय – इदन्न मम।।

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ।।
इदं वायवेऽपानाय – इदन्न मम।।

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।।
इदमादित्याय व्यानाय – इदन्न मम।।

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः – इदन्न मम।।

ओं आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो३म् स्वाहा।।

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरू स्वाहा।।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा।।

ओम् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम स्वाहा।।

अधिक होम करना हो तो गायत्री मन्त्र और 'विश्वानि देव' मन्त्र से करें।

तत्पश्चात् गायत्री–मन्त्र–

ओ३म्। भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

निम्न मंत्रों से भी आहुतियाँ दें।

ओम् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यां दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।। स्वाहा ।

ओं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। स्वाहा ।

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। स्वाहा ।

राष्ट्रीय प्रार्थना मंत्र

ओम् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

इसके पश्चात वेद मन्त्रों से आहुति प्रदान करे।

व्याहृत्याहुतिमन्त्राः

ओं भूरग्नये स्वाहा।। इदमग्नये – इदन्न मम।।
ओं भुवर्वायवे स्वाहा।। इदं वायवे – इदन्न मम।।
ओं स्वरादित्याय स्वाहा।। इदमादित्याय–इदन्न मम।।
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः – इदन्न मम।।

ये चार घी की आहुति देकर निम्न मन्त्र से स्विष्टकृत् होमाहुति दें। यह एक ही है। यह घृत की अथवा भात की देनी चाहिए।

स्विष्टकृदाहुतिमन्त्रः

निम्नलिखित मंत्र से घृत अथवा भात की आहुति देवें–

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु में। अग्नेय स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।। इदमग्नये स्विष्टकृते – इदन्न मम।।

प्राजापत्याहुतिमन्त्रः

इस मन्त्र को मन में बोलकर घृताहुति देवें

ओं प्रजापतये स्वाहा।। इदं प्रजापतये – इदन्न मम।।

पूर्णाहुति

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।
ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।
ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।

अथ भूतयज्ञः (बलिवैश्वदेवयज्ञः)

निम्नलिखित दस मन्त्रों से घृत–मिश्रित भात की, यदि भात न बना हो तो क्षार और लवणान्न को छोड़कर पाकशाला में जो कुछ भोजन बना हो, उसी की आहुति करें–

ओम् अग्नये स्वाहा।।
ओं सोमाय स्वाहा।।
ओम् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा।।
ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।।
ओं धन्वन्तरये स्वाहा।।

ओं कुह्वै स्वाहा।।
ओम् अनुमत्यै स्वाहा।।
ओं प्रजापतये स्वाहा।।
ओं द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा।।
ओं स्विष्टकृते स्वाहा।।

यज्ञ–प्रार्थना

यज्ञरुप प्रभो! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल–कपट को मानसिक बल दीजिए।।
वेद की बोलें ऋचाएँ सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक–सागर से तरें।।
अश्वमेधादिक रचाएँ यज्ञ पर–उपकार को।
धर्म–मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को।।
नित्य श्रद्धा–भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग–पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।।
भावना मिट जाए मन से पाप–अत्याचार की।
कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर–नारि की ।।
लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये।।
स्वार्थ–भाव मिटे हमारा प्रेमपथ विस्तार हो।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।।
हाथ जोड़ झुकाय मस्तक वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणारुप करुणा आपकी सबपर रहे।।

राष्ट्रिय प्रार्थना

ओम् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः

सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे
नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्योनऽओषधयः पच्यन्तां
योगक्षेमो नः कल्पताम्।

ब्रह्मन्! स्वराष्ट्र में हों द्विज ब्रह्म तेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों अरिदल विनाशकारी।।
होवें दुधारु गौएँ पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों नारी शुभग सदा ही।।
बलवान् सभ्य योद्धा यजमान–पुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षे पर्जन्य ताप धोवें।।
फल–फूल से लदी हों औषध अमोघ सारी।
हो योगक्षेमकारी स्वाधीनता हमारी।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।।

सबका भला करो भगवान, सबपर दया करो दयावान।
सबपर कृपा करो भगवान, सबका सब विधि हो कल्याण।।
हे ईश ! सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी,
सब हों निरोग भगवन् ! धन–धान्य के भण्डारी।
सब भद्र–भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों,
दुखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी।।

त्वमेव माता च पिता

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।
दुखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी।।

ओ३म् असतो मा सद्गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।।

ओं तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ॥1॥
ओं वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि ॥2॥
ओं बलमसि बलं मयि धेहि ॥3॥
ओं ओजोऽस्योजो मयि धेहि ॥4॥
ओं मन्युरसि मन्युं मयि धेहि ॥5॥
ओं सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥6॥

उद्घोष

सत्य सनातक वैदिक धर्म की – जय हो
महर्षि दयानन्द की – जय हो
गुरुवर विर्जानन्द की – जय हो
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की – जय हो
योगीराज श्री कृष्ण की – जय हो
महावीर बजरंग बली की – जय हो
भारत माता की – जय हो
गौमाता का – पालन हो
यज्ञ की ज्योति – जलती रहे
ओम का झण्डा – ऊँचा रहे
सत्यार्थ प्रकाश – पढ़ते रहे
आर्य समाज – अमर रहे
हम बदलेंगे – जग बदलेगा
दुर्गण त्यागे – सद्गुण धारे
वैदिक परिवार बनायेंगे – धरती को स्वर्ग बनायेंगे
जो बोले सो अभय – वैदिक धर्म की जय हो
कृणवन्तो – विश्वमार्यम
प्रणव ध्वनि – ओ.........ओ.........ओ......
वैदिक अभिवादन – सभी को सादर नमस्ते

विशेष आहुतियाँ

आज्याहुतिमन्त्राः

निम्न चार मन्त्रों से एक–एक घृताहुति देवें–

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः।।
आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय–इदन्न मम।।

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्य पुरोहितः।
तमीमहे महागयं स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय–इदन्न मम।।

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्।
दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय– इदन्न मम।।

ओं भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता
बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तुः वयं स्याम पतयो रयीणां
स्वाहा।। इदं प्रजापतये–इदन्न मम ।।

अष्टाज्याहुतिमन्त्राः

अब नीचे दिए हुए मन्त्रों से घृत की आहुतियाँ देवें–

ओं त्वं नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।
इदमग्नीवरुणाभ्याम्–इदन्न मम ।।१।।

ओं स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्या उषसो व्युष्टौ।
अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृधिकं सुहवो न एधि स्वाहा।।
इदमग्नीवरुणाभ्याम्–इदन्न मम ।। २।।

ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय।
त्वामवस्युरा चके स्वाहा ।। इदं वरुणाय–इदन्न मम ।। ३।।

ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा ।। इदं वरुणाय–इदन्न मम ।। ।। ४।।

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञिया पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य : स्वर्केभ्यः – इदन्न मम ।।५।।

ओम् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजं स्वाहा।। इदमग्नये अयसे – इदन्न मम।।६।।

ओम् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणायाऽऽदित्यायाऽदितये च–इदन्न मम।।७।।

ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञँ हिँ सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा।। इदं जातवेदोभ्याम्–इदन्न मम।।८।।

पौर्णमासी की आहुतियाँ

निम्न तीन आहुतियाँ केवल मीठे पदार्थ से ही दें।

ओम् अग्नये स्वाहा ।।१।।

ओम् अग्नीषोमाभ्याम् स्वाहा ।।२।।

ओम् विष्णवे स्वाहा।।३।।

अमावस्या की आहुतियाँ

निम्न तीन आहुतियाँ केवल मीठे पदार्थ से ही दें।

ओम् अग्नये स्वाहा ।।१।।

ओम् इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा ।।२।।
ओम् विष्णवे स्वाहा।।३।।

अथ पितृयज्ञः

अग्निहोत्र के पश्चात् पितृयज्ञ है। पितृयज्ञ अर्थात् जीते माता, पिता आचार्य, गुरु, उपाध्याय आदि मान्यों की यथावत् सेवा करना पितृयज्ञ कहलाता है। इति पितृयज्ञः।।

अथ अतिथियज्ञः

जब पूर्ण विद्वान् परोपकारी, सत्योपदेशक, धार्मिक, पक्षपातरहित, शान्त, सर्वहितकारक विद्वान् गृहस्थों के घर आवें, तब गृहस्थ लोग स्वयं उनके समीप जाकर उक्त विद्वानों को प्रणाम आदि कर उत्तम आसन पर बैठाकर जल, अन्नादि से सेवा एवं उनसे प्रश्नोंत्तर आदि करके विद्या प्राप्त करना अतिथियज्ञ कहलाता है, उसे नित्यप्रति किया करें।

इन पंचमहायज्ञों को स्त्री और पुरुष दोनों प्रतिदिन किया करें।

जन्म दिवस – वर्ष गाँठ

जन्मदिन का प्रारम्भिक विवरण

जीवन के खाते की पड़ताल कर हानि–लाभ पर दृष्टि डालकर, हानिप्रद, दुष्कर्मों, दुर्गुणों को त्यागने व लाभप्रद सत्कर्मों, सद्गुणों को अपनाने के लिए प्रभु से प्रार्थना करना व इसमें आये मन्त्रों के अनुकूल जीवन बनाने को संकल्पित होना ही जन्मदिन मनाने का मूल ध्येय है। जिस दिन यह करना हो प्रसन्नता व उल्लास के साथ अन्तर्बाह्य शुद्धि करके आचमन–अंग–स्पर्शपूर्वक ईश्वर स्तुति–प्रार्थनोपासना करके यज्ञोपवीत का महत्त्व प्रतिपादित कर, उसे सदैव धारण करने की प्रेरणा के साथ मन्त्रपूर्वक देकर स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण सस्वर बोलकर दैनिक व विशेष यज्ञ करके

निम्न आहुतियाँ देवें।

ओम उप प्रियं पनिप्रतं युवानमाहुतीवृधम्।
अगन्म बिभ्रतो नमो दीर्घमायुः कृणोतु मे।। —अथर्व. ७.३२.१

भावार्थ : हे स्तुति करने योग्य प्रियतम प्रभो ! जिस प्रकार मैं इस आहुति के द्वारा इस यज्ञाग्नि को बढ़ा रहा/रही हूँ, वैसे ही मैं सात्त्विक अन्न का सेवन करके अपनी आयु को बढ़ाता हुआ/बढ़ाती हुई प्रतिवर्ष अपना जन्मदिवस मनाता/मनाती रहूँ।

ओम इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम्।
सर्वमायुर्जीव्यासम्।। —अथर्व. १६.७०.१

भावार्थ : हे परमैश्वरर्यवान प्रभुदेव ! आप हमें श्रेष्ठ जीवन दो। हे सूर्य ! हे देवगण ! आपकी अनुकूलतापूर्वक मैं दीर्घजीवी होऊँ।

ओम् आयुषायुष्कृतां जीवायुष्माञ्जीव मा मृथाः।
प्राणेनात्मन्वतां जीव मा मृत्योरुदगा वशम्।। —अथर्व. १६.२७.८

भावार्थ : (मैं संकल्प लेता हूँ कि) मुझे मृत्यु के वशीभूत नहीं होना है। कर्मशील व आत्मा–बल युक्त होकर ईश्वर–भक्त, महापुरुषों का अनुकरण करता हुआ मैं आयु को बढ़ाऊँगा। जीवनभर श्रेष्ठ कर्म करता हुआ यश प्राप्त करुँगा।

ओं शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान्।
शतमिन्द्राग्नि सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः ।।
—ऋ. १०.१६१.४

भावार्थ : मनुष्य श्रेष्ठ कर्म व संयम धारणा कर सौ वर्ष तक जीने का प्रयास करे। विद्युत, अग्नि, सूर्य, बृहस्पति अर्थात ज्ञानाधिपति आदि से समुचित सहयोग व उपयोग लेकर मनुष्य सौ वर्ष तक जीवन धारण कर सकता है।

ओं सत्यामाशिषं कृणुता वयोधै कीरिं चिद्ध्यवथ स्वेभिरेवै:।
पश्चा मृधो अप भवन्तु विश्वास्तद्रोदसी शृणुतं विश्वमिन्वे ।।

—अथर्व. २०.६१.११

भावार्थ : हे विद्वानो ! आपका 'आयुष्मान भव' का आशीर्वाद सत्य हो । आपके मार्ग का अनुसरण करने वालों की रक्षा आप ज्ञान देकर करते हो। आपके मार्गदर्शन में चलने वालों के सब दोष नष्ट हो जाते हैं। इसलिए हे श्रेष्ठ स्त्री–पुरुषो ! आप हमें वेदोक्त शिक्षा दो।

ओं जीवा स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ।।1।।
ओम् उपजीवा स्थोप जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ।।2।।
ओं संजीवा स्थ सं जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ।।3।।
ओं जीवला स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ।।4।।

—अथर्व. १६.६६.१–४

भावार्थ : जल की भाँति शान्त स्वभाव सज्जनों! आप मुझे दीर्घायु का शुभाशीष दो। सदाचरण व प्रभु–पूजा धारण कर मैं अपने जीवन को बढ़ा सकूँ। आप ऐसा जीवन दे सकते हो, सो कृपाकर मुझे श्रेष्ठ जीवन–तत्त्व प्रदान कीजिए। मैं आप लोगों की सहायता व प्रेरणा से दीर्घजीवन प्राप्त करुँ।

जितने वर्ष का हो उतनी गायत्री मंत्र से आहुति करके पूर्णाहूति करें। यज्ञ–प्रार्थना के बाद मधुर प्रेरक भजन व संक्षिप्त प्रवचन करके पुष्प–वर्षा के साथ सभी योग्यजन निम्न शब्दों से आशीर्वाद दें –

हे ....(नामोच्चारण करें) ! त्वं जीव शरद: शतं वर्द्धमान: । आयुष्मान् तेजस्वी वर्चस्वी श्रीमान् भूया:।।

हे............! तुम आयुष्मान, विद्यावान, धर्मात्मा, यशस्वी, पुरुषार्थी, प्रतापी, परोपकारी, श्रीमान् बनो ! (कन्या व स्त्री का हो तो उक्त विशेषण भी स्त्रीलिंग में बोलें)

वैवाहिक – वर्षगाँठ

जैसे प्रतिवर्ष जन्मदिन मनाते हुए सुखी व दीर्घजीवन जीने के लिए वैदिक सिद्धान्तों को अपनाने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं, ठीक उसी प्रकार वैवाहिक वर्षगाँठ को मनाते हुए गृहस्थ–जीवन की वेदोक्त शिक्षा दी जाती है। पति–पत्नि के परस्पर कर्त्तव्यों का स्मरण कराते हुए प्रेम–प्रीति का वातावरण बनाना भी इसका उद्देश्य है।

जिस दिन यह वर्षगाँठ मनावें उस दिन पति–पत्नी सुन्दर स्वच्छ वस्त्र पहिनकर नित्यकर्मानुसार आचमनादि से लेकर ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण करके अग्न्याधान से दैनिक यज्ञ तक पूर्ण करके आज्यभागाहुति, व्याहृति आहुति देकर, स्विष्टकृत–आहुति भात से देकर, अष्टाज्याहुतिपूर्वक सभी क्रियाएँ कर लें। उसके बाद निम्न मन्त्रों की आहुति देते हुए साथ में सुस्पष्ट भाषा में इनके अर्थ भी सुनाते चलें।

ओं समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ ।।

–ऋ. १०.८५.४७

भावार्थ : हे उपस्थित सज्जनो ! हम दोनों के हृदय परस्पर जल के समान मिले हुए रहेंगे। जैसे प्राणवायु सबको प्रिय है, वैसे ही हम एक–दूसरे को चाहते हैं। जैसे संसार का धारक सबको धारण कर रहा है, वैसे ही हम एक–दूसरे की सुख–सुविधा व दुःख–दुविधा को धारण करते रहेंगे। जैसे उपदेशक अपने श्रोताओं का हित व उन्नति चाहता है, हम भी एक–दूसरे का हित व उन्नति वैसे ही चाहेंगे।

ओं मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु ।
मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ।।

–पार. १.८.८

(पति–पत्नी एक–दूसरे के प्रति कहते हैं) मैं अपने श्रेष्ठ व्यवहारों को तुम्हारे हृदय में रखता हूँ/रखती हूँ। तुम्हारा चित्त सदैव मेरे चित्त के अनुकूल होवे। मेरी वाणी को तुम एकाग्रमना (ध्यान से) सुनना। प्रजापति ने हमें एक–दूसरे के साथ नियुक्त किया है। हमें इसका सफल निर्वाह करना है।

ओं अन्नपाशेन मणिना प्राणसूत्रेण पृश्निना।
बध्नामि सत्यग्रन्थिना मनश्च हृदयं च ते ।। —ब्रा. १.३.८

भावार्थ : अन्न के साथ प्राण का और प्राण के साथ अन्न का तथा अन्न और प्राण का आकाश के साथ जैसा अटूट सम्बन्ध है, वैसा ही अटूट सम्बन्ध मैं तेरे मन, हृदय व चित्त का सत्य के साथ जोड़ता/जोड़ती हूँ पति–पत्नी दोनों इस सम्बन्ध का निष्ठा व श्रद्धा से पालन करें।

ओं यदेतद् हृदयं तव तदस्तु हृदयं मम।
यदिदँ॒ हृदयं मम तदस्तु हृदयं तव ।। —ब्रा. १.३.६

भावार्थ : (पति–पत्नी परस्पर इच्छा व्यक्त करते हैं) तुम्हारा आत्मा वा अन्तःकरण सदा मेरे आत्मा व अन्तःकरण के अनुकूल हो। मेरा हृदय, मन आदि भी तुम्हारे हृदय, मन के अनुकूल होकर, हम परस्पर एक–दूसरे का प्रियाचरण ही करते रहें।

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ॒ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।।

—यजु. ३६.२४

भावार्थ : हे सर्वज्ञ, देवों के परम हितैषी, प्रभुदेव ! आपने सृष्टि के प्रारम्भ में ही अपने दिव्य, पवित्र स्वरुप व ज्ञान को हमारे लिए प्रकट

कर दिया था। हे परमेश ! हम देवत्त्व को धारण करते हुए आपकी कृपा से सौ वर्ष तक देखते रहें, सौ वर्ष तक आपकी मर्यादा–पालनपूर्वक जीते रहें, सौ वर्ष तक आपके गुण–कीर्तन सुनते व बोलते रहें, आपकी अनुभूति व आज्ञापालन के द्वारा हमारा शतायु जीवन स्वस्थ, सबल व दीनतारहित होवे। सौ वर्ष से अधिक जिएँ तो भी उक्त सभी गुण–कर्मो के साथ ही जिएँ।

इन आहुतियों के बाद तीन आहुति गायत्रीमन्त्र के देकर पूर्णाहूति करें, ईश–भजन व गृहस्थ शिक्षापरक गीत मधुर स्वर से गावें।

'ओं सौभाग्यमस्तु, ओं शुभं भवतु' वाक्य तीन बार बोलकर पुष्प व जल से आशीर्वाद देकर शान्तिपाठ करें।

आर्यपर्व – पद्धति (मन्त्र भाग)

अपनी भारतीय सभ्यता, संस्कृति की पावन धारा को पूर्व पीढ़ियों से यथावत् लेकर भावी पीढ़ियों को तथावत् सौंपना वर्तमान पीढ़ी का मानवीय दायित्त्व है। महर्षि देव दयानन्द की असीम कृपा से हमें अपने प्राचीन गौरव व जीवन–आदर्शों की जो प्राप्ति हुई है, वह हमारे ऊपर ऋषि–ऋण है। हमारे वैदिक–युगीन पर्व–त्यौहार जहाँ उल्लास व आनन्द से जीवन को सरस बनाते थे, वहीं हमारी संस्कृति की धर्म–प्रवणता इनमें सन्निहित है। अपनी संस्कृति के प्रति श्रद्धावान् एवं स्व जीवन को धर्मयुक्त आनन्द से पूरित करने के इच्छुक महानुभाव इन सभी पर्वो को वैदिक भावनानुरुप अवश्य मनावें।

१ नवसंवत्सर (चैत्रसुदी प्रतिपदा)

संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि। उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्द्धमासास्ते कल्पन्तां।

मासास्ते कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्ताँ संवत्सरस्ते कल्पताम्। प्रेत्याऽएत्यै सं चाञ्च प्र च सारय । सुपर्णचिदसि तया देवतयाङ्गि रस्वद् ध्रुवः सीद।। १।। —यजु:० २७.४५

यमाय यमसूमथर्वभ्योऽवतोकाँ संवत्सराय पर्यायिणीं परिवत्सरायाविजातामिदावत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं वत्सराय विजर्जरीँ संवत्सराय पलिक्नीमृभुभ्योऽजिनसन्धँ साध्येभ्यश्चर्मम्नम्।।२।। —यजु:० ३०.१५

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत।
तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शङ्कवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः।।३।।
—ऋ. १.१६४.४८

सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा।
त्रिनाभि चक्रमजरमनर्वं यत्रेमा विश्वा भुवनाधि तस्थुः ।।४।।
—ऋ. १.१६४.२

द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परि द्यामृतस्य। आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थुः ।।५।।
—ऋ. १.१६४.११

पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्धे पुरीषिणम्।
अथेमे अन्य उपरे विचक्षणं सप्तचक्रे षळर आहुरर्पितम ।।६।।
—ऋ. १.१६४.१२

पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने तस्मिन्ना तस्थुर्भुवनानि विश्वा।
तस्य नाक्षस्तप्यते भूरिभारः सनादेव न शीर्यते सनाभिः ।। ७।।
—ऋ. १.१६४.१३

सनेमि चक्रमजरं वि वावृत उत्तानायां दश युक्ता वहन्ति।
सूर्यस्य चक्षू रजसैत्यावृतं तस्मिन्नार्पिता भुवनानि विश्वा ।। ८ ।।
—ऋ. १.१६४.१३

संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वा रात्र्युपास्महे।
सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज ।।९।।

—अथर्व. ३.१०.३

यस्मान्मासा निर्मितास्त्रिंशदराः संवत्सरो यस्मान्निर्मितो द्वादशारः। अहोरात्रा यं परियन्तो नापुस्तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम् ।।१०।।

—अथर्व. ४.३५.४

२. आर्य समाज स्थापना-दिवस (चैत्रसुदी ५)

सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ।।१।। —अथर्व. ६.६४.१

सं वः पृच्यन्तां तन्व : सं मनांसि समु व्रता। सं वोऽयं ब्रह्मणस्पतिर्भगः सं वो अजीगमत् ।।२।। —अथर्व. ६.७४.१

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः। अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोमि ।।३।।

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः ।।४।।
सध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्त्संवननेन सर्वान्।
देवाइवामृतं रक्षमाणाः सायंप्रातः सौमनसो वो अस्तु।।५।।

—अथर्व. ३.३०.५—७

सं वो मनांसि सं व्रता समाकूतीर्नमामसि। अमी ये विव्रता स्थन तान्वः सं नमयामसि ।। ६।। —अथर्व. ६.९४.१

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्। समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।।७।।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥८॥ —ऋ. १०.१९१.३–४

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥६॥ —ऋ. ३.६२.१०

दृते दृँह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥१०॥ —यजु. ३६.१८

३. श्रीरामनवमी (श्रीराम-जन्म चेत्रसुदी ६)

नोट् – सामान्य और नित्य हवन करें। विशेष आहुतियाँ पर्व–पद्धति में नही है।

४. हरि तृतीया (हरयाली तीजो)

उत्साहपूर्वक बृहद् यज्ञ करें। कोई विशेष आहुतियाँ नहीं है।

५. श्रावणी (ऋषितर्पण) श्रावणसुदी पूर्णिमा

नित्य का हवन, सामान्य हवन, पूर्णिमा की आहुति देने के बाद–

(1) ब्रह्मणे स्वाहा, (2) छन्दोभ्यः स्वाहा।

ये दो आहुतियाँ देकर निम्नलिखित 10 आहुतियाँ घी की दें–

सावित्र्ये स्वाहा ॥१॥ ब्रह्मणे स्वाहा ॥२॥ श्रद्धायै स्वाहा ॥३॥ मेधायै स्वाहा ॥४॥ प्रजायै स्वाहा ॥५॥ धारणायै स्वाहा ॥६॥ सदसस्पतये स्वाहा ॥७॥ अनुमतये स्वाहा ॥८॥ छन्दोभ्यः स्वाहा ॥६॥ ऋषिभ्यः स्वाहा ॥१०॥

तदनन्तर ऋग्वेद की निम्न 11 ऋचाओं से आहुति दें–

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत्प्रैरत नामधेयं दधानाः।
यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्प्रेरणा तदेषां निहितं गुहाविः ॥१॥
सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।

अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि।।२।।
यज्ञेन वाचः पदवीयमायन्तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम्।
तामाभृत्या व्यदधुः पुरुत्रा तां सप्त रेभा अभि सं नवन्ते।।३।।
उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः श्रृण्वन्न श्रृणोत्येनाम्।
उतो त्वस्मै तन्वं वि सस्त्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः ।।४।।
उत त्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुर्नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु ।
अन्धेन्वा चरति मायर्येष वाचं शुश्रुवाँ अफलामपुष्पाम्।।५।।
यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति।
यदीं श्रृणोत्यलकं श्रृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्।।६।।
अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेष्वसमा बभूवुः ।
आदघ्नास उपकक्षास उ त्वे ह्रदाइव स्नात्वा उ त्वे ददृश्रे ।।७।।
हृदा तष्टेषु मनसो जवेषु यद् ब्राह्मणाः संयजन्ते सखायः।
अत्राह त्वं वि जहुर्वेद्याभिरोहब्रह्माणो वि चरन्त्यु त्वे ।।८।।
इमे ये नार्वाङ्.न परश्चरन्ति न ब्राह्मणासो न सुतेकरासः।
त एते वाचमभिपद्य पापया सिरीस्तन्त्रं तन्वते अप्रजज्ञयः।।६।।
सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन सभासाहेन सख्या सखायः।
किल्बिषस्पृत्पितुषणिर्ह्येषामरं हितो भवति वाजिनाय।।१०।।
ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान्गायत्रं त्वो गायति शक्वरीषु।
ब्रह्मा त्वो वदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां वि मिमीत उ त्वः।।11।।

—ऋ. १०.७१.१—११

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
सनिं मेधामयासिषँ स्वाहा।।

—यजु. ३२.१३

नोट— यजमान या गृहपति हवन करे किन्तु मन्त्र सब बोलें, सब उपस्थिति जन पलाश की तीन—तीन घी में डुबोई हुई समिधाओं से गायत्री मन्त्र से तीन—तीन आहुति दें। पुनः स्विष्टकृत् आहुति दें।

पश्चात् 'शन्नों मित्रः' मन्त्र को पढ़कर प्रातराश किया जाए। फिर मुख धो, आचमन कर अपने–अपने आसनों पर बैठ, जलपात्रों में कुशाओं को रख, हाथ जोड़ पुरोहित के साथ 3 बार ओङ्कार व्याहृतिपूर्वक सावित्रीमन्त्र पढ़कर वेदों के निम्न मन्त्र पढ़े–

ऋग्वेद–

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्यं देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्।। ऋ. १.१.१

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। ऋ.१०.१९१.४

यजुर्वेद –

।। ओ३म् ।। इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माघशँसो ध्रुवाऽअस्मिन गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।।१।।

–यजुः. १.१

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् । योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्। ओ३म् खं ब्रह्म।। यजु. ४०.१७

सामवेद –

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि।। साम. पूर्वा. १.१

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः।
सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व।
साम. उ. प्र. ६.१

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।
साम. उ. प्र. ६.३

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। साम. उ. प्र. ६.१–३

अथर्ववेद –

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रुपाणि बिभ्रतः ।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे।। अथर्व. १.१.१

पनाय्यं तदश्विना कृतं वां वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः।
सहस्त्रं शंसा उत ये गविष्टौ सर्वाँ इत्ताँ उप याता पिबध्यै।।
– अ. २०.१४३.४

तत्पश्चात् प्रथम निम्न पारस्करगृह्यसूत्र के मन्त्र को पढ़कर सामवेद का वामदेव्य गान करें।

सह नोऽस्तु सह नोऽवस्तु, सह नो वीर्यवदस्तु। ब्रह्मा इन्द्रस्तद्वेद येन यथा न विद्विषामहे।।

६. श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रकृष्णा ८)

ओं तेजोऽसि तेजो मयि धेहि स्वाहा ।।१।।
ओं वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि स्वाहा ।।२।।
ओं बलमसि बलं मयि धेहि स्वाहा ।।३।।
ओं ओजोऽस्योजो मयि धेहि स्वाहा ।।४।।
ओं मन्युरसि मन्युं मयि धेहि स्वाहा ।।५।।
ओं सहोऽसि सहो मयि धेहि स्वाहा ।।६।।

७. विजयादशमी (आश्विन शु. १०)

संशितं म इदं ब्रह्म संशितं वीर्य बलम् ।
संशितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णुर्येषामस्मि पुरोहितः ।।१।।
समहमेषां राष्ट्रं स्यामि समोजो वीर्यं बलम्।

वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेन हविषाहम्।।२।।
नीचैः पद्यन्तामधरे भवन्तु ये नः सूरिं मघवानं पृतन्यान् ।
क्षिणामि ब्रह्मणामित्रानुन्नयामि स्वानहम् ।।३।।
तीक्ष्णीयांसः परशोरग्नेस्तीक्ष्णतरा उत।
इन्द्रस्य वज्रात्तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहितः।।४।।
एषामहमायुधा सं स्याम्येषां राष्ट्रं सुवीरं वर्धयामि।
एषां क्षत्रमजरमस्तु जिष्ण्वे३षां चित्तं विश्वेऽवन्तु देवाः।।५।।
उद्धर्षन्तां मघवन्वाजिनान्युद्वीराणां जयतामेतु घोषः।
पृथग्घोषा उलुलयः केतुमन्त उदीरताम्।
देवा इन्द्रज्येष्ठा मरुतो यन्तु सेनया।।६।।
प्रेता जयता नर उग्रा वः सन्तु बाहवः।
तीक्ष्णेषवोऽ बलधन्वनो हतोग्रायुधा अबलानुग्रबाहवः।।७।।
अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते।
जयामित्रान्प्र पद्यस्व जह्येषां वरंवरं मामीषां मोचि कश्चन।।८।।

— अथर्व. ३.१६.१–८

ये बाहवो या इषवो धन्वनां वीर्या णि च।
असीन्परशूनायुधं चित्ताकूतं च यद्धृदि।
सर्वं तदर्बुदे त्वममित्रेभ्यो दृशे कुरुदारांश्च प्र दर्शय।।६।।
उत्तिष्ठत सं नह्यध्वं मित्रा देवजना यूयम्।
सन्दृष्टा गुप्ता वः सन्तु या नो मित्राण्यर्बुदे।।१०।

— अथर्व. ११.६.१–२

८. शारदीय नवसस्येष्टि (दीपावली)
कार्तिकवदी अमावास्या
(श्रीमद्दयानन्द बलिदान दिवस)

ज्ञातव्य – नवीन धान की खील और बतासे सामग्री में मिला लें। सामान्य व नित्य का हवन करें। पश्चात् अमावस्या की

आहुतियाँ देकर ऋषि निर्वाण की निम्न आहुतियाँ दें–

परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात् ।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान्।।१।।
मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः।।२।।
इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्नभूद्भद्रा देवहूतिर्नो अद्य।
प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः।।३।।
इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्।
शतं जीवन्तु शरदः पुरुचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन।।४।।
यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथ ऋतव ऋतुभिर्यन्ति साधु।
यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायूंषि कल्पयैषाम्।।५।।

— ऋ. १० । १८ । १–५

आयुष्मतामायुष्कृतां प्राणेन जीव मा मृथाः ।
व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ।।६।।

— अथर्व. ३.३१.८

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत ।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्व राभरत् ।।७।।

— अथर्व. ११.५.१६

नवसस्येष्टि की ३१ विशेष आहुतियाँ

शतायुधाय शतवीर्याय शतोतयेऽभिमातिषाहे ।
शतं यो नः शरदो अजीजादिन्द्रो नेषदति दुरितानि विश्वा।।१।।
ये चत्वारः पथयो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी वि यन्ति।
तेषां यो आ ज्यानिमजीजिमावहास्तस्मै नो देवाः परिदत्तेह सर्वम्।।२।।
ग्रीष्मो हेमन्त उत नो वसन्तः शरद्वर्षाः सवितन्नो अस्तु ।
तेषामृतूनाँ शतशारदानां निवात एषामभये स्याम ।।३।।
इद्वत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः ।

तेषां वयँ सुमतौ यज्ञियानां ज्योग् जीवा अहताः स्याम ।।४।।

—म. ब्रा. २.१.६ से १२, खं. ७, सू. १०—११

ओं पृथिवी द्यौः प्रदिशो दिशो तस्मै द्युभिरावृतः।
तमिहेन्द्रमुपह्वये शिवा नः सन्तु हेतयः स्वाहा ।।५।।
ओं यन्मे किंचिदुपेप्सितमस्मिन् कर्मणि वृत्रहन्।
तन्मे सर्वं समृध्यतां जीवतः शरदः शतं स्वाहा।।६।।
ओं सम्पत्तिर्भूतिर्भूमिर्वृष्टिर्ज्यैष्ठ्यँ श्रैष्ठ्यँ श्रीः।
प्रजामिहावतु स्वाहा। इदमिन्द्राय—इदन्न मम ।। ७ ।।

ओं यस्या भावे वैदिकलौकिकानां भूतिर्भवति कर्मणाम्।
इन्द्रपत्नीमुपह्वये सीताँ सा मे त्वनपायिनी भूयात्कर्मणि कर्मणि स्वाहा। इदमिन्द्रपत्न्यै—इदन्न मम ।। ८ ।।

ओं अश्वावती गोमती सूनृतावती बिभर्ति या प्राणभृता अतन्द्रिता।
खलमालिनीमुर्वरामस्मिन् कर्मण्युपह्वये ध्रुवां सा मे त्वनपायिनी भूयात् स्वाहा । इदं सीतायै – इदन्न मम ।। ६ ।।

ओं सीतायै स्वाहा ।। १०।। ओं प्रजायै स्वाहा ।।११।। ओं शमायै स्वाहा ।।१२।। ओं भूत्यै स्वाहा ।।१३।।

—पार. काण्ड २, क. १७, मं. ७—१०

व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मे ऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।१४।।

—यजुः १८.१२

वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्त्रो वा परावतः।
वाजो नो विश्वैर्देवैर्धनसाताविहावतु ।।१५।।

वाजो नोऽअद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवाँ२।।ऽऋतुभिः कल्पयाति। वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वाऽआशा वाजपतिर्जयेयम् ।।१६।।

वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवान् हविषा वर्द्धयाति।
वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वाऽआशा वाजपतिर्भवेयम्।।१७।।

—यजुः १८.३२—३४

सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक् ।
धीरा देवेषु सुम्नयौ ।।१८।।
युनक्त सीरा वि युगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम्।
विराजः श्नुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्य पक्वमा यवन्।।१९।।
लाङ्गलं पवीरवत्सुशीमं सोमसत्सरु ।
उदिद्वपतु गामविं प्रस्थावद्रथवाहनं पीबरीं च प्रफर्व्य म् ।।२०।।
इन्द्रः सीतां नि गृह्णातु तां पूषाभि रक्षतु ।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ।।२१।।
शुनं सुफाला वि तुदन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अनु यन्तु वाहान ।
शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधीः कर्तमस्मै ।।२२।।
शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम् ।
शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गय ।।२३।।
शुनासीरेह स्म मे जुषेथाम् ।
यद्दिवि चक्रथुः पयस्तेनेमामुप सिञ्चतम् ।।२४।।
सीते वन्दामहे त्वार्वाची सुभगे भव ।
यथा नः सुमना असो यथा नः सुफला भुवः ।।२५।।
घृतेन सीता मधुना समक्ता विश्वैर्देवैरनुमता मरुद्भिः ।
सा नः सीते पयसाभ्याववृत्स्वोर्जस्वती घृतवत्पिन्वमाना ।।२६।।

— अथर्व. ३.१७.१—६

इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा। इदमिन्द्राग्निभ्याम् इदन्न मम।।२७।।
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ।
इदं विश्वेभ्यो देवेभ्य इदन्न मम ।।२८।।
द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा। इदं द्यावापृथिवीभ्याम् इदन्न मम।।२९।।

स्विष्टमग्ने अभि तत्पृणीहि विश्वाश्च देवः पृतना अभिष्यक् ।
सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरं न आयुः स्वाहा।।३०।।

— पा. २.१७.७.६.१०

यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्ट्त्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम।।

— पार. १.२.१०

६. मकर सौर-संक्रान्ति

निम्न विशेष आहुतियाँ (सामग्री में तिल और शर्करा मिलाकर) दें।

ओ३म् सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतू ।
अग्नेरन्तः श्लेषोऽसि स्वाहा ।।
कल्पेतां द्यावापृथिवी स्वाहा ।।
कल्पन्तामापऽओषधयः स्वाहा ।।
कल्पन्तामग्नयः पृथङ्. मम ज्यैष्ठयाय सव्रताः स्वाहा।।
येऽअग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवीऽइमे। हैमन्तिकावृतूऽ अभिकल्पमानाऽइन्द्रमिव देवाऽअभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ।।

— यजुः. अ. १४, मं. २७

ओं तपश्च तपस्यश्च शैशिरावृतू।
अग्नेरन्तः श्लेषोऽसि कल्पेतां स्वाहा।।
द्यावापृथिवी कल्पन्तां स्वाहा।।
कल्पन्तामापऽओषधयः स्वाहा।।
अग्नयः पृथङ्. मम ज्यैष्ठयाय सव्रताः स्वाहा।।
येऽअग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवीऽइमे । शैशिरावृतूऽ अभिकल्पमानाऽइन्द्रमिव देवाऽअभिसंविशन्तु तया देवतयाऽङ्गिर स्वद् ध्रुवे सीदतम् ।।

— यजुः अ. १५ मं. ५७

१०. वसन्तपञ्चमी (माघ सुदी ५)

वसन्तेनऽऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुताः। रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥१॥ — यजुः. अ. २१, मं. २३

मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतूऽअग्नेरन्तः श्लेषोऽसि कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामापऽओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ्. मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः। येऽअग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवीऽइमे। वासन्तिकावृतूऽअभिकल्पमानाऽइन्द्रमिव देवाऽअभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ॥२॥ — यजुः. १३.२५

अषाढासि सहमाना सहस्वारातीः सहस्व पृतनायतः। सहस्त्रवीर्यासि सा मा जिन्व ॥३॥

मधु वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥४॥

मधु नक्तमुतोषसो मधु मत्पार्थिव रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥५॥

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२।।ऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥६॥ — यजुः. १३.२६–२६

११. सीता अष्टमी (जानकी–जन्म फाल्गुन वदी ८)

अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे अनीकं नौ समञ्जनम्। अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ सहासति॥ —अथर्वः. ७.३६.१

अभि त्वा मनुजातेन दधामि मम वाससा। यथासो मम केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन॥ —अथर्वः. ७.३७.१

१२. दयानन्द बोधोत्सव
(शिवरात्रि फाल्गुन वदी १४)

नोट–सामान्य यज्ञ के अतिरिक्त दयानन्द सप्ताह में यजुर्वेद के चुने हुए मन्त्रों से यज्ञ की योजना की जाए। विशेष प्रकार से नगर–कीर्तन,

वैदिक सिद्धान्तों पर भजन, व्याख्यान, वेदपाठ, कथा एवं वैदिक साहित्य वितरण किया जाए।

१३. श्री लेखराम वीरतृतीया (फाल्गुन वदी ६)

नोट–विशेष यज्ञ करें। कोई विशेष आहुतियाँ पर्वपद्धति में नहीं है।

१४. वासन्ती नवसस्येष्टि (होलिकोत्सव)

फाल्गुन शु. 15 सामान्य व नित्य हवन करें। पूर्णिमा की आहुतियाँ दें। पश्चात् नवीन जौ मिलाकर नवसस्येष्टि की 31 आहुतियाँ दे।

बड़ा महत्व है जीवन का सार

आज तक इस धरती पर ऐसा कोई सफल व्यक्ति नहीं हुआ जिसकी उसके समकालीन लोगों ने निन्दा या आलोचना नहीं की होगी। महान व्यक्ति जैसे श्री राम, कृष्ण, दयानन्द, सुकरात, बुद्ध, ईसा कोई भी आलोचना से नहीं बच पाये।

आलोचना से वही व्यक्ति बच सकता है जो बिलकुल निकम्मा, निरुपयोगी व बेकार व्यक्ति हो। फल वाले वृक्षों पर ही पत्थर फेंके जाते हैं, कटीली झाड़ियों पर नहीं। लोगों द्वारा आलोचना किया जाना आपके सफल एवं सक्षम व्यक्तित्व का प्रमाण है। आप निश्चित होकर वही कीजिए जिसे आप उचित समझते है और निन्दा की परवाह न कीजिए।

दर्पण जब चेहरे का दाग दिखाता है,
तब हम दर्पण नहीं तोड़ते।
बल्कि दाग साफ करते हैं,
उसी प्रकार हमारी कमी बताने वाले पर क्रोध करने के बजाय कमी दूर करना श्रेष्ठ है।

1. मुझमें ओ३म् तुझमें ओ३म्

मुझमें ओ३म् तुझमें ओ३म् सब में ओ३म् समाया
करे प्रभु से प्यार जगत में कोई नहीं पराया।।
जितने है संसार में प्राणी सब में एक ही ज्योति।
एक बाग के फूल है सारे एक माला के मोती।।
पता नहीं किस कारीगर ने किस मिट्टी से बनाया।
मुझमें ओ३म् ....
एक बाप के बेटे हमसब एक हमारी माता ।
दाना–पानी देने वाला एक हमारा छाता।।
पता नही किस मूरख ने है लड़ना हमें सिखाया।
मुझमें ओम..............................
ऊँच नीच और भेदभाव की दीवारों को तोड़ दो।
बदला जमाना तुम भी बदलो बुरी आदतें छोड़ दो।।
जागो और जगाओ सबको समय ये ऐसा आया।
मुझमें ओम..............................
ना वो मंदिर ना वो मस्जिद न काबा कैलाश में
मन दर्पण में देखले प्राणी, रब तो तेरे पास में
गोरी माटी काली माटी सभी में उसकी छाया
मुझमें ओम..............................

2. नमस्कार भगवान तुम्हे

नमस्कार भगवान तुम्हें, भक्तों का बारम्बार हो।
श्रद्धा रुपी भेट हमारी, मंगलमय स्वीकार हो।
तुम कण कण में बसे हुये हो, तुम में जगत् समाया है

तिनका हो चाहे हो पर्वत, सभी तुम्हारी माया है
तुम दुनियाँ में हर प्राणी के, जीवन को आधार हो ।।1 ।।
नमस्कार भगवान तुम्हें ....
सबके सच्चे पिता तुम्हीं हो, तुम्ही जगत की माता हो।
भाई बन्धु सखा सहायक, रक्षक पालक दाता हो
चींटी से लेकर हाथी तक, सबके सिरज़नहार हो।।2 ।।
नमस्कार भगवान तुम्हें ....
ऋषि मुनि योगी जन सारे, तुमसे ही वर पाते हैं
क्या राजा क्या रंक तुम्हारे, दर पर शीश झुकाते हैं
परम कृपालु परम दयालु, करुणा के भण्डार हो ।।3 ।।
नमस्कार भगवान तुम्हें ....
जीवन के तूफानों में प्रभु, तुम्हीं एक सहारा हो
डगमग डगमग नैया डोले, तुम्हीं नाथ किनारा हो
तुम खेबट हो इस नैया के, और तुम्हीं पतवार हो ।।4 ।।
नमस्कार भगवान तुम्हें ....

3 – हे ज्ञानवान भगवन

हे ज्ञानवान भगवन हमको भी ज्ञान दे दो ।
करुणा के चार छींटे करुणा निधान दे दो।।

सुलझा सकें हम अपनी जीवन की उलझनों को
प्रज्ञा ऋतम्भरा सी बुद्धि का ज्ञान दे दो
हे ज्ञानवान भगवन..।

अपनी मदद हमेशा खुद आप कर सके हम
बाँहों में ऐसी शक्ति हे शक्तिमान दे दो
हे ज्ञानवान भगवान..।

उपकार भावना से निर्भिक सत्यवादी
मीठे ही शब्द बोले ऐसी जुबान दे दो।

हे ज्ञानवान भगवन...।

दाता तुम्हारे दर पर किस चीज की कमी है
चाहो तो निर्धनों को दौलत की खान दे दो।
हे ज्ञानवान भगवन...।

हे ईश तुम हो सबकी बिगड़ी बनाने वाले
जीवन सफल बने जो थोड़ा सा ध्यान दे दो।
हे ज्ञानवान भगवन...।

डर हैं भटक ना जाऐं हम तेरे रास्ते से
भक्तों की मंडली में हमको भी स्थान दे दो।
हे ज्ञानवान भगवन...।

4 – दो घड़ी भगवान का ले नाम तू

(तर्ज : दिल के अरमा आँसुओ में बह गये)

दो घड़ी भगवान का ले नाम तू
छोड़ कर दुनिया के सारे काम तू। दो घड़ी ....
दो घड़ी का ध्यान ही रंग लायेगा
दो समय थोड़ा सुबह और श्याम तू। दो घड़ी............
प्रेम और श्रद्धा से आसन ले जमा
मन की चंचलता को प्यारे थाम तू। दो घड़ी ....
त्याग कर आलस को जा सत्संग में
प्रेम रस का ऐ भगत पी जाम तू। दो घड़ी ....
मन किसी का मत दुखाया कर कभी
कर कभी उपकार के भी काम तू। दो घड़ी ....

धर्म के मारग पे चलता ही तू चल
पहुँच जायेगा फिर मुक्ति के धाम तू। दो घड़ी ....
देश तेरे काम की ये बात है
पाएगा दुनिया में फिर आराम तू
दो घड़ी भगवान का ले नाम तू।

5 – होगा सुखमय सब संसार

होगा सुखमय सब संसार नर नारी हवन रचाओ
हो पावन पवन हवन से, टकराती ऊपर घन से
नभ से बरसे जल की धार, नर नारी हवन रचाओ।।1 ।।
जल से होती हरियाली, फल फूल लगे हर डाली।
हो जन जन को खुशी अपार नर नारी हवन रचाओ।।2 ।।
वृक्षों से मिलता चारा, पशुओं का होत गुजारा।
होती पय घृत की भरमार, नर नारी हवन रचाओ।।3 ।।
सुख पावे जनता सारी, न फैले कुछ बिमारी।
सबको शुद्ध मिले आहार, नर नारी हवन रचाओ।।4 ।।
सर्वोत्तम यज्ञ बताया ऋषि मुनियों ने फरमाया।
करते है नरदेव प्रचार, नर नारी हवन रचाओ।।5 ।।

6 – सुबह शाम भजन कर ले

सुबह शाम भजन कर ले, मुक्ति का यतन कर ले
छूट जायेगे जनम मरण प्रभु का सुमिरन कर ले।
ये मानव का चोला हर बार नहीं मिलता

जो गिर गया डाली से, वो फूल नहीं खिलता
मौका है जीवन का गुलजार चमन कर ले।
सुबह शाम भजन.....................................

नर इन कानों से तू सुन ऋषियों की वाणी
मन अपना ठहरा कर बन जा आत्म ज्ञानी
जिह्वा तो चले मुख में बस ओम जपन कर ले
सुबह शाम भजन.....................................

इस मेली चादर में है दाग लगे कितने
पर ज्ञान के साबुन में है झाग भरे इतने
धुल जायेगी सब स्याही उजला तन मन कर ले
सुबह शाम भजन.....................................

वेदों में गूंज रही मंत्रो की मधुर ध्वनियाँ
बलिदानों की वादियो में तू गुँथ नई कड़ियाँ
प्रभु के आगे अब तो नीची गरदन कर ले।
सुबह शाम भजन.....................................

7 – प्रभु की शरण में तेरा तन–मन होगा

प्रभु की शरण में तेरा तन मन होगा
तब ही सफल तेरा जीवन होगा।

भोजन और वस्त्रादि मनुष्य को परमात्मा से प्राप्त होता है परमात्मा को सिर्फ वही वस्तुऐं भेंट करें जो आपकी अपनी है । और आपका अपना निर्मल व पवित्र हृदय है।

जैसे लोहा अग्नि में अग्निमय हो जाता है वैसे ही यह परमात्मा का सानिध्य प्राप्त कर परमात्मामय हो जायेगा

1. बचपन बीता खेल में, जवानी में तू भूला
माया का गुलाम बन के प्रभु को तू भूला
आयेगा बुढ़ापा कैसे सुमिरण होगा
कैसे सफल तेरा जीवन होगा
प्रभु की शरण ....।

2. इस तेरे तन का न कोई ठिकाना
आज नहीं कल तो है सबको जाना
ये तन चिताओं का जलवन होगा
कैसे सफल तेरा जीवन होगा
प्रभु की शरण ....।

3. प्रेम से पुकार के प्रभु को अपनाले
प्रभुजी के गुण अपने हृदय में समाले
लगन बिना कैसे दर्शन होगा
कैसे सफल तेरा जीवन होगा
प्रभु की शरण ....।

8 – एक बाग लगाया है

एक बाग लगाया है, प्रभु परमेश्वर ने संसार सजाया है।
दिन रात बनाए है, चाँद और सूरज के दो दीप जलाए है।
अनगिनत सितारे है,
टिमटिम टिम करते क्या अजब नजारे है।
एक बाग लगाया है ....
सागर इठलाता है,
लहर लहर हम सबको संगीत सुनाता है
एक बाग लगाया है ....
नदियों में पानी है,

पल पल चलना ही जीवन की निशानी है
एक बाग लगाया है ....

पर्वत ये सुहाने है
जितने ये ऊंचे है उतने ही पुराने है
एक बाग लगाया है ....

धरती का खजाना है,
है कितना धन इसमें किसने पहचाना है
एक बाग लगाया है ....

कोई प्रभु से महान नहीं,
उसके बराबर भी किसी और की शान नहीं
एक बाग लगाया है ....

9 – दाता तेरे सुमरन का

दाता तेरे सुमरन का, वरदान जो मिल जाये।
मुरझाई कली दिल की, हर हाल में खिल जाये।।

सुनते हैं तेरी रहमत दिन रात बरसती है,
एक बूँद जो मिल जाये, तकदीर बदल जाये।
दाता तेरे सुमरन का ....

ये मन बड़ा चंचल है, चिंतन में नहीं लगता,
जितना इसे समझाऊं, उतना ही मचल जाये।
दाता तेरे सुमरन का ....

हे नाथ मेरे दिल की बस एक तमन्ना है
पापों से बचा लेना, कहीं पैर ना फिसल जाये।
दाता तेरे सुमरन का ....

देवत्व के फूलों से दामन को मेरे भर दो
जीवन ये सुगन्धित हो, दुर्गन्ध निकल जाये।

दाता तेरे सुमरन का ....

ऐ मानव तू दिल से प्रभुनाम का सुमिरन कर

दोषों भरे जीवन का कांटा ही निकल जाये। दाता तेरे......।

10 – प्रभु तेरा ओम नाम

प्रभु तेरा ओम नाम सबका सहारा है

सारे ब्रह्माण्ड का जीवन आधारा है–2

तू है सुखों का दाता, प्रेमी भव सागर त्राता

भक्तों को पार लगाता, मन का उजियारा है

प्रभु तेरा ओम..

दुखड़े मिटाने वाला बिगड़ी बनाने वाला

सुखों को दिलाने वाला, सखा तू हमारा है

प्रभु तेरा ओम...

सुखमय संसार रचाया सुखमय परिवार बनाया

वेदों का ज्ञान कराया, तू ही प्रितम प्यारा है।

प्रभु तेरा ओम..

ज्ञानी सदा सुख पाते, कष्टों से ना घबराते

अपना कर्तव्य निभाते तभी निस्तारा है।

प्रभु तेरा ओम...

विचार–

अच्छा दिल और अच्छा स्वभाव दोनों आवश्यक हैं।
अच्छे दिल से कई रिश्ते बनेंगे और
अच्छे स्वभाव से वो जीवन भर टिकेंगे।
उपलब्धि और आलोचना एक दूसरे की मित्र हैं।
उपलब्धियाँ बढ़ेगी तो निश्चित ही
आपकी आलोचनाएं भी बढ़ेगीं।

11 – मेरी बहना ओम को करल्यो री जाप

मेरी बहना ओम को करल्यो री जाप,
जिन्दगानी दिन चार की–2

ओम प्रभु को निज नाम है–2
मेरी बहना ओम का ही राग अलाप–2
जिन्दगानी दिन चार की, मेरी बहना ओम................।

ओम् हमारो मित भ्रात है–2
मेरी बहना ओम ही मांई–बाप
जिन्दगानी दिन चार की, मेरी बहना ओम ....।

मन निर्मल होवे जाप से–2
मेरी बहना जन्म–2 के कटे पाप
जिन्दगानी दिन चार की, मेरी बहना ओम ....।

महल अटारी संग में जाये ना–2
मेरी बहना जाना है जग से खाली हाथ
जिन्दगानी दिन चार की, मेरी बहना ओम ....

वैदिक रीति बहना मान लो–2
मेरी बहना कट जाय त्रिय ताप
जिन्दगानी दिन चार की, मेरी बहना ओम ....

अनुचित आहार से पेट खराब होता है ।
आलस्य से दिन खराब होता है ।
मूर्ख पुत्र से कुल खराब होता है ।
झूठ बोलने से बात खराब होती है ।
कटु वचन से सम्बन्ध खराब होते है ।
गंदा साहित्य पढ़ने से बुद्धि खराब होती है
पत्थर पूजा से बुद्धि जड़ होती है।

12 प्रभू नाम जप ले सुबह शाम जप ले

प्रभू नाम जप ले सुबह शाम जप ले
यू ही सारी उमर चली जाये ना

जब से मानव का चोला है पाया–2
तूने ईश्वर कभी ना ध्याया
दिन गुजार करके बाजी हार करके
यूं ही सारी उमर चली जाये ना, प्रभु नाम ....

ओम अक्षर हृदय में बसा ले–2
उसकी महिमा का दीपक जला ले
सच्चे नाम के बिना, अच्छे काम के बिना
यूं ही सारी उमर चली जाये ना, प्रभु नाम ....

रहता है हर वक्त हैरान क्यों है
बन्दे पल–2 परेशान क्यों है।
चिन्ता छोड़ के अभी, बन्धन तोड़ के अभी
बारी–2 उमर चली जाये ना, प्रभु नाम..................

उसके पथ के पथिक ने पुकारा
फिर ना अवसर मिलेगा दुबारा
ये विचार कर ले, बार–2 कल ले
नर–नारी उमर चली जाय ना, प्रभु नाम ....

13 – प्रभु तेरे चरणों में हम सब आये

प्रभु तेरे चरणों में हम सब आये–2
आये जो आये शरण तेरी आये–2

तेरे खजाने नहीं होते कम,
मुंह खोले और क्या मांगे हम,
बिन मांगे ही रतन बरसाये–2
प्रभु तेरे चरणों ....

कौन किसी का बिगाड़े जगत में
हाथ में लाठी रहे घर–घर में
आठ प्रहर जो पहरा लगाये
प्रभु तेरे चरणों ....

टूटे हुए को बाँध रहा है,
फूल तू घर–घर बाँट रहा है।
घरों में हमारे सुख–चैन जो आये।
प्रभु तेरे चरणों ....

14 – तेरे पूजन को भगवान बना मन मंदिर

तेरे पूजन को भगवान बना मन मंदिर आलीशान।।टेक।।
किसने देखी तेरी सूरत, कौन बनावे तेरी मूरत
तू तो निराकार भगवान, बना मन मंदिर आलीशान।।1 ।।
यह संसार है तेरा मंदिर, तू रमा है इसके अन्दर
धरते ऋषि मुनि सब ध्यान, बना मन मंदिर आलीशान।।2 ।।
सागर तेरी शान बतावें, पर्वत तेरी शोभा बढ़ावें
हारे ऋषि मुनि विद्वान, बना मन मंदिर आलीशान।।3 ।।
किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तुम्हारा पाया
तेरा रुप अनूप महान, बना मन मंदिर आलीशान।।4 ।।
तूने राजा रंक बनाये, तुने भिक्षुक राज बिठाये
तेरी लीला ईश महान, बना मन मंदिर आलीशान।।5 ।।

15 – सत्संग में आ शुभ कर्म कमा

सत्संग में आ शुभ कर्म कमा तेरा होगा बेड़ा पार रे।
सुख शान्ति अमर पद पायेगा।।
विषयों में क्यों फँसकर मानव हीरा जनम गँवाया
अपने को तू भूला ऐसा कुछ भी होश न आया

कुछ होश में आ, ईश्वर गुण गा तेरा होगा बेड़ा पार रे।
सुख शान्ति अमर पद पायेगा।।
मात गर्भ में था जब प्राणी कितना कष्ठ उठाया
बेड़ा था मँझधार में तेरा, प्रभु ने पार लगाया
अब पुण्य कमा, प्रभु प्रेम बढ़ा, तेरा होगा बेड़ा पार रे।
सुख शान्ति अमर पद पायेगा।।
प्रेमी इस संसार में आके जीवन ज्योति जगा ले
जीवन तेरा भटक रहा है, इसको राह लगा ले
फिर गीत ये गा, औरों को सुना, तेरा होगा बेड़ा पार रे।
सुख शान्ति अमर पद पायेगा।।

16 – काशी जाकर देख लिया

काशी जाकर देख लिया और मथुरा जाकर देख लिया
कहीं पे मन की मैल न उतरी खूब नहा कर देख लिया
पता नहीं वह कहाँ रहता है, यहाँ पै है कि वहाँ रहता है
घंटे ढप घड़ियाल मजीरे, झाँझ बजाकर देख लिया।।1 ।।
वस्त्राभूषण भी पहिनाये, शयन जागरण भी करवाये
धूप दीप नैवेद्य चढ़ाया, तिलक लगाकर देख लिया।।2 ।।
जिस वस्तु को हाथ लगाया, किसी पै अपना नाम न पाया
सब कुछ उसका दिया हुआ था नजर टिका कर देख लिया।।3 ।।
मन में प्रश्न उठा इक ऐसे, जड़ वस्तु हो चेतन कैसे
पत्थर की मूरत के आगे, शीश झुकाकर देख लिया।।4 ।।
यह मजबूर उमरिया तरसी, अमृत की इक बूंद न बरसी
चातक है प्यासे का प्यासा, शोर मचाकर देख लिया।।5 ।।

इक दिन मन मंदिर में देखा, चमक उठी सद्ज्ञान की रेखा
पथिक मिला आनंद प्रभु का, ध्यान लगाकर देख लिया।।6 ।।

17 – वेद पढ़ा जाये और हवन किया जाये

वेद पढ़ा जाये और हवन किया जाये, ऐसे परिवार को ही नमन किया जाये
सत्य रग रग में जिनके रमा है, खुश रहता है उनसे विधाता
प्रेम सीने में जिनके नहीं है, उनको ईश्वर नजर दूर आता
कोई सुहाता नहीं, सत्संग भाता नहीं, जीवन पशुओं से बदत्तर बिताये।।1 ।।
वेद पढ़ा जाये और हवन किया जाये..........................
कर्म नेकी के जो कर गये हैं, नाम दुनियाँ में उनका अमर है
उनके जीवन की ज्योति से अनगिन, भूले पथिकों ने पाई डगर है
धर्म छोड़ा नहीं, नियम तोड़ा नहीं, जाते उनके सदा गीत गाये।।2 ।।
वेद पढ़ा जाये और हवन किया जाये..........................
अन्न भूखों को नंगों को कपड़ा जो देते है और देते रहेंगे
दया हृदय में जिनके बसी है, प्रेम सबसे वो करते रहेंगे
संकटों से कभी, झंझटों से कभी, निर्भय बिचरे नहीं घबड़ाये।।3 ।।
वेद पढ़ा जाये और हवन किया जाये..........................
सबके घट घट में रमा प्राण प्यारा, सारा संसार है ये उसी का
स्वयं स्वारथ में फँसकर जो बंदा, दिल दुःखाये नहीं जो किसी का
स्वप्न में भी कभी दोष आते नहीं, राघव मानव वही कहलाये।।4 ।।
वेद पढ़ा जाये और हवन किया जाये..........................

18 – कण–कण में बसा प्रभु देख रहा

कण कण में बसा प्रभु देख रहा, चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो
कोई उसकी नजर से बच न सका, चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो
यह जगत् रचा है ईश्वर ने जीवों को कर्म करने के लिये
कुछ कर्म नये करने के लिये, कुछ पहिले करे भरने के लिए
यह आवागमन का चक्र चला, चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।।

इन्सान शुभाशुभ कर्म करे अधिकार मिला है जमाने में
कर्मों में स्वतन्त्र बनाया मगर, परतन्त्र सदा फल पाने में
है न्याय प्रभु का बहुत बड़ा, चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।।
सब पुण्य का फल तो चाहते हैं, पर पुण्य कर्म नहीं करते हैं
फल पाप का लोग नहीं चाहते, जिसमें दिन रात विचरते हैं
मिलता है सभी को अपना किया चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।।
इस दुनियाँ में कृत कर्मो का फल, हरगिज माँफ नहीं होगा
जब तक यहाँ न भुगतान करो, तेरा दामन साफ नहीं होगा
रहे याद पथिक यह नियम सदा, चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।।

19 – प्रभु में ध्यान लगाले अरे नर बाबरियां

प्रभु में ध्यान लगाले अरे नर बाबरिया।। टेक ।।
धन यौवन का गर्व न करना, तन से दुःख दीनों का हरना
ममता मोह मिटाले अरे नगर बाबरिया।।1 ।।
काम क्रोध हैं ध्यान के वैरी, लालच लोभ की लगे न फेरी
श्रद्धा भाव बनाले, अरे नर बाबरिया।।2 ।।
धर्म से धन का संग्रह करना, दान भोग हित धन व्यय करना
धन का नाश बचाले अरे नर बाबरिया।।3 ।।
आसन जमा प्राण वश करले, विषयों से इन्द्रिय मन हरले
ध्येय में ध्यान लगाले अरे नर बाबरिया।।4 ।।
दिव्य विवेक बढ़ा नित प्यारे, क्लेश कर्म निर्वीज हों सारे
मोक्ष का लक्ष्य बनाले अरे नर बाबरिया।।5 ।।

विचार

अगर कभी किसी चीज का गुरुर आने लगे तो एक
"चक्कर"
कब्रिस्तान का लगा लिया करो।
वहाँ आप से भी बेहत्तर इन्सान मिट्टी के नीचे
"दफन" है

20 – सब का मालिक

(तर्ज – यह सारी दुनियाँ है आनी जानी तो)

सब का तू मालिक जग का भण्डारी।
सारा ज़माना तेरा पुजारी है।
सब से निराली प्रभु महिमा तुम्हारी।
देख लिया हर एक तुम्हारे दर पे आता है।
वह झोली भर के जाता है सभी का तू ही दाता है।
चाहे वह राजा हो चाहे भिखारी,
सारा जमाना तेरा पुजारी है।
सब से निराली प्रभु महिमा तुम्हारी ....।
परमाणु परमाणु में तू आप समाया है।
सकल संसार बनाया है किसी ने अन्त न पाया है।
गुण तेरे गाती है खलकत सारी।
सारा जमाना तेरा पुजारी है।
सब से निराली प्रभु महिमा तुम्हारी ....।
कर्मो का भुगतान किए बिन कौन गुजरता है।
यहाँ जो जैसा करता है 'पथिक' वैसा ही भरता है।
तेरी अदालत दुनियाँ से न्यारी।
सारा जमाना तेरा पुजारी है।
सब से निराली प्रभु महिमा तुम्हारी ....।

21 – जिस दिन घमण्ड अपने सर से

जिस दिन घमण्ड अपने सर से उतार देगा।
उस दिन तुझे विधाता अनमोल प्यार देगा।।
उसके समान जग में दाता न और कोई।
देने पे जब वह आये, तो बेशुमार देगा।। जिस दिन ....
मन वचन कर्म उसकी आज्ञानुसार कर ले।

वह तो पिता है तुझपे, सर्वस्व वार देगा।। जिस दिन ....

भगवान छोड़ साथी, इंसान को बनाया।

सुख में यह साथ देगा, दुःख में विसार देगा। जिस दिन ..

खुद ही न चैन जिसने, पाया हो जिंदगी में।

वह क्या किसी के दिल को, सब्रओ करार देगा।। जिस दिन ....

भेजा था उसने जग में, करने को कुछ कमाई।

किस को पता था जीवन, यों ही गुजार देगा।। जिस दिन..

अंत समय कहेगा, नेकी कमा लूं लेकिन।

इक पल 'पथिक' न कोई, जीवन उधार देगा।। जिस दिन ....

22 – सब का दाता एक है

(तर्ज – सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में)

अनगिनत प्राणी जगत् में सब का दाता एक है।
सब पिताओं का पिता और जगत माता एक है।
अनगिनत प्राणी जगत् ....

बात इतनी सी भला क्यों समझ में आती नहीं
खाने वाले है करोड़ो पर खिलाता एक है।
अनगिनत प्राणी जगत् ....

सब के कर्मो के मुताबिक फल सभी को दे रहा
जीव हैं जग में अनेकों पर विधाता एक है।
अनगिनत प्राणी जगत् ....

जर्रे जर्रे में समाया सब जगह मौजूद है।
इन सभी फूलों में हँसता मुस्कराता एक है।
अनगिनत प्राणी जगत् ....

और जो कुछ भी दिखाई दे रहा संसार में।
खुद बनाकर के चलाता फिर मिटाता एक है।
अनगिनत प्राणी जगत् ....

हर तरफ उसके नजारे ही नजारे देखिये।

हर नजारे में नजारा नजर आता एक है।
अनगिनत प्राणी जगत् ....
'पथिक' जितने भी सितारे है खुले आकाश में।
रोशनी बनकर सभी में जगमगाता एक है।
अनगिनत प्राणी जगत् ....

23 – यह जग रैन बसेरा प्रभु के दर

यह जग रैन बसेरा प्रभु के दर आ बन्देया।
जन्म सफल हो तेरा प्रभु के दर आ बन्देया।
ज्ञान का सूरज उगने लगा है,
नींद से हर प्रभु भक्त जगा है।
है सब ओर सवेरा प्रभु के दर आ बन्देया।
अन्दर के पट खोल दे प्यारे।
चमक उठें सब महल मुनारे।
हो जाये दूर अन्धेरा प्रभु के दर आ बन्देया।
प्रभु दर्शन की आस लगा ले।
ईश्वर के संग प्रीत बढ़ा ले।
कर ले प्यार घनेरा प्रभु के दर आ बन्देया।
लालच लोभ ने जाल बिछाया।
मोह माया ने आन फँसाया।
काम क्रोध ने घेरा प्रभु के दर आ बन्देया।
हर अपना विपरीत हुआ है।
यह जग किस का मीत हुआ है।
क्या तेरा क्या मेरा प्रभु के दर आ बन्देया।
सब खुशियाँ हैं तेरे घर में।
आ जा अपने मन मन्दिर में।
'पथिक' लगा ले डेरा प्रभु के दर आ बन्देया।

24 – भक्त जनों का रखवाला

भक्त जनों का रखवाला भगवान गरीब नवाज है।

सारी दुनियाँ मान गई तेरी लाठी बे आवाज है।
कान नहीं सुनता है सब की।
हाथ नहीं पर पकड़ गजब की।
देव तुम्हारे न्यायालय में चलता नहीं लिहाज है। तेरी लाठी...।
कोई तुझे माने न माने।
पहचाने या न पहचाने।
तीर न तेरा खाली जावे बड़ा निशानेबाज है। तेरी लाठी...।
कब किस वक्त कहाँ क्या होवे।
कब इनसान हँसे कब रोवे।
कौन तुझे पहचान सका तू खुश है या नाराज है। तेरी लाठी..।
किसी ने पाया प्यार तुम्हारा।
किसी पे तूने कष्ट उतारा।
अजब तुम्हारी कारगुजारी अजब तेरा अन्दाज है। तेरी लाठी...।
सभी उजाले सभी अन्धेरे।
सब के सब हैं वश में तेरें।
स्वयं बनावे स्वयं बजावे यह दुनियाँ इक साज है। तेरी लाठी.।
कैसे तू संसार चलावे।
कहाँ बैठकर डोर हिलावे।
'पथिक' सदा यह राज रहा है और आज भी राज है। तेरी लाठी...।

25 – सुख आये चाहे दु:ख आये

सुख आये चाहे दुःख आये तेरे कर्मों के अनुसार रे यह
फल है दिया परमेश्वर ने।
सुख आये चाहे दुःख आये तेरे..................................।
पर उपकार की राह पे तूने क्यों नहीं पाँव बढ़ाये।
झूठ कपट झल द्वेष न छोड़े निश दिन पाप कमाये।
दिल तोड़े कई सिर फोड़े तेरे मन में भरे विकार रे यह
फल है दिया परमेश्वर ने............।
भले बुरे का भेद न जाना खेल अनोखे खेले।

भटक भटक कर इस दुनियाँ में कष्ट हजारों झेले।
सागर में कभी कागज की कोई नाव न उतरे पार रे यह
फल है दिया परमेश्वर ने............।

जन्म जन्म के शुभ कर्मो से मानव चोला पाया।
फिर अपने ही दुष्कर्मो से हीरा जन्म गँवाया।
क्या खोया और क्या पाया कभी इस पर किया विचार रे यह
फल है दिया परमेश्वर ने............।

इधर उधर क्यों देख रहा है बनकर के दीवाना।
अन्तर्यामी परमेश्वर का न्याय नहीं पहचाना।
'पथक' वही जगदीश्वर ही करे न्यायपरक व्यवहार रे यह
फल है दिया परमेश्वर ने............।

26 – जन्म जन्म के चक्कर खा कर

(तर्ज – नमस्कार भगवान तुम्हें)

जन्म जन्म के चक्कर खा कर हीरा जीवन मिलता है।
शुभ कर्मो के फल स्वरुप यह फूल चमन में खिलता है।
जन्म जन्म के चक्कर ....।

अजर अजन्मा अमर जीव का नर तन उत्तम चोला है।
उपलब्धि का आज तलक नहीं भेद किसी ने खोला है।
जिस की मर्जी बिना जगत् में पत्ता तक नहीं हिलता है।
शुभ कर्मो के फल स्वरुप यह.....................................।

सृष्टि के अनमोल पदार्थ जो भगवान बनाता है।
वही कुशल कारीगर ही इस चोले का निर्माता है।
न तो कहीं यह मोल बिके और न दरजी से सिलता है।
शुभ कर्मो के फल स्वरुप यह.....................................।

कुन्दन बनता है सोना जब इसको आग तपाती है।
छेनी से छिल कर हीरे की चमक और बढ़ जाती है।
प्रभु मिले तो हँस कर झेलो जितना संकट झिलता है।
शुभ कर्मो के फल स्वरुप यह.....................................।

सदा जवानी नहीं रहेगी ले शुभ कर्म कमा प्यारे।
तन के पुर्जे ढीले होंगे समय न व्यर्थ गंवा प्यारे।
'पथिक' आखरी पहर में जीवन ठेले से नहीं ठिलता है।
शुभ कर्मो के फ़ल स्वरुप यह..।

27. प्रभु का प्यार

(तर्ज – तुम्हीं हो माता पिता तुम्ही हो....)

बता गये हैं यह लोग स्याने प्रभु की बातें प्रभु ही जाने।
न हम ही जाने न आप जाने प्रभु की बातें प्रभु ही जाने।
बता गये है यह लोग...

यह विश्व परमाणुओं के रच कर।
छुपा है सब की नजर से बच कर।
मिला कभी न किसी ठिकाने। प्रभु की बातें प्रभु ही.............

जनम जनम की प्रभात फेरी।
कभी सजाई कभी बिखेरी।
जगनियन्ता परमपिता ने। प्रभु की बातें प्रभु ही................

सुबह सवेरे गग़न पे आना।
व शाम सूरज का डूब जाना।
कला दिखाई इसी बहाने। प्रभु की बातें प्रभु ही................

जो आत्मायें यहाँ पे आयें।
वे मिल मिला कर के ल़ौट जायें।
शरीर तज कर फटे पुराने। प्रभु की बातें प्रभु ही................

वही विधाता है न्यायकारी।
प्रजा उसी के अधीन सारी।
नजर से गुजरे कई जमाने। प्रभु की बातें प्रभु ही................

'पथिक' न थकते न हारते हैं।
दशों दिशायें निहारते हैं।
अजब नजारे सदा सुहाने। प्रभु की बातें प्रभु ही................

28. सत्संग वाली नगरी चल रे मना

सत्संग वाली नगरी चल रे मना
चल रे मना चल रे मना
सत्संग वाली ....

इस नगर में ज्ञान की गंगा
जो भी नहाए हो जाए चंगा
पल पल हो निर्मल रे मना
सत्संग वाली ....

सत्संग के हैं अजब नजारे
बहुत सुहाने बहुत ही प्यारे
सुख शांति का फल रे मना
सत्संग वाली ....

सत्संग का ये असर हुआ है
बाहर सब कुछ बदल गया है
तू अंदर से बदल रे मना
सत्संग वाली ....

सत्संग का ये पल है निराला
मन मंदिर में होवे उजाला
कर जीवन को सफल रे मना
सत्संग वाली ....

किस्मत का चमका है सितारा
उदय हुआ है भाग्य हमारा
अवसर जाए ना निकल रे मना
सत्संग वाली ....

चल रे पथिक शुभ कर्म कमाले
इस अवसर का लाभा उठाले
देर ना कर एक पल रे मना
सत्संग वाली ....

29. इतनी दया करो भगवान्

प्रेम भाव से मिलकर जग में रहें सभी इन्सान।
इतनी दया करो भगवान।
सब के सब हों सुखी जगत् में हो सबका कल्याण।
इतनी दया करो भगवान।

कहीं अन्धेरा कहीं उजाला, तेरा है हर काम निराला।
सबको रचकर सबको पाला, तू ही है सबका रखवाला।
तेरे जैसा हुआ न कोई जग में और महान्।
इतनी दया करो भगवान।

सबका मालिक सबका स्वामी, घट घट वासी अन्तर्यामी।
सृष्टि कर्त्ता धर्त्ता हर्त्ता है तेरी पहचान।
इतनी दया करो भगवान।

जो भी तेरे दर पर आया, मन बुद्धि और शीश झुकाया।
करुणा का अमृत बरसाया, मानव जीवन सफल बनाया।
हमें भी तेरे भक्ति भजन का मिले अमर बलिदान।
इतनी दया करो भगवान।

सब आशायें पूरी कर दो, खाली मन की झोली भर दो।
हाथ दया का सर पर धर दो, सबके सारे संकट हर दो।।
अन्त समय तक 'पथिक' तुम्हारा करें सभी गुणगान।
इतनी दया करो भगवान।

30. योगी आया था वेदों वाला

योगी आया था वेदों वाला, किया था उजियाला।
वेदों के सच्चे ज्ञान का, वो तो देवता था।
सारे ही जहान का–2 ।।
आदि में दया थी जिसके अंत में आनन्द था,

नाम भी कितना प्यारा था ।
स्वयं किया विषपान हमको अमृत पिलाया,
कभी ना हिम्मत हारा था।
ईश्वर भक्ति भी इतनी शक्ति रखती,
जगती सारी को ऋषि पहचाना,
ओर वेद ज्ञान माना। जो कारण था कल्याण का
वो तो देवता था सारे ही जहान का...........
आड़ में धर्म के यहाँ दीन दुखियों पर,
जुल्म गुजारे जाते थे।
लाखों ही बहन और बेटियों के चीर उतारे जाते थे।
सात वर्ष की विधवा होती, रो–रो जीवन खोती।
सोती जाति को आन जगाया, और पूज्य बताया
जो स्वर था तान का
वे तो देवता था ....
प्रेम की बहा कर गंगा, मिला गया वह
अपने जिगर के टुकड़ों को ।
मुद्दत से गुलाम था, यह भारत हमारा,
मिटा गया वो दु:खड़ों को।
देश दिवाना बन मर्दाना, बन गया मन परवाना,
लाना चाहता था वो आजादी, मर्यादावादी, गांधी से इन्सान का
वे तो देवता था ....
करन को उपकार ऋषि सारे जहान का,
डट कर चला अकेला था।
चेला था ना चेली थी, ना कोई संगी साथी
ईश्वर एक सहेला था
विष जब खाया, प्रभु गुण गाया,
योगी वो मुस्कराया, आया प्रभु की

शरण में और लीन भजन में।
जो स्वर था तान का ।।
वे तो देवता था ....

31. रहे ऋषि दयानन्द तेरी युग युग

रहे ऋषि दयानन्द तेरी युग युग तक अमर कहानी
हम भूल नही सकते है, की तूने जो कुर्बानी

तू धर्म का था दिवाना सच्चाई का परवाना
तू झुका सत्य के आगे तेरे आगे झुका जमाना
सुन तेरी अद्‌भुत वाणी दुनिया हो गई दीवानी
हम भूल नही सकते ....।

लाखों भूले भटकों को तूने मार्ग दिखलाया
जो श्रद्धा करके आया उसे श्रद्धानन्द बनाया
सच तो यह है मुर्दो को बख्शी तूने जिन्दगानी
हम भूल नही सकते ....।

बन सच्चा सेवक तूने की देश धर्म की सेवा
लाखों तेरे अनुयायी सबको बाँटी मेवा
मिलके जो आज हम बैठे, सब तेरी मेहरबानी
हम भूल नही सकते ....।

कई तुझे मारने आये लेकिन मार न पाये
भला उसको कौन मिटाये जिसको भगवान बचाये
की कदर कदरदानों ने बेकदरों ने कदर न जानी
हम भूल नही सकते ....।

थी धन्य तुम्हारी माता जिसने था तुझको जाया
वो धन्य गुरु विरजानन्द जिससे ज्ञान था पाया
उस लाखानी योगी ने किया तुझको भी लाखानी।
हम भूल नही सकते ....।

32. जागो तो एक बार जागो

जागो तो एक बार जागो जागो तो
जो शंकर दयानन्द जागे, नास्तिक मत पाखण्डी भागे
हुआ वेद का जय जयकार
जागो जागो तो...................।

जागे थे प्रताप शिवाजी, जीत गये मुगलों से बाजी
रुक गये अत्याचार ।
जागो जागो तो...................।

जागी थी झांसी की रानी, इकली थी पर हार न मानी
चमक उठी तलवार ।
जागो जागो तो...................।

जागे थे गुरु गोविन्द प्यारे, देश पे चारों बच्चे वारे
वार दिया परिवार।
जागो जागो तो...................।

जागे थे भगतसिंह प्यारे, असेम्बली में लग गये नारे
हुआ बमकाण्ड धुँआधार ।
जागो जागो तो...................।

सुभाषचन्द्र नेताजी जागे, अंग्रेजों के छक्के छुडा गये
गई गौरों की सरकार ।
जागो जागो तो...................।

आर्यवीर जागो जगाओ, ऊँच नीच का भेद मिटाओ
वारो देश उद्धार । जागो जागो तो...................।

अच्छा दिल और अच्छा स्वभाव दोनों आवश्यक है ।
अच्छे दिल से कई रिश्ते बनेंगे और
अच्छे स्वभाव से वो जीवन भर टिकेगें

33. जग को जगाने वाला आर्य समाज

जग को जगाने वाला आर्य समाज है।
जग की पुकार है, वह युग की आवाज है।।
विश्व को बचाने वाला आर्य समाज है।
आर्य समाज.....................................।

ईश की उपासना का रास्ता दिखा दिया
जड़ की आराधना के पाप से बचा लिया
ढोंग, ढंग जिसके भय से डोल रहा आज है।
आर्य समाज.....................................।

ठाकुरों की ठोकरों ने कर दिया बेहाल था।
दम्भियों का ओर छोर फैला हुआ जाल था।
जिसने देश जाति की बचाई आज लाज है।
आर्य समाज.....................................।

नारियों भी वेद–पाठ संध्या हवन कर रहीं
रुढ़ियों कुरीतियों है अपने आप मर रही
वेद के प्रचार का जो कर रहा सुकाज है।
आर्य समाज.....................................।

कौन था जो आर्यो की भावना जगा गया
कौन था जो मौत से भी जूझना सिखा गया
श्रद्धानन्द लेखराम प्यारा हंसराज है।
आर्य समाज है वो आर्य समाज है।

34. शिवरात्रि मुबारक हो सबको

शिवरात्रि मुबारक हो सबको, ऋषिवर की याद दिलाती है।
भूले भटके जो प्राणी है सन्मार्ग उन्हें बतलाती है
जिस दिन ही मूल को मन्दिर में, सच्चे शिव का ज्ञान हुआ।
दिल उठ गया मूर्ति पूजा से और, एक ईश्वर का ज्ञान हुआ।

पद चिन्हों पे–2 उनके चलते रहे, शिवरात्रि हमें सिखलाती है।
शिवरात्रि मुबारक हो सबको ....
जब चारों ओर अविद्या की, एक रात अंधेरी छाई थी।
सूरज बनकर ऋषि चमक उठे, दुनिया में धूम मचाई थी।
वह वैदिक–2 शिक्षा दी हमको जो जीवन सफल बनाती।
शिवरात्रि मुबारक हो सबको ....
कुर्बान किया जीवन अपना, पर बहता देश बचा ही गया
कांटों से भरी झोली अपनी, फूलों पे हमें बिठला ही गया
दिल धन्य–2 दिल धन्य–2 कहता है,
पथिक जब याद ऋषि की आती है।
शिवरात्रि मुबारक हो सबको ....

35. इस कुल का यह दीपक प्यारा बालक

इस कुल का यह दीपक प्यारा बालक आयुष्मान हो
तेजस्वी वर्चस्वी निर्भय सर्वोत्तम विद्वान हो

परम भक्त बन परम प्रभु का अपना यश फैलाये ये
मात पिता की सेवा कर, सच्चा सेवक कहलाये ये
नाम अमर करदे जगती में, सर्व गुणों की खान हो।।1 ।।
इस कुल का यह दीपक..

बने सुमन सा कोमल सुन्दर दानी बनकर दान करे
दुष्टों से न डरे कभी भी श्रेष्ठों का सम्मान करे
मानव धर्म समझकर चलने वाला चतुर सुजान हो।।2 ।।
इस कुल का यह दीपक..

विजय चौतरफा जय हो इसकी, पावे सुख सम्मान भी
शतआयु से अधिक हो जीवन करे धर्म हित दान भी
नेता बने देश अपने का, जगती में सम्मान हो ।।3 ।।
इस कुल का यह दीपक..

36. देते सभी बधाई जन्म दिन शुभ आया

देते सभी बधाई जन्म दिन शुभ आया।
सब ने मिलकर यज्ञ किया है, ईश्वर का वरदान लिया है।
क्या सुखद सुगन्ध समाई, जनम दिन शुभ आया।
देते सभी बधाई....................

दादा–दादी धन्य हुये है, मात–पिता फलवान हुये है
वंश की बेल बढ़ाई, जनम दिन शुभ आया।
देते सभी बधाई....................

बल–विद्या यश को ये पाये, सम्पति, सज्जनता अपनाये।
सज्जन करे बढ़ाई, जनम दिन शुभ आया।
देते सभी बधाई....................

सात्विक, याज्ञिक उपकारी हो, निर्व्यसनी जग हितकारी हो।
होवे आयु सवाई, जनम दिन शुभ आया।
देते सभी बधाई....................

दीन दुःखी की करे भलाई, पाखण्डों की करे बुराई।
मन में रखे सफाई, जनम दिन शुभ आया।
देते सभी बधाई....................

37. सब मिल के सब देओ बधाई

सब मिल के सब देओ बधाई, आज बड़ी है खुशियां छाई
बालक खूब बने बलवान, बालक खूब बने विद्वान

दयानन्द सा हो ब्रह्मचारी, श्रद्धानन्द सा पर उपकारी
रामचन्द्र सा आज्ञाकारी, वीर शिवाजी सा बलशाली
बन के सुनाये कृष्ण मूरारी, मधुर मुरली की तान
बालक खूब ....

सूरज सा ये रहे चमकता, कुन्दन सा रहे दमकता।

उलझन में ना रहे अटकता, विषयों में ना रहे भटकता।।
प्यारा बने ये सारे जग का, खूब बने महान।
बालक खूब ....

सुभाष सा महान बने यह, जवाहर सा गुणवान बने यह
पढ़ लिखकर विद्वान बने यह, अपने कुल की शान बने यह
धर्मवृति सा राजा बनकर, सम्भाले देश की कमान
बालक खूब ....

जन्मदिन

38. होके मन में मगन गा रहे आर्य जन

होके मन में मगन गा रहे आर्य जन बहिन भाई
जन्मदिन की तुम देओ बधाई।।
आज शुभ दिन प्रभु ने दिखाया, सबने मिलकर के उत्सव मनाया
हुआ प्रसन्नचित, खुशी मातु और पितु, चाची ताई ।।1 ।।
जन्मदिन की तुम ....
वेद विद्या में बालक निपुण हो, सत्यपथ पर चले सर्व गुण हों
समझे अपना धर्म और करे शुभ कर्म ध्यान लाई।।2 ।।
जन्मदिन की तुम ....
पढ़े गुरुकुल बने ब्रह्मचारी, वीर अर्जुन के सम धनुर्धारी
चाँद द्वितीया क़ा बन खिले जैसा सुमन हरषाई।।3 ।।
जन्मदिन की तुम ....
होवे माता पिताजी का प्यारा, राम और कृष्ण जैसा दुलारा
होवे ईश्वर में मन, यह करे रात दिन शुभ कमाई।। 4 ।।
जन्मदिन की तुम ....
सबने मिलकर के उत्सव मनाया, सबने मिलजुल के यह गीत गाया
वर्षा पुष्पों की कर, वेदनिधि नाम धर जय मनाई।।5 ।।
जन्मदिन की तुम ....

39. आज का दिन प्यार ले के आया

आज का दिन प्यार ले के आया है।
हर बशर परिवार का हरषाया है।
एक चेहरा चान्द सा मुस्काया।
दिल का सागर बार–बार लहराया है।

हवन यज्ञ करवाया वैदिक सत्संग सजाया
नामकरण के द्वारा बालक ने नाम धराया
ईश गुण गाया है, हर बशर ....

मिलकर प्यारे प्यारे। वेदों के मंत्र उचारे
बाल वृद्ध नर नारी मन मग्न हुए है सारे
प्यार बरसाया है, हर बशर ....

इस प्यारे बेटे का है नाम बड़ा ही प्यारा
इसी नाम के द्वारा यह गूंज उठे जग सारा
प्रभु की माया है, हर बशर ....

मिला सुखों का डेरा, खुशियों का बना बसेरा
सूरज बन कर चमका जीवन में नया सवेरा
सुखद फल पाया है, हर बशर ....

बालक युग युग जीवे, खुशियों का अमृत पीवे
पर उपकारी बन कर सब फटे हुए दिल सीवें
धर्म धन पाया है, हर बशर ....

40 खुशी का दिन यह आया है

खुशी का दिन यह आया है, बधाई हो बधाई हो।
यह शुभ सन्देश लाया है बधाई हो बधाई हो।।

फले–फूले यह देवी, ईश की कृपा रहे इस पर
ये बालक जिसने जाया है, बधाई हो बधाई हो
बधाई ....

हो लम्बी आयु बालक की, रखा है नाम अब जिसका

क्या सुन्दर यज्ञ रचाया है, बधाई हो बधाई हो।।
बधाई ....

सदाचारी–आयुष्मान हो बलवान यह बालक
प्रभु वरदान पाया है बधाई हो बधाई हो
बधाई ....

रखा नाम जो सुन्दर, करे यह सार्थक इसको
हर्ष सबने मनाया है, बधाई हो बधाई
बधाई ....

यशस्वी नाम हो इसका, मिले सम्मान जग भर में
रत्न अनमोल पाया है, बधाई हो बधाई हो
बधाई ....

बधाई दे रहे मिलकर, सभी परिवार प्यारे को
सभी ने गीत गाया है, बधाई हो बधाई हो
खुशी का दिन ....

41. शुभ विवाह की वर्षगांठ पर

(तर्ज : नगरी–नगरी द्वारे–द्वारे ढूँढू रे सांवरियां)

शुभ विवाह की वर्षगांठ पर सौ–सौ बार बधाई हो।
सदा रहो मिलकर तुम ऐसे जैसे दूध मलाई हो।।
शुभ विवाह ....

तुमने जीवन साथी बनकर इतने वर्ष बिताये हैं।
एक दूजे का हाथ पकड़कर इस मंजिल तक आये हैं।।
आपस की यह प्रीति हमेशा हो दिन रात सवाई हो
शुभ विवाह ....

यह जीवन आदर्श तुम्हारा, सबको राह दिखाता है।
सद् गृहस्थ ऐसा होता है, यह सन्देश सुनाता है।।
तन, मन, धन से जन, गण, मन की सेवा और भलाई हो

शुभ विवाह ....

पति पत्नि दो पहिये समझो अपने घर की गाड़ी के
दोनों ही माली है सुन्दर फूलों की फुलवारी के
जीवन स्वर्ग बने धरती पर, ऐसी नेक कमाई हो
शुभ विवाह ....

सुखद स्वास्थ का तुम दोनों के जीवन को आधार मिले
बीते समय भजन भक्ति में, परमेश्वर का प्यार मिले
'पथिक' चलो सुख की राहों पर ईश्वर सदा सहाई हो
शुभ विवाह ....

(प्रसन्नता वो चन्दन है दूसरे के माथे पर लगाइये, तो अंगुलियां महकती है)

42. सदा सुखी सम्पन्न हो जोड़ी अजर अमर

सदा सुखी सम्पन्न हो, जोड़ी अजर अमर।
बने प्रेम का धाम ये, स्वर्ग सा इनका घर।।

प्रण किये विवाह में जो भी, निष्ठा से उनको पालें
दुखियों के बने सहारे, दीनों को भी अपनाले
चले सेवक बनकर, बने प्रेम ....।

पत्नी निज स्वामी ऊपर, कर दे सर्वस्व निछावर।
पति मान करे पत्नी का, समझे प्राणों से बढ़कर।।
प्रेम से रहे मिलकर, बने प्रेम ....।

फूलों जैसे मुस्काते, मुख मे हो मिश्री घोली
आपस में निशादिन बोलें, कोयल सी मीठी बोली
मधुर हो प्यारा स्वर, बने प्रेम ....।

दुर्गुण हों जो भी उनको, दे दबा पूर्ण निज बल से।
सब काम विजय हो सीधे, दूर रहे कपट ओर छल से।।

43. यह मंगल भवन बन जाना

यह मंगल भवन बन जाना बधाई हो बधाई हो
शुभ गृह प्रवेश करवाना बधाई हो बधाई हो।।

कराया यज्ञ हवन उत्तम, हुआ जो वेद मंत्रों से
सुगन्धित वायु फैलाना, बधाई हो बधाई हो।।
बधाई हो बधाई हो...................................

बनाया है भवन सुन्दर, रहे सबको यह सुखकारी
सभी मित्रों का यहाँ आना, बधाई हो बधाई हो
बधाई हो बधाई हो...................................

रहे आनन्द का वातावरण, कृपा प्रभु की रहे घर में
यह उद्घाटन का करवाना, बधाई हो बधाई हो
बधाई हो बधाई हो...................................

सदा कल्याण की वर्षा, रहे ईश्वर की कृपा से
'वीर' का ईश्वर गुण गाना बधाई हो बधाई हो
बधाई हो बधाई हो...................................

44. धागों का त्यौहार है राखी

धागों का त्यौहार है राखी भारत के त्यौहारों में
भाई बहिन का प्यार बंधा है कोमल से इन तारों में
धागों का ....

हर बहिन अपने भैया के सौ सौ शगुन मनाती है।
कर टीका बांध के राखी फूली नहीं समाती है।
कहती है तेरा नाम हमेशा चमके चाँद सितारों में
धागों का ....

प्रण करें भैया भी मन से मैं कर्त्तव्य निभाऊँगा,
जब भी संकट बने बहिन पर कर के दूर दिखाऊँगा।
अपने घर खुशहाल रहे तू खुशियों भरे नजारों में।

धागों का ....

कितना सुन्दर और मधुर यह भाई बहिन का नाता है।
जब 'पथिक' आशाएँ लेकर राखी का दिन आता है।
ऐसे दिल खिलतें है जैसे खिलते फूल बहारों में।
धागों का त्यौहार है राखी भारत के त्यौहारों में

45. प्यारे प्रीतम से कर मेल सजनी

प्यारे प्रीतम से कर मेल सजनी सम्भल के होली खेल
पहले तो सज ले अलवेली सेवा साड़ी ओढ़ सहेली
बुद्धि की बिन्दी लगा नवेली, अब मत रहे अलेल
सजनी सम्भल के होली खेल।
प्यारे प्रीतम से ....।

हाथ में चूड़ी चातुरता की कान में बाली बाल विद्या की
नाक में लोंग पहन लज्जा की सिर में शील का तेल
सजनी सम्भल के होली खेल।
प्यारे प्रीतम से ....।

समता लच्छे पहन पगन में, सत्य का सुरमा सार नयन में
हंसी खुशी के होय गले में हंसली हार हमेल।
सजनी सम्भल के होली खेल।

46. होली है जी होली है, रंग बिरंगी होली है

होली है जी होली है, रंग बिरंगी होली है।
होली पर्व मनाने निकली नवयुवकों की टोली है
होली है जी होली है ....।

हर मानव से प्यार बढ़ाओ, सब पर अपना रंग चढ़ाओ।
नफरत को जो मार मिटाये, वो अपना हमजोली है।
होली है जी होली है ....।

हम है भारत की सन्ताने, मिलकर गाये नये तराने
अपनी ताकत के आगे अंग्रेज हूकूमत डोली है।
होली है जी होली है ....।

जो चाहे धमका देता है, उल्टी राह चला देता है
उठो आर्यो इसे बचा लो यह जनता तो भोली है
होली है जी होली है ....।

शिष्टाचार बढ़ाना होगा, सदाचार अपनाना होगा
ऋषियों मुनियों सद्‌गुरुओं की यह शिक्षा अनमोली है
होली है जी होली है ....।

लाल पाल और बाल सरीखे, बिस्मिल बोस भगतसिंह दीखे
घर घर लाल गुलाल उड़े, यह भारत की रंगोली है
होली है जी होली है ....।

ऋषिवर देव दयानन्द आये, आकर सोये शेर जगाये
'पथिक' सत्य का ज्ञान कराया, पोल पाखण्ड की खोली है।
होली है जी होली है ....।

प्यारे प्रीतम से ....।

शेष रहा जो गहना कपड़ा सो सब पति आज्ञा में रहना
अब तू होती को उठ बहना घर के काम सकेल
सजनी सम्भल के होली खेल।
प्यारे प्रीतम से ....।

रुप कहे पति व्रत जल प्यारी धर्म का इसमें रंग मिला री
प्रेम की भर भर के पिचकारी, संखिया सन्मुख खेल
सजनी सम्भल के होली खेल।
प्यारे प्रीतम से ....।

47. अरी बहना सोलह संस्कार कराओ

अरी बहना सोलह संस्कार कराओ
बालक को देव बनाओ, आस्था पूरी दिखलाओ वेद में–2
मेरी बहना अच्छे नर–नारी होंगे बच्चे ब्रह्मचारी होंगे देश में।

वेद धर्म का जिनको ज्ञान हैं, ईश्वर का रखती मन में ध्यान है।
मेरी बहना होती पतिव्रता माता–पिता धार्मिक बन जाता
बालक नरसिंह कहाता देश में।।
मेरी बहना.............................. ।

विदुषी माता ऋषियों की मान ले बहादुर सन्तान जनुंगी ठान ले।
मेरी बहना होती माँ जीजाबाई शिवा की मात कहाई देश में।।
मेरी बहना.............................. ।

मानव से देव बनाना जान ले पैदा होते ही उत्तम ज्ञान दे
मेरी बहना जिव्हा पर ओम् लिखाना वेदों का ज्ञान कराना
धार्मिक जन पैदा करना देश में।
मेरी बहना.............................. ।

गोदी में उत्तम लोरी देती रहे घन में संध्या यज्ञों को करती रहे
मेरी बहना सुन्दर सा नाम धराना, गौ माँ का दूध पिलाना
बल और बुद्धि को बढ़ाना देश में
मेरी बहना.............................. ।

वैदिक मर्यादाओं का मान हो, उत्तम संस्कारों का आह्वान हो,
मेरी बहना सत्येक्षु पुत्र बनाना गायत्री का जाप सिखाना
ईश्वर का भक्त बनाना देश में ।।
मेरी बहना.............................. ।

48. जिसके लिए इस देश की माँए

तर्ज (मिलो ना तुमतो हम घबराये मिलो तो आँख चुराये)

जिसके लिए इस देश की माँए गोद में लाल खिलाये,
समय वो आ गया है–2
पाले पोसे कष्ट उठाँए अपना दूध पिलाएँ
समय वो आ गया है ......।

ओ देशवासियों ! कहती है देखों माँ पुकार के
ले ही न जाए कोई सर से दुपट्टे को उतार के
पुत्र भी अपना फर्ज निभाएँ माँ की लाज बचाएँ
समय वो आ गया है ......।

कृषकों व्यापारियों! अपने खजाने तुम भी खोल दो
गेहूँ धान सोना चांदी देश की मिट्टी के भार तोल दो
सारे मिल के एक हो जाएँ शक्ति आज दिखाएँ
समय वो आ गया है ......।

कवियों व लेखकों ! कलमों से फेंकों आज आग तुम
सैनिकों में साहस भर के, इनको बनादो काले नाग तुम
जो भी इनके सामने आए पानी माँग न पाए
समय वो आ गया है ......।

ओ प्यारे सैनिकों ! उठो लो बन्दूकें अपनी चूम के
वैरी का सफाया करके, रण में दिखा दो जरा झूम के
'पथिक' तुम्हारी सभी दिशाएँ जय जयकार मनाएँ
समय वो आ गया है ......।
जिसके लिए इस देश की माँए गोद में लाल खिलाये।

49. हुआ शुभ जन्म लालन का

हुआ शुभ जन्म लालन का बधाई हो बधाई हो।
करे गुणगान ईश्वर का, बधाई हो बधाई हो।
पढ़े विद्या ये गुरुकुल में, बने विद्वान वेदों का
करे ब्रह्मचर्य का पालन, बधाई हो बधाई हो।। 1 ।।
धनुर्धारी हो अर्जुन सा, बली हो भीम भीष्म सा
हो दानी कर्ण के सानी, बधाई हो बधाई हो।।2 ।।
करे पालन पिता आज्ञा हजारों कष्ट सह सहकर
हरे दुःख द्वन्द जननी का बधाई हो बधाई हो।।3 ।।
है सौ सौ बार आशीर्वाद, इसका नित्य गुलशन का
हो वैदिक वीर भारत में बधाई हो बधाई हो।।4 ।।

50. बनकर सूरज चाँद गगन में

बनकर सूरज चाँद गगन में चमक रहे दो प्यारे नाम
इक योगेश्वर कृष्ण दूसरे मर्यादा पुरुषोत्तम राम
राम ने सेवा सत्य वचन और निर्भयता को धारा
मानव की हर मर्यादा ने अपना रुप निखारा
जिनको निज आदर्श मानकर गुण गावे संसार तमाम।।1 ।।
जीवन में महाराज कृष्ण ने अद्‌भुत बल दिखलाया
दुष्ट जनों का इस धरती से नामोनिशान मिटाया
मानवता खिल उठी दिया जब गीता का पावन पैगाम।।2 ।।
मात पिता की आज्ञा पाकर राम ने संकट झेले
चौदह बरस वनों में रहकर हर मुश्किल से खेले
त्याग तपस्या ब्रह्मचर्य से जीत लिये कितने संग्राम।।3 ।।
नहीं मिला इतिहास कहीं पर कृष्ण सुदामा जैसा
निर्धन और धनवान में जब दीवार बना था पैसा
भारत विश्व गुरु कहलाया हुये पथिक सुन्दर परिणाम।।4 ।।

51. नर तेरो चोला रतन अमोल

नर तेरो चोला रतन अमोला विरथां खोवे मती ना।
विपत्त में रोवे मती ना नींद में सोवे मती ना।।

नर तोकूं देह दई मानस की भक्ति करले परमेश्वर की।
सुधबुंध भूल जाय या घर की नींद में सोबे मती ना।।1 ।।

नर तेरे पिछले जनम की करनी, होयगी याही जनम में भरनी।
नौका आन पड़ी ठोकर से याय डुबेबे मती ना।। 2 ।।

गठरी बाँध कमर में तगड़ा, झूठा है सब जी का झगड़ा
सीधा पड़ा स्वर्ग का दगड़ा, काँटे बोवे मती ना।। 3 ।।

ये तो ऋषि मुनि और फक्कड़, पड़ गये माया के चक्कर में
नौका आन पड़ी ठोकर से, याय डुबेबे मती ना ।।4 ।।

52. फूलों से तुम हंसना सीखो

फूलों से तुम हंसना सीखो भौरों से तुम गाना
सूरज की किरणों से सीखो जगना और जगाना

दूध और पानी से सीखो मिलना और मिलाना।
मेंहदी के पत्तों से सीखो पिस–पिस रंग चढ़ाना।।
फूलों से तुम...

सुंई और धागे से सीखो बिछुड़े गले लगाना।
वृक्षों की डाली से सीखो फल पाकर झुक जाना।।
फूलों से तुम...

धुँए से तुम सीखो सारे ऊपर उठते जाना
वायु के झोंकों से सीखो तन हरकत में लाना।
फूलों से तुम...

पतझड़ के झोंकों से सीखो दुःख में धैर्य बंधाना।
मुर्गे की बोली से सीखो, प्रातः प्रभु गुण गाना।।
फूलों से तुम..

पानी बिन मछली से सीखो देशहित तड़फड़ाना।
सूरज की किरणों से सीखो जगना और जगाना।।
फूलों से तुम..

53. ओम की बोलो जय जयकार

ओम की बोलो जय जय कार जी बधाई होवे
फले–फूले यह परिवार जी बधाई होवे।

पहली बधाई उस प्रभू जी ने होवे
जिसने रचाया यह संसार। जी बधााई होवे
ओम की बोलो ....

दूजी बधाई दादा–दादी ने होवे
जिनका है बढ़िया ये परिवार जी बधाई होवे
ओम की बोलो ....

तीजी बधाई मात–पिता नु होवे
जिनकी गोदी में सुन्दर लाल जी बधाई होवे
ओम की बोलो ....

चौथी बधाई जी बुआ–मौसी ने होवे
जिनकें मन बिच खुशियाँ है अपार जी बधाई होवे
ओम की बोलो ....

रिश्ता

रिश्ता ऐसा होना चाहिए जो हमें जान सके पहचान सके भीग रहे हो अंगर तेज बारिश में तो भी आँसुओं को पहचान सके।

पांचवी बधाई सारी संगत नु होवे
जिन्होने गाये मंगलाचार जी बधाई होवे
ओम की बोलो ....

54. कंचन जैसी काया काऊ दिन माटी

कंचन जैसी काया काऊ दिन माटी में मिल जायेगी।

कसरत करि करि स्वस्थ बनाई
साबुन तेल सुगन्धि लगाई
दूध मलाई किशमिश खाई
काऊ दिन यम को भेट चढ़ि जावेगी
कंचन जैसी ....।

हाड़न की यामें ईट लगाई
खून मांस की लेप चढ़ाई
प्राणों की नित पवन चलाई
काऊ दिन पवन चाल रुक जावेगी
कंचन जैसी ....।

यौवन में कभी गर्व न करना
पुण्य कमाई हरदम करना
काया अपनी सफल बनाओ
काऊ दिन अग्नि में जल जायेगी
कंचन जैसी ....।

'दिव्यानंद' से प्रेम बढ़ालो

काया अपनी सफल बनालो

काऊ दिन सीख याद रह जावेगी

कंचन जैसी ....।

55. चरित्र अमर था कृष्ण योगी राज का

चरित्र अमर था कृष्ण योगी राज का –2
आज भी है और कल भी रहेगा।
चमकता सितारा था भारत माँ के लाल का–2
आज भी है और कल भी रहेगा।

वासुदेव का बेटा था देवकी माँ का लाला था
था चक्र सुदर्शन धारी गौओं का रखवाला था
हिम्मत वाला ग्वाला था अनोखे अन्दाज का
आज भी है और ....।

था गृहस्थी होकर भी कृष्ण योगी अति ब्रह्मचारी
है गलत उन्हे ये कहना कि थी सोलह हजार रानी
एक पत्नी धारी प्यारी रुकमणी का नाम था

पति – पत्नि कैसे बने ?

वेद में – (यजुर्वेद पंचमोध्याय मंत्र संख्या ३ से) – प्रभु कहते है कि मेरी प्राप्ति के लिए पति पत्नि समान मन वाले, समान संज्ञान वाले हो ।

वे अपनी ज्ञानाग्नि को दीप्त रखे और संज्ञान वाले हो जिससे दोनों की इच्छा ज्ञान–प्राप्ति की हो । ज्ञान प्राप्ति करके आप दोनों दोष रहित हों । आपका जीवन निरन्तर यज्ञमय हो । यज्ञो के सम्पादन के लिए आवश्यक सम्पति का सम्पादन करने वाले बनो। उस सम्पति से सबका कल्याण करो, भूखे को रोटी खिलाना, प्यासे को पानी पिलाना, असहाय एवं दीन–दुखी मनुष्यों की सेवा करो । यह धन यज्ञों में विनियुक्त होकर सभी का हित का साधन करें । इस प्रकार तुम हमारे हो जाओ और प्रभु की कृपा का पात्र बनों।

आज भी है और ....।

ये है कैसे लोग उनकी जो जय जयकार लगाते हैं
उन्हें चोर चोर कहकर कीर्तन करने आते हैं
क्या होता मजाक यूं ही हिन्दू समाज का
आज भी है और ....।

उन्हें राधारमण कहते हुए कुछ शर्म तो आनी थी
रावण की पत्नी थी ये राधा कृष्ण की मामी थी
पढ़कर देखो लेख लिखा पदम पुराण का
आज भी है और ....।

वो कंस, जरासंध का एक काल बनके आया
और दीन सुदामा का सखा प्रतिपाल बनके आया
सारथी कमाल बना पार्थ तिरंदाज का
आज भी है और ....।

56. तेरी आयु बीती जाय ओ जाय

तेरी आयु बीती जाय ओ जाय शुभ कर्म कमा ले बाबरिया

तू माया के पीछे भागे, तेरा पैर नहीं धरती लागे
ये साथ तेरे नहीं जाय ओ जाय
शुभ कर्म कमा ....।

तू पाप कर्म ही करता है नहीं परमेश्वर से डरता है
तुझे देगा जेल पठाय ओ पठाय ।
शुभ कर्म कमा ....।

जो जैसा कर्म कमाता है वो वैसा ही फल पाता है
यह परमेश्वर का न्याय ओ न्याय
शुभ कर्म कमा ....।

यह जगदीश्वर की सृष्टि है उसकी सब पर ही दृष्टि है
यह सबको रहा लखाय ओ लखाय
शुभ कर्म कमा ....।

ये महल अटारी रह जायेगें धन माल को और ही खा जायेगें
इसे दोनों हाथ लुटाय ओ लुटाय
शुभ कर्म कमा ....।

नित संध्या हवन रचाया कर और ओम से ध्यान लगाया कर
तेरा जनम सफल हो जाय हो जाय।
शुभ कर्म कमा ....।

तू यम नियमों का पालन कर इनके पालन में टाल न कर
तेरी सहज मुक्ति हो जाय – हो जाय ।
शुभ कर्म कमा ....।

57. सुख भी मुझे प्यारे है, दु:ख भी मुझे प्यारे

सुख भी मुझे प्यारे है, दु:ख भी मुझे प्यारे है।
छोड़ू मैं किसे भगवन दोनों ही तुम्हारे है।।

दु:ख सुख ही सबको इन्सान बनाते है।
संसार की नदियों के दोनों ही किनारे है।।
छोड़ू मैं किसे भगवन................................

दु:ख चाहे ना कोई भी सब सुख को तरसते हैं।
दु:ख में सब रोते है सुख में सब हँसते हैं।
सुख मिले इसके पीछे दु:ख ही तो सहारे है।
छोड़ू मैं किसे भगवन................................

सुख में तेरा शुक्र करुँ, दु:ख में फरियाद करुँ।

जिस हाल में रखे मुझे मैं तुमको याद करुँ।।
मैंने तो तेरे आगे ये हाथ पसारे है।
छोडू मैं किसे भगवन..............................
जो है तेरी रजा उसे में देखूं पकड़ कैसे
मैं कैसे कहूँ मेरे कर्मों के ही फल ऐसे
चख के ही ना देखूंगा मीठे हे कि खारे है
छोडू मैं किसे भगवन..............................

58. परमपिता से प्यार नहीं

परमपिता से प्यार नहीं, शुद्ध रहा व्यवहार नहीं
इसीलिये तो आज देख लो, सुखी कोई परिवार नहीं
अन्न फूल फल मेवाओं को समय समय पर देता है
लेकिन है अफसोस यहीं, बदले में कुछ नहीं लेता है
करता है इन्कार नहीं, भेदभाव तकरार नहीं
ऐसे दानी का ओ बंदे माने तू उपकार नहीं।।1 ।।
परमपिता से प्यार नहीं..............
मानव चोले में न जाने कितने यन्त्र लगाये हैं
कीमत कोई माप सका न ऐसे अमूल्य बनाये हैं
कोई अंक बेकार नहीं, पा सकता कोई पार नहीं
ऐसे कारीगर का बंदे करता जरा विचार नहीं ।।2 ।।
परमपिता से प्यार नहीं..............
जलवायु और अग्नि का वह लेता नहीं किराया है
सर्दी गर्मी वर्षा का अति सुन्दर चक्र चलाया है
लगा कहीं दरबार नहीं कोई सिपह सालार नहीं

कर्मों का फल देय सभी को, रिश्वत की सरकार नहीं ।।3 ।।

परमपिता से प्यार नहीं...............

सूर्य चन्द्र तारों का जाने, कहाँ बिजलीघर बना हुआ

पलभर को धोखा नहीं देता, कहाँ कनक्शन लगा हुआ

खम्बा और कोई तार नहीं, खड़ी कहीं दीवार नहीं

ऐसे शिल्पकार का बंदे, करता जरा विचार नहीं ।।4 ।।

परमपिता से प्यार नहीं...............

59. भरोसा नाथ है तेरा तू ही पितु

भरोसा नाथ है तेरा तू ही पितु मात है मेरा

पिता तेरी शरण तेरी शरण।

अजब रचे है चाँद सितारे घूम रहे है न्यारे न्यारे

सभी को तू बनाता है, बनाता है टिकाता है ।।1 ।।

पिता तेरी शरण ....

देख लिया है ये जग सारा, चिन्तन कर नित खूब विचारा

कोई न और साथी है, तू ही मेरा हिमाती है।। 2 ।।

पिता तेरी शरण ....

दुःख दुर्गण सब दूर हटाओ, शुभ कर्मों में लगन लगाओ

तुम्हें न भूल पाऊँ मैं, सदा गुणगान गाऊँ मैं ।।3 ।।

पिता तेरी शरण ....

काम क्रोध ने बहुत सताया, मद ममता मन मोह समाया

सभी दुःख दर्द पापों से बचाओ तीन तापों से ।। 4 ।।

पिता तेरी शरण ....

छाय रहा नरदेव अंधेरा, घोर अविद्या पाप घनेरा

सकल तम को मिटा दीजे, निकट अपने बिठा लीजे ।।5 ।।

पिता तेरी शरण ....

60. प्रभु सारी दुनियाँ में ऊँची तेरी शान

प्रभु सारी दुनियाँ में ऊँची तेरी शान है
कितना महान् है तू कितना महान है।
तू ही एक मालिक है सारी कायानात का
फूलों भरी क्यारियों का, तारों की जमात का
तेरी ही जमीन है, ये तेरा आसमान है ।।1 ।।
कितना महान है तू..........................
जितने भी रंग देख सभी तेरे रंग हैं
जग में अनेंकों तेरे पालने के ढंग हैं
तुझको ही छोटे बड़े, सब ही का ध्यान है ।।2 ।।
कितना महान है तू..........................
जितने भी जग में, जीव देहधारी है
सभी तेरे प्यार के समान अधिकारी है
पथिक सभी को दिया तूने वरदान है।। 3 ।।
कितना महान है तू..........................
यहाँ वहाँ कोने कोने तू ही मशहूर है
निकट से निकट और दूर से भी दूर है
तुझमें समाया हुआ सफल जहान है।।4 ।।
कितना महान है तू..........................

कभी ना कहो कि दिन अपने खराब हैं ।
समझ लो कि हम काटों से घिरे गुलाब हैं ।।

61. तेरी लीला का तेरी माया का

तेरी लीला का तेरी माया का प्रभुजी
पाया ना तेरा पार कि ऋषि मुनि हारे हैं।
कैसा सुन्दर जगत रचाया, खिल रहे चाँद सितारे।
कोई किसी से ना टकराये रहते न्यारे–न्यारे।
कोई ऊँचा है, कोई नीचा है, प्रभु जी
पृथ्वी है गोलाकार कि ऋषि मुनि हारे है।
तेरी लीला ....

तरह तरह के वृक्ष लगाये, कतरन न्यारी–न्यारी।
फल और फूल लगे है उनमें शोभा अति प्यारी।
कोई खट्टा है, कोई मीठा है प्रभु जी
कोई फल है रसदार की ऋषि मुनि हारे है।
तेरी लीला ....

दिन के पीछे रात बनाई मौसम अजब निराले
सर्दी पड़ती धूलें उड़ती, कहीं बहते नाले।
पक्षी गान करें, तेरा ध्यान करें, प्रभुजी
भक्त रहे हैं पुकार कि ऋषि मुनि हारे है।
तेरी लीला ....

गर्भ के अन्दर रचना करता, लेकिन नजन न आवे।
बिन सूंई और बिन धागे कैसे जोड़ लगाये।
कोई अंधा है कोई लंगड़ा है प्रभुजी
कर नर देहि से प्यार कि ऋषि मुनि हारे है।
तेरी लीला ....

62. हर पल में हो प्रभु सुमरिन तेरा

हर पल में हो प्रभु सुमरिन तेरा, ऐसा बना दो प्रभु जीवन मेरा
याद तेरी को सदा मैं दिल में बसाऊं–2
आठो प्रहर बस तेरे गीत गाऊँ।

तेरे चरणों में लागे मन मेरा, ऐसा बना दो प्रभु जीवन मेरा

प्यार से जग मेरा मुझको सताये–2

चिन्ता न हर दिन नजदीक आये

करता रहूँ प्रभु चिन्तन तेरा, ऐसा बना दो प्रभु जीवन मेरा

ऐसा तेरी भक्ति में दास खो जाये–2

मैं ना रहूँ बस तू ही तू हो जाये

सफल हो जाये नर तन मेरा, ऐसा बना दो प्रभु जीवन मेरा

63. जाप ना किया तूने

जाप ना किया तूने ओ3म् नाम का–2

करुणा निधान प्यारे सुख धाम का। जाप ना किया..............

जिन्दगी में कोई शुभ कर्म ना किया–2

धर्म ना किया दूर भ्रम ना किया–2

बोल तेरा तन फिर किस काम का–2। करुणानिधान.........

दिन–रात जिसको तू सजाने में लगा है–2

अपने ही मन को रिझाने में लगा है–2

कुछ ना बनेगा तेरे गोरे चाम का–2। करुणानिधान..........

उलटे ही कर्म तो कमाये उम्र भर

पेड़ तो बबूल के लगाये उम्र भर–2

कहाँ से मिलेगा तुझे फल आम का। करुणानिधान..........

खुशी का पैगाम तो प्रभात लाई है

और मीठे बोल कुछ साथ लाई है–2

जाने क्या सन्देश लाये वक्त शाम का–2। करुणानिधान..........

64. संसार के लोगों से आशा

संसार के लोगों से आशा न किया करना–2।

जब कष्ट कोई आये, प्रभु नाम जपा करना–2।।

संसार समुन्दर में तूफान भी आते है–2।

जो प्रभु को भजते है, प्रभु आप बचाते है।
तूफान से बचायेंगे, तुम याद किया करना–2।
जब कष्ट कोई आये............................

क्यों भूल गया बन्दे ये देश बेगाना है।
इस दुनिया में आकर वापस भी जाना है।–2
माया के चक्कर से तुम दूर रहा करना।
जब कष्ट कोई आये............................

क्या सोच रहा प्राणी, प्रभु तुझ से दूर नहीं।
जब कष्ट हो भक्तो पर, प्रभु को मंजूर नहीं।–2
भगवान को आता है भक्तों पे दया करना
जब कष्ट कोई आये............................

65. तू मन्दिर–मन्दिर क्या भटके

तू मन्दिर–मन्दिर क्या भटके, तेरे मात–पिता ही ईश्वर है।–2
तू जो है उनके कारण है, वे ही सच्चे परमेश्वर है।।

रातों में गीली चादर में, वो तेरे संग में सोते थे
तू हंसता था वो हंसते थे, तू रोता था वो रोते थे।–2
जीवन ही उनका समर्पण है, तू छाया है वो दपर्ण।
तू जिस मिट्‌टी बना हुआ, वो उनके ही तन के कण है
तू मन्दिर ....

जब तक है उनका हाथ तेरे सर पर तू पूर्ण सुरक्षित है।
जो माता–पिता को ना माने, उस पुत्र का जन्म कंलकित है।
वो पशु है ना प्राणी है, वो सबसे बड़ा अज्ञानी है।
वो मानव जन्म गंवाता है, किस होश में वो अभिमानी है।
तू मन्दिर ....

66. जीवन में जिसने यश ना लिया

जीवन में जिसने यश ना लिया, पशुओं की भांति खाया पिया।
ये क्या जिन्दगानी है, वेद पथ पर चलो–2

समय–समय पर हमने, नहीं जीवन को अपने संभाला।
ऋषियों व मुनियो का कर्जा, सर से ना अपने उतारा–2 ।।
शुभकाम ना किया, कभी दान ना दिया–2
ये मिटने निशानी है, वेद पथ पर चलो ।। जीवन में.........................

आया था जब तू यहाँ पर, बता साथ में क्या–2 तू लाया।
जायेगा जब तू यहाँ से, सब रह जायेगा धरा–धराया।
निश्चय तू करले नहीं संग चले–2
यह रीति पुरानी है, वेद पथ पर चलो। जीवन में.................

इच्छा करें हम स्वर्ग की, करें काम नरक जाने का।
हकदार कहे ना कोई, तुझे मानव भी कहलाने का।
अब तो जगो वेद पथ पर चलो–2
यह ऋषियों की वाणी है, वेद पथ पर चलो। जीवन में.......................

67. गुणगान करो जगदीश्वर का

गुणगान करो जगदीश्वर का जिसने यह जगत् रचाया है।
हर चीज अजीब रची उसने हर खेल अजीब दिखाया है।
गुण करो जगदीश्वर.........................

प्रातः जो सूर्य निकलता है, हर शाम को फिर वह ढलता है।
हर मौसम रंग बदलता है, कैसा दृढ़ नियम बनाया है।
गुण करो जगदीश्वर.........................

जो प्राणी जग में आता है, इक रोज यहाँ से जाता है।
कृत कर्मो का फल पाता है, प्रभु ने यह चक्र चलाया है।
गुण करो जगदीश्वर.........................

इस ओर तितलियों को देखा, उस ओर मछलियों को देखा।
फूलों की कलियों को देखा, मस्तक सबका चकराया है।
गुण करो जगदीश्वर.........................

आकाश में बादल रहते है, धरती पर दरिया बहते हैं।
जिसको हम सागर कहते है, सब कुछ उस प्रभु की माया है।
गुण करो जगदीश्वर.........................

हर पेड़ में बीज बनाया है, हर बीज में पेड़ समाया है।

ऐसा करतब दिखलाया है, नहीं भेद समझ में आया है।

गुण करो जगदीश्वर..........................

जिसने उसको पहचान लिया, अपना अंगरक्षक मान लिया।
प्रभु भजन हृदय में ठान लिया, वह 'पथिक' सदा हर्षाया है।

गुण करो जगदीश्वर..........................

68. विश्वपति जगदीश तुम तेरा

(तर्ज – देखा ना कोई देवता प्यारे ऋषि की शान का)

विश्वपति जगदीश तुम तेरा ही ओम् नाम है।
मस्तक झुका के प्रेम से ईश्वर तुम्हें प्रणाम है।
विश्वपति जगदीश ....

सृष्टि बना के पालना दाता है तेरे हाथ में
करना प्रलय भी अन्त में तेरा ही नाथ काम है।
विश्वपति जगदीश ....

ऋतुएँ बदल के आ रहीं नदियाँ सिंधु में जा रहीं
शाम के बाद है सुबह, सुबह के बाद शाम है।
विश्वपति जगदीश ....

सूरज समय पे ढल रहा, वायु नियम से चल रहा
झुकता है सर यह देख कर तेरा जो इन्तजाम है।
विश्वपति जगदीश ....

आता नजर नहीं मगर कण कण में तू समा रहा
जग में जहाँ पे तू न हो ऐसा न कोई धाम है।
विश्वपति जगदीश ....

होता है न्याय ही सदा ईश्वर तेरे दरबार में
चलती है सिफारिशें चढ़ता न कोई दाम है।
विश्वपति जगदीश ....

तेरे पदार्थ हैं प्रभु 'पथिक' सभी के वासते
सब के लिये हैं वेद भी जिन में तेरा पैगाम है।
विश्वपति जगदीश ....

69. हम सब मिलके दाता आए तेरे दरबार

(तर्ज – कमली वाले आका तुझ को)

हम सब मिलके दाता आए तेरे दरबार।
भरदे झोली सब की तेरे पूर्ण भण्डार।
होवे जब सन्ध्या काल निर्मल होके तत्काल
अपना मस्तक झुका के कर के तेरा ख्याल।
तेरे दर पे आके बैठे सारा परिवार।
हम सब मिलके ....
चाहे दिन हों विपरीत होवे तुम से ही प्रीत।
पूरी श्रद्धा से गावें तेरी भक्ति के गीत।
हावे सब का प्रभु जी तेरे चरणों में प्यार।
हम सब मिलके ....
लेके दिल में फरयाद तुझ को करते हैं याद।
जब हों संकट की घड़ियाँ माँगें तुम से इमदाद।
सब से बढ़ के ज़ग में ऊँचा तेरा आधार।
हम सब मिलके ....
तू है दुनियाँ का वाली करता सब की रखवाली।
हम हैं रंग रंग के पौधे तू है हम सब का माली।
'पथिक' बगीचा है यह तेरा सुन्दर संसार।
हम सब मिलके ....

70. जीवन की रुलाती

(तर्ज – बाबुल की दुआएं लेती जा जा तुझको सुखी ....)

कुछ चाह न बाकी रहती है प्रभु आके तेरे दरबार मुझे।
जीवन की रुलाती ....
मेरे दिल के गगन पर आके कभी जब गम की घटा छा जाती है।
इक पल में कहीं से दया तेरी तब बन के हवा आ जाती है।
तुझे रक्षक सब का कहने में फिर क्यों हो भला इनकार मुझे।

जीवन की रुलाती ....
प्रभु दर पे तेरे आने वाला झोली अपनी भर लेता है।
तेरे दर से प्रभु मैं क्या माँगूं बिन माँगे तू सब कुछ देता है।
जो तेरी इच्छा है दाता हरदम है वही स्वीकार मुझे।
जीवन की रुलाती ....
जन जन को परख कर देख लिया पर तेरे बराबर कोई नहीं।
दुनियाँ में बहुत से दर हैं मगर तेरे दर से बड़ा दर कोई नहीं।
क्यों और किसी की चाह करुँ जब तुझ सा मिले आधार मुझे।
जीवन की रुलाती ....
जब तक मैं 'पथक' दुनियाँ में रहूँ बस एक यही मेरा काम रहे।
मेरे दिल में तुम्हारी याद रहे होंटों पे प्रभु तेरा नाम रहे।
रहे प्यार तुम्हारे चरणों में चाहे जन्म मिले सौ बार मुझे।
जीवन की रुलाती ....

71. प्रभु का प्यार

(तर्ज – करती हूँ तुम्हारा व्रत मैं स्वीकार करो माँ)

भगवान तुम्हारे दर पे भक्त आन खड़े हैं।
संसार के बन्धन से परेशान खड़े हैं।
ओ मालिक मेरे ! ओ मालिक मेरे.................

संसार से निराले कलाकार तुम्हीं हो।
सब जीव जन्तुओं के सृजनहार तुम्हीं हो।
तुझ परम प्रभु का मन में लिए ध्यान खड़े हैं।
संसार के बन्धन से परेशान.......ओ मालिक मेरे.......

तुम वेद ज्ञान दाता पिताओं के पिता हो।
वह राज कौन सा है कि जो आपसे छिपा हो।
हम तो हैं अनाड़ी बालक बिना ज्ञान खड़े हैं।
संसार के बन्धन से परेशान.......ओ मालिक मेरे.......

सुनकर विनय हमारी स्वीकार करोगे।
मंझधार में है नैया प्रभो पार करोगे।

हर कदम कदम पर आगे ये तूफान खड़े है
संसार के बन्धन से परेशान.......ओ मालिक मेरे.......
दुनियाँ में आप जैसा कोई और नहीं है।
इस ठ़ौर के बराबर कहीं ठौर नहीं है।
अपनी तो 'पथिक' मंजिल है जो पहचान खड़े हैं।
संसार के बन्धन से परेशान.......ओ मालिक मेरे.......

72. ओम् ओम् बोले

(तर्ज – कभी राम बन के कभी शाम बन के....)

ओम् ओम् बोले रोम रोम बोले
यही प्यारे प्रभू का बड़ा नाम है। यही प्यारे प्रभु का..................
उपनिषद् ओम् के गीत गा के ।
सारी दुनियाँ को महिमा सुना के।
धुंआँधार बोले सविस्तार बोले। यही प्यारे प्रभु का.................।
योग दर्शन भी दर्शा रहा है ।
ओम् का अर्थ समझा रहा है।
गुण अपार बोले हर प्रकार बोले। यही प्यारे प्रभु का..........।
कृष्ण भगवान् गीता में बोले।
ओम् अक्षर के सब भेद खोले।
जोरदार बोले बेशुमार बोले। यही प्यारे प्रभु का.................।
गुरु नानक जी धरती पे आये।
एक ओंकार के शब्द गाये।
लगातार बोले बार बार बोले। यही प्यारे प्रभु का..............।
बोले ऋषिवर दयानन्द प्यारे।
ओम् में प्रभु के हैं नाम सारे।
समझदार बोले कर विचार बोले। यही प्यारे प्रभु का.................।
ऋषियो मुनियों को है ओम् प्यारा।
इसको जीवन में सबने उतारा।
'पथिक' प्यार बोले तार तार बोले।
यही प्यारे प्रभु का.................।

73. प्रातः समय प्रभु गुणगान

(तर्ज – गोविन्द जै जै गोपाल जै जै)

प्रातः समय प्रभु गुणगान गाओ।
सन्ध्या हवन करो वरदान पाओ।
पक्षी सभी चहचहाने लगे है,
मिलकर मधुर गीत गाने लगे हैं।
तुम अपना स्वर इनके स्वर में मिलाओ। प्रातः समय प्रभु....।
मस्ती में चलती मचलती हवाएँ।
जीवन का सन्देश देती दिशाएँ।
भगवान् के भक्ति जल में नहाओ। प्रातः समय प्रभु....।
आकाश में छा गई सुर्ख लाली।
देखो खतम हो गई रात काली।
अन्तःकरण सब तरह से सजाओ। प्रातः समय प्रभु....।
अज्ञान का मिट चुका है अन्धेरा।
विज्ञान का हो गया है सवेरा।
अनमोल अवसर न सोकर गँवाओ। प्रातः समय प्रभु....।
मन में लग्न प्रेम की भावना हो।
चिन्तन मनन की प्रबल चाहना हो।
वातावरण साधनामय बनाओ। प्रातः समय प्रभु....।
उत्तम विचारों से उत्थान होगा।
शुभ कर्म करने से कल्याण होगा।
सब को 'पथिक' धर्म पथ पर चलाओ। प्रातः समय प्रभु....।

74. ईश्वर सब का एक है

(स्वरचित–नीता आर्या)

ईश्वर सबका एक है, वेद में यही लिखा।
पत्थर को इंसान ने बना दिया भगवान।।
नयी सदी से मिल रही दर्द भरी सौगात।

बेटा कहता बाप से – तेरी क्या औकात।।
पानी आँखों का मरा, मरी शर्म और लाज।
कहे बहु अब सास से, घर में मेरा राज।।

भाई भी करता नहीं, भाई पर विश्वास।
बहिन पराई हो गई, साली खासमखास।।

मंदिर में पूजा करें, घर में करे कलेश।
बापू तो बोझा लगे, पत्थर लगे गणेश।।

बचे कहाँ अब शेष हैं, दया, धर्म, ईमान।
पत्थर के भगवान हैं, पत्थर दिल इंसान।।

पत्थर के भगवान को लगते छप्पन भोग।
मर जाते फुटपाथ पर भूखे प्यासे लोग।।

फैला है पाखण्ड का अंधकार सब ओर।
पापी करते जागरण मचा–मचा कर शोर।।

पहन मुखौटा धरम का, करते दिन भर पाप।
भंडारे करते फिरे, घर में भूखा बाप।।

75. एक दिन बिक जायेंगे माटी के मोल

(स्वरचित–नीता आर्या)

एक दिन बिक जायेंगे माटी के मोल।
जग में रह जायेंगे, प्यारे हमारे बोल।।

माटी ओढ़न माटी पहरन माटी का सिहराना है।
माटी का कलबूत बनाया, इसमें जगत समाया है।
मल–मल के नहालें बंदे, साबुन से रोज।
जग में रह जायेंगे ....।।

क्या लेकर हम आये जगत में क्या लेकर हम जायेंगे।
मुट्ठी बांधे आये जगत में, हाथ पसारे जायेंगे।।
सोना–चाँदी, महल–अटारी, सब जायेंगे छोड़ ।
जग में रह जायेंगे ....।।

जिसे कहते हम अपना–अपना, वो ही हमें जलायेंगे।
एक दिन हमरी परछाई को वो भी देख डर जायेंगे।।
भाई–बंधु, कुटुम्ब–कबीला, सब जायेंगे छोड।
जग में रह जायेंगे ....।।

76. ईश्वर सब का एक है

(स्वरचित–नीता आर्या)

हम नमन करें दिन–रात, प्रभू ये बात नहीं भूलें।
जीवन हैं तेरी सौगात, प्रभू ये बात नहीं भूलें।।
प्रभूजी तुमने भेजा हमको, सुंदर सी काया देकर के।
दिये नाक–कान भेजा हमको और नयन दिये हैं देखन को।।
हमें चलने को दिये पाँव, प्रभू ये बात नहीं भूलें।
हम नमन ....।।
इंसान हमको बना दिया, सुंदर सी वाणी दे डाली।
हमें अद्‌भुत रंग में रंग डाला, कोई देख न तुमको है पाया।
हम हवन करें सुबह–शाम, प्रभू ये बात नहीं भूलें।
हम नमन ....।।
इंसान सदा शुभ कर्म करें, अधिकार मिला है जमाने में।
कुछ कर्म नये करने के लिये और पहले किये भरने के लिये।
हम ओम् भजे दिन–रात, प्रभू ये बात नहीं भूलें।
हम नमन ....।।

कभी ना कहो कि दिन अपने खराब हैं ।
समझ लो कि हम काटों से घिरे गुलाब हैं ।।

वेदों से जो दूरी थी

(स्वरचित–ओमप्रकाश आर्य)

(तर्ज – जीती बाजी हार गये हम, किस्मत ही कुछ ऐसी थी)

समझ सके ना परमपिता को, समझ ही जड़ मूरत में थी।
ज्ञान धर्म का पा ना सके हम, वेदों से जो दूरी थी।।

मूरत समझी सूरत समझी, समझ ना पाये ज्ञानी को
अब तक यूं ही वक्त गंवाया, पहचान नहीं ईश्वर की।
वेद ज्ञान सुन–पढ़ ना सके हम, वेदो से जो..............

जगती परमपिता ने रचाई, रचाया सुन्दर मानव को
धर्म कर्म वेदों में दर्शाए, अपना ना सके हम जीवन में
श्रेष्ठ बना ना सके जीवन को, वेदो से जो ....

ऋषियों के यज्ञ की भी रक्षा, मर्यादा पुरुषोत्तम ने की थी
राम कृष्ण भी वैदिक थे, समझ में हमसे भूल हुई।
चरित्र छोड़ मूरत हमने पूजी, वेदो से जो...................

रचनाकार–ओमप्रकाश आर्य

विचार

एक कागज का टुकड़ा गवर्नर के हस्ताक्षर से नोट बन जाता है। जिसे तोड़ने, मरोड़ने, गन्दा होने एवं जर्जर होने से भी उसकी कीमत कम नहीं होती

आप भी ईश्वर के हस्ताक्षर है,

जब तक आप ना चाहें आपकी कीमत कम नहीं हो सकती।

आप अनमोल है, अपनी कीमत पहचाने।

ईश्वर किसे कहते है? कैसा है, कहाँ है ?

ईश्वर एक अनादि, निराकार और सर्वव्यापक चेतन तत्व है जो इस जगत का निमित्त कारण है और सबका आधार है। ईश्वर सत्+चित+आनन्द स्वरुप है, अनन्त है तथा शुद्ध-बुद्ध मुक्त स्वभाव वाला है। वह सबसे महान एवं सर्वशक्तिमान है। असंख्य सृष्टियाँ तथा आत्माएँ उसी एक परमेश्वर में निवास करती है और वह परमात्मा स्वयं इन सबमें विद्यमान रहता है। ब्रह्मंण्ड में कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ ईश्वर की सत्ता न हो।

उपासना किसकी व कैसे करें?

उपासना उसी एक निराकार, सर्वज्ञ, अजन्मा, सर्वशक्तिमान ईश्वर की करनी चाहिए।

उपासना का अर्थ है ईश्वर के समीप बैठना व ईश्वर के गुणों का चिन्तन करके उन्हें अपने जीवन में धारण करना।

उपासना की विधि – एकान्त स्थान में किसी ऐसे स्थान पर बैठे जिससे सुखपूर्वक बिना हिले-डुले देर तक बैठा जा सके। फिर मन की एकाग्रता के ए तीन प्राणायाम करें। फिर आँख बंद करके हृदय या भृकुटि में ध्यान लगाये और ओ3म् का मानसिक जाप करें। धीरे-धीरे जाप को बढ़ाये और जितना ओ3म् का जाप बढ़ेगा उतना ही ध्यान लगता जायेगा। उपासना के लिए अष्टांग योग के नियमों का पालन करना जरुरी है। कम से कम एक घन्टा अवश्य ईश्वर की उपासना करें।

आप (जीव) अंश है या पूर्ण है ?

जीव नित्य है इसका आदि है और न अन्त। अतः जीव अंश नहीं है। जीव एक नित्य चेतन सत्ता है। अंश सावयव पदार्थ का होता है निरवयव का नहीं। पूर्ण तो केवल ईश्वर है। जीव आनन्द की खोज में ईश्वर की ओर बढ़ता है और ईश्वर की भक्ति करता है एवं कर्मफल भोगता है। ईश्वर के बन्धन में है। स दृष्टि से जीव अपूर्ण है। परन्तु स्वरुप की दृष्टि से जीव पूर्ण है अर्थात आत्मा को बनाने वाला कोई नहीं है वह एक अनादि चेतन सत्ता है, इस दृष्टि से आत्मा पूर्ण है।

मनुष्य बनो

परमपिता परमेश्वर ने मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए पवित्र वेद का

ज्ञान दिया। जिसको पढ़–पढा और सुन–सुनाकर मनुष्य अपने जीवन को सफल कर सके। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप है उसने सारी सृष्टि आनन्द से परिपूर्ण रची है। उसने सुन्दर–सुन्दर दृश्य रचे है उन्हें देखने के लिए आँखें दी है। सूर्य को आँखों का सहयोग करने के लिए रचा है देखकर हम सृष्टि का आनन्द लें। सुनकर आनन्द लेने के लिए कान रचे है। आकाश उनके साधन के रुप में बनाया। सुन्दर फल रस से परिपूर्ण बनाये। उसके आनन्द के लिए रसना को रचा। शीतल वायु का आनन्द मिले तो त्वचा को बनाया। सुगन्ध का आनन्द लेने के लिये नाक को बनाया। कहने का तात्पर्य सिर्फ इतना है कि परमात्मा ने पिता का दायित्व पूरा करते हुये हमें आनन्द से परिपूर्ण करने के लिए सब कुछ दिया है। लेकिन योग्यता के अभाव में हम फिर भी दुःख सागर में गोते खा रहे है। कवि वर प्रकाश जी ने उचित ही लिखा है –

"आनन्द स्त्रोत बह रहा फिर भी उदास है।
अचरज है जल में रहकर के मछली को प्यास है।।"

इस सारे आनन्द को लेने की योग्यता के लिए वेद ने कहा कि–
'मनुर्भव'– तू मनुष्य बन। मनुष्य बनना ही तेरे आनन्द प्राप्त करने के लिए पर्याप्त है।

–सुधा गुप्ता

हमारा जन्म क्यों ?

हम जीवात्माएँ अनादिकाल से सुख–प्राप्ति की कामना से शरीर धारण कर्मानुसार करते आ रहे हैं, कौनसी आत्मा कितने वर्षो से इस यात्रा में है यह तो परमात्मा के अतिरिक्त किसी जीवात्मा के लिए जानना असम्भव है।

ईश्वर ने हम जीवात्माओं के प्रति न्याय करते हुए हमें संसार का उपभोग करने और मोक्ष प्राप्त करने के निमित्त यह अद्भुत संसार प्रकृति से बनाकर दिया।

गुण कर्मो के विभाग किये गए और सबको स्वकर्मानुसार शरीर प्रदान किये। किसी को पक्षी योनि प्राप्त हुई, किसी को पशु, कोई वृक्ष, कोई वनस्पति, कोई दृश्य जगत का निवासी हुआ तो कोई अदृश्य जगत के हुये। परन्तु इन सब योनियों में जो श्रेष्ठ शरीर था, जिसमें कर्म करने की स्वतन्त्रता हो, आत्मज्ञान प्राप्त कर सके, कुछ नवीन सृजन कर

सके वह मानव चोला ईश्वर ने दिया।

और उन मानव जाति का मार्ग प्रशस्त करने के लिये उनके अन्तःकरण में ईश्वर ने कर्त्तव्य, अकर्त्तव्य, धर्म–अधर्म, विधि–निषेध आदि के ज्ञान हेतु परम पावन 'वेद ज्ञान' दिया। वेद में सभी प्रकार की विद्याओं का भण्डार ईश्वर ने भरकर दिया।

अब हमारा उत्तरदायित्व है कि हमने जन्म पाकर क्या किया ?

जन्म तो हमनें सैद्धान्तिक रुप से दो ही उद्देश्यों के लिये प्राप्त किया

(1) संसार का सुख–भोग (2) मोक्ष के लिए

यह एक विचारणीय बिन्दू है कि क्या हम संसार का सुख प्राप्त कर रहें है। कितने अंशों में हम संसार का सुख ले रहे हैं और किस विधि से ले रहे है यह विचारणीय है, चिंतन का विषय है।

प्रायः हम व्यक्ति गत सुख भोग हेतु समष्टिगत हानि कर रहे होते है। क्या दूसरों को दुःख देकर स्वयं सुख भोगना मानव के लक्षण है? सम्भवतः यह तो पशुता है। पिशाच वृत्ति है और यही पिशाच तथा पशुता ने मानव समाज को जीवंत नर्क सा वातावरण बना दिया। जो शरीर सभी योनियों में श्रेष्ठ था, आज उस योनि को पाकर प्रायः यह मानव दुःख भोग रहा है। क्यों, क्योंकि पूर्व के मानवों ने ऐन–केन प्रकारेण सुख को ही धर्म समझा। फिर चाहे वह किसी भी प्रकार से प्राप्त हो और इस सुख की प्राप्ति की लालसा ने मानव का दूसरा धर्म दीर्घकालीन सुख अर्थात मोक्ष अर्थात ईश्वर प्राप्ति को भुला दिया।

इन सबके मूल में जो था वह था ईश्वर ने मानव सृष्टि के समय जो ज्ञान वेद रुप में दिया उसके सन्दर्भ की अनभिज्ञता।

हमने जन्म लिया और संसार को ही लक्ष्य करके उसी को गुरु मानकर उसी की प्राप्ति के लिए चल पड़े।

जरा विचार करें, यह संसार तो जड़ है, भला जड़ क्या मार्ग प्रशस्त करेगा। ईश्वर ने जो चेतन सत्ता के अन्दर वेद ज्ञान दिया हमने उसकी अवहेलना की।

परिणाम स्वरुप हमने जो सुखमय संसार की व्यवस्था बनाये रखनी थी, उसको दुःख मय बना दिया।

किसी ने कहा – बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध ले।

क्या पूर्णतया बीती हुई घटनाओं को विस्मरण हो जाना चाहिए? नहीं उनसे शिक्षा लेकर और पुनः ईश्वर के ज्ञान वेद की ओर अग्रसर होकर हमें सुख की प्राप्ति के पथ पर चलना होगा। व्यक्ति से व्यक्ति को, व्यक्ति को समाज और समाज से राष्ट्र को जोड़ना होगा और साथ लेकर चलना होगा। क्योंकि हम सभी का लक्ष्य तो एक ही है वह है सुख और सुख तभी मिलेगा जब हम अपने साथ अन्यो को भी सुख के पथ पर चलने के लिए सहयोग और प्रेरणा करेंगे।

कारण हम सबका पिता तो एक ही है, भला किसी पिता की एक संतान सुखी हो और दूसरी नहीं तो क्या पिता को यह स्वीकार्य है कि एक बेटे ने अपने निजी सुख के लिय दूसरे बेटे को दुख दिया। सुख प्राप्त करना है तो अपेन आस पास का वातावरण सुखमय बनाना होगा। वह तभी होगा जब हम एक वेद ज्ञान को एक ईश्वर को धारण करेंगे।

वायु शुद्धि हेतु हवन (यज्ञ) करें

यदि एक व्यक्ति को वायुरोधी कमरे में बंद कर दिया जाये तो क्या वह व्यक्ति जीवित रह सकता है? तो उसका उत्तर नहीं में ही दिया जायेगा। और यदि कमरा बड़ा हो तो वह व्यक्ति थोड़ी देर जीवित रह सकता है जितना बड़ा कमरा होगा उतना ही जीने का समय बड़ जायेगा क्योंकि जब तक प्राण वायु कमरे में रहेगी तभी तक व्यक्ति जीवित रह सकता है। व्यक्ति आक्सीजन ग्रहण कर कार्बनडाई आक्साइड छोड़ता है तो जयों ही कमरे की ऑक्सीजन खत्म हो जायेगी तभी जीवन लीला समाप्त हो जायेगी। ठीक इसी प्रकार हम जिस वायुमण्डल में श्वांस ले रहे हैं वह एक बहुत बड़ा मण्डल है। जिसे हम प्रतिदिन दूषित करते चले जा रहे हैं। पृथ्वी के चारों और एक बहुत बड़ा वायुमण्डल है लेकिन सीमित है यदि इसी प्रकार प्रदूषण होता रहा तो जीवन असम्भव हो जायेगा।

सामान्य रुप से वायु में 21 प्रतिशत ऑक्सीजन, 78 प्रतिशत नाइट्रोजन 0.03 प्रतिशत कार्बनडाई आक्साइड, 0.17 प्रतिशत अन्य गैसे होती है। जहरीली गैसें अधिक होने पर वायु प्रदुषण अधिक होता है।

ज्ञानी व्यक्ति पाप से बच सकता है

वेद कहता है कि किया हुआ पाप नष्ट नहीं होता आकाश में चला जाता है। आकाश में जाकर धीरे–धीरे पकता है। पाप करने वाले को यहाँ आकर पकड़ लेता है और ताकतवर होकर आता है।

साल दो साल, एक जन्म, दो तीन जन्म बाद भी आ जाता है। पाप से सुख रुपी वृक्ष में कीड़ा लग जाता है। अज्ञान से पाप प्रकट होता हे। ज्ञानी पाप से बच सकता है।

जल सिंचन – नीचे जमीन में करना चाहिये। पानी और अग्नि मिलने से एक गैस बनती है। 'फारमल्डेहाईड गैस HCHO' जो किसी भी बीमारी के कीटाणु हमारे पास नहीं आने देती और हमारी बीमारी के कीटाणु किसी के पास नहीं जाने देती ।

गुड़, शक्कर और घी मिलकर जो गैस बनती है उससे टी.बी. की बिमारी दूर होती है।

चावल (भात) की आहुति देने से 16 किलोमीटर का वातावरण शुद्ध हो जाता है।

यज्ञ : विद्वानों और जड़ पदार्थो के गुणों का प्रकटीकरण है। भू:लोक, अन्तरिक्ष तथा द्यूलोक में अग्नि मेरी हवि को देवताओं तक पहुँचाता है।

देव (देवता) कौन ?

देव – जो मनुष्यता से ऊपर हो, उनको हम भगवान (देव) तो बोल सकते हैं, परमपिता नहीं ।

जो हमको नि:स्वार्थ भाव से सब कुछ दे, बदले में हमसे कुछ नहीं लें उनका संचालन स्वयं परमपिता के हाथ में हो क्योंकि वह ही सृष्टिकृर्ता है।

ऐसे देव जो कभी हमारा अहित ना करे ।

सूर्य, चाँद, पृथ्वी, जल, वायु ये ही ऐसे देवता है जिनका निर्माण हम नहीं कर सकते ।

मेघो के अधिपति गुणों के स्वामी मरुत और मानव जीवन में ईश्वर द्वारा निर्मित पदार्थ पूजनीय देव है ।

महर्षि दयानन्द एक विचार

महर्षि दयानन्द विश्व के महान् पुरुषों में सर्वोपरि स्थान रखते हैं। जिस समय इनका जन्म हुआ, उस समय भारत में अविद्या की घनघोर घटायें छाई हुई थी। भारत देश अंग्रेजों की गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। भारतवासी अपने को हीन समझ रहे थे। अनाथ तथा विधवायें बिलख रही थी। नारी जाति अपमानित हो रही थी। धर्म का स्थान पाखण्डों ने ले लिया था। लोग नदियों में स्नान करने से ही मुक्ति मान रहे थे। "स्त्रीशूद्रो नाधीयताम् इति श्रुतैः" कहकर स्त्री व शूद्रों को विद्याधिकार से वंचित रखा जा रहा था। वेद विद्या प्रायः लुप्त हो रही थी। एक ईश्वर का स्थान अनेक कल्पित देवी देवताओं ने ले लिया था। सूर्य की किरणें निकलने से पहले ही हजारों गौओं की गर्दनों पर छुरी फेर दी जाती थी। धर्म के नाम पर आडम्बर व कुरीतियाँ बढ़ रही थी।

महर्षि ने इन सभी समस्याओं को देखा। भारत की दीन हीन अवस्था को देखकर उनका मन चीत्कार कर उठा। उन्होंने भारत की बिगड़ी हुई दशा को संवारने का प्रबल प्रयास किया।

स्वामीजी का स्वप्न था कि विश्व श्रेष्ठ बने और हमारा भारत देश जो कभी देव–भूमि कहलाता था, आज फिर उसी गरिमा और गौरव को प्राप्त करें। इसी उद्देश्य को लेकर आर्य समाज की स्थापना की गई। स्वामीजी के इसी स्वप्न को साकार करने के लिए आज विश्व भर में करीब दस हजार आर्य समाज मंदिरों के माध्यम से वेद प्रचार का कार्य हो रहा है। डी.ए.वी. स्कूल व कॉलेज में पढ़ने वाले लाखों विद्यार्थी हमारी आशा के केन्द्र हैं। आर्य समाजों द्वारा चलाए जा रहे विद्यालय भी महर्षि के स्वप्न को साकार करने में बड़ी भूमिका निभाएंगे। इसी पुस्तक में आगे हम महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज एवं उनके मन्तव्यों पर प्रकाश डाला गया है।

आर्य समाज–एक परोपकारी संगठन

आर्य समाज क्या कोई मत, सम्प्रदाय या देश–विदेश से सम्बन्धित संस्था है? इसका उत्तर देते हुए एक विचारक ने कहा है कि आर्यसमाज न तो कोई मत है और न वाद में लिपटा हुआ सिद्धान्त है। यह एक सुसंगठित, सुनियोजित, क्रान्तिकारी आन्दोलन है जिसका लक्ष्य विश्व के सभी मतों, वादों और मानव–मानव के बीच खड़ी भेद–भाव की दीवारों को समाप्त करना है। आर्यसमाज संसार में अन्याय और अज्ञान के खिलाफ वैचारिक क्रान्ति का मूलमन्त्र है, जिसका लक्ष्य मानवमात्र की उन्नति करना है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती स्वमन्तव्यामन्तव्य में कहते हैं –"मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूँ जो तीन काल में सबको एक–सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मत–मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है, किन्तु जो सत्य है उसको मानना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है" इस तथ्य की पुष्टि अन्तिम पृष्ठ पर दिये गये आर्यसमाज के नियमों पर दृष्टिपात करने से होती है। इनमें पहले दो नियम ईश्वर के सम्बन्ध में हैं। ईश्वर सृष्टिकर्ता और वेदज्ञान का प्रकाशक है, उसी की उपासना करनी चाहिए।

तीसरे, चौथे और पाँचवें नियम में व्यक्तिगत जीवन की उन्नति के लिए वेद का पढ़ना, पढ़ाना, सत्य का ग्रहण और प्रत्येक कार्य सत्यासत्य का विचार करके करने का विधान है। अन्तिम पाँच नियम सामाजिक जीवन को व्यवस्थित रुप में चलाने के लिए हैं। सामान्यतः यह कहा जा सकता है कि आर्यसमाज के नियम व्यक्ति, समष्टि और परमसत्ता को साथ लेकर चलते है।

आर्यसमाज के मन्तव्य

आर्यसमाज के मन्तव्य वेद पर आधारित हैं। जिनमें से मुख्य निम्नलिखित हैं –

1. एकेश्वर :

समस्त जगत् का उत्पादक, स्थापक और संहारक एक ईश्वर ही है। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा या तीसरा अथवा अन्य कोई देवी–देवता उसका सहायक नहीं है। वह निराकार, सर्वशक्तिमान है। जो जैसा कर्म करेगा उसको वैसा ही फल मिलेगा, यह उसका अटल नियम है। जीवों के पुण्य–पाप का फल देने से वह न्यायकारी है।

2. वेद :

वेद ईश्वर की वाणी है जो सृष्टि के आदि में मानवमात्र के लिए चार विषयों के हृदय में प्रकट हुई। अग्नि ऋषि को ऋग्वेद, वायु को यजुर्वेद, आदित्य को सामवेद और अथर्वा अंगिरा को अथर्ववेद का ज्ञान प्राप्त हुआ। इन चारों ऋषियों से ब्रह्मा ने वेद पढ़े और पुनः सर्वत्र वेद का पठन–पाठन प्रचलित हुआ। मानवमात्र के लिए समस्त ज्ञान–विज्ञान, विद्या और व्यवहार, धर्म–अधर्म, कर्त्तव्यादि का निर्देश वेद में दिया है। इनमें किसी देशविशेष या कालविशेष का नाम नहीं है। अन्य ऋषि लोगों ने इन मन्त्रों का साक्षात् करके उनका प्रचार किया इसी कारण आदरार्थ उन सूक्तों के द्रष्टारुप में उनका नाम आता है।

3. त्रैतवाद :

आर्यसमाज वेदानुसार ईश्वर, जीव व प्रकृति तीनों को नित्य मानता है। ईश्वर जीवों के कर्मफल का भोग देने तथा मुक्ति के लिए प्रकृति से सृष्टि की रचना करता है। प्रकृति जड़ होने से स्वयं जगद्रूप में परिणत नहीं हो सकती। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतन्त्र है। अविद्या के कारण जन्म–मरण के बन्धन में पड़ा हुआ जीव

मुक्ति के साधन—शम, दम, विवेक, वैराग्य व योगाभ्यास द्वारा मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

4. कर्मफल :

किये हुए कर्म का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। ईश्वर का नाम लेने, क्षमा माँगने या तीर्थों पर भ्रमण करने से पाप क्षमा नहीं हो सकते। हाँ, प्रायश्चित करने और उन्हें आगे न करने का निश्चय करने से उनका और संचय नहीं होगा। जो जैसा कर्म करता है उसे वैसा फल अवश्य ही मिलेगा।

5. पुनर्जन्म :

वृत्तियों के अनुसार कर्म और कर्मो से संस्कार बनते हैं। संस्कारों का सूक्ष्म रुप वासना है। इन्हीं वासनाओं के अनुसार जीव को अगला जन्म मिलता है। पुनर्जन्म पाकर वह जीव पहले के संस्कारों से प्रभावित होकर वैसे ही कर्म करता है और वृत्ति संस्कार, कर्म वासना, जन्म का चक्र चलता ही रहता है— जैसे रहट की माला में एक बाल्टी सामने आती है, उसमें भरा हुआ पानी गिरता है, पुनः दूसरी, तीसरी और फिर पहली। इसी भाँति जब तक मोक्ष के साधनों से इस वृत्ति—कर्म—संस्कार के चक्र को तोड़ा नहीं जाए तब तक जीव जन्म—मरण के चक्र में पड़ा ही रहता है। कर्मफल के अनुसार जीव को विभिन्न योनियों में जाना पड़ता है। मुक्त होने पर भी वह निर्धारित समय तक मुक्ति—सुख का उपभोग करने के पश्चात् पुनः संसार में वापस आता है।

6.वर्णाश्रम व्यवस्था :

मानव जीवन को पुरुषार्थ चतुष्टय प्राप्त्यर्थ चार आश्रमों में विभक्त किया हुआ है। विद्या, धर्म, शरीर, आत्मा और बौद्धिक विकास के लिए 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्याश्रम, समस्त विद्या पढ़कर धर्मपूर्वक विवाह करके सांसारिक कार्यो के लिए 25 से 50 वर्ष तक गृहस्थाश्रम, पुत्र के भी

पुत्र हो जाने पर 50 वर्ष के पश्चात् पुनः तप एवं विद्या की वृद्धि हेतु वानप्रस्थाश्रम और 75 वर्ष से शेष आयुपर्यन्त सन्यास आश्रम का विधान किया है। इसी भाँति समाज के सभी कार्य सुचारु रुप में चलाने के लिए वर्ण निश्चित किये गये हैं। इनमें विद्या पढ़ाना ब्राह्मण वर्ण का, राज्य कार्य क्षत्रिय का, कृषि व्यापार एवं धनार्जन वैश्य का और सेवा का कार्य शूद्र का है। ये वर्ण जन्म से न होकर गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार गुरुकुलों में विद्याध्ययन के पश्चात् योग्यतानुसार निर्धारित किये जाते थे। प्रत्येक वर्ण को उन्नति करके उच्च वर्ण में आने का अधिकार है। आर्य समाज इस वेद–शास्त्रोक्त सिद्धान्त में विश्वास रखता है।

7. स्त्री–शिक्षा :

परमात्मा की वाणी 'वेद' मानवमात्र के लिए है। उसे स्त्री, पुरुष सभी पढ़कर तदनुसार आचरण कर सकते हैं। लड़कों के समान लड़कियाँ भी विद्या पढ़ने की अधिकारिणी है। बिना स्त्री शिक्षा के योग्य सन्तानों का निर्माण नहीं हो सकता। शंकराचार्य एवं बाद के अन्य आचार्यो का यह कथन कि स्त्री, शूद्र वेद नहीं पढ़ें कपोलकल्पित है।

8. संस्कार :

गुणों की अभिवृद्धि करना ही संस्कार कहलाता है। बालक के गर्भ में आते ही उसकी पुष्ट्यर्थ गर्भाधान, पुंसवन, गर्भवती के स्वास्थ्य एवं मानसिक आरोग्यता के लिए सीमन्तोन्नयन, बच्चा उत्पन्न होने पर जातकर्म और पश्चात् नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन तथा चूड़ाकर्म संस्कारों को किया जाता हैं जब वह 5 या 8 वर्ष का हो जाए तो उपनयन संस्कार करके विद्याध्ययन के लिए गुरुकुल में प्रविष्ट करवा दिया जाता है। वहाँ गुरु उसका वेदारम्भ संस्कार करता है। पूर्ण विद्या पढ़ने के पश्चात पुनः गृहस्थाश्रम में प्रवेश के लिए गुरु समावर्तन संस्कार करके उसे गृहस्थाश्रम की अनुमति प्रदान करता है। माता, पिता व सम्बन्धी घर

आने पर योग्य कन्या के साथ सम्बन्ध निश्चित करके विवाह का उत्तरदायित्व पूर्ण करते हैं। गृहस्थ में वह विविध कर्त्तव्य कर्मों को धर्मपूर्वक करता हुआ पुत्रों को अपनी जिम्मेदारी देकर वानप्रस्थाश्रम में प्रविष्ट होता है, पुनः संन्यास का ग्रहण और मृत्यु के समय अन्त्येष्टि संस्कार किया जाता है। यही प्राचीन वैदिक प्रथा है। आर्यसमाज इन सोलह संस्कारों को मान्यता देता है।

9. शुद्धि :

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' सारे संसार को आर्य बनाओ। वेद के इस सन्देश के अनुसार जो लोग भूल से या बलपूर्वक विधर्मी बना लिये गये हैं, उन्हें पुनः वैदिक धर्म में लाना आर्यसमाज का दृढ़ संकल्प है। स्वामी श्रद्धानन्दजी के प्रयत्नों से लाखों मलकाने राजपूतों की आगरा-क्षेत्र में शुद्धि हुई। हरियाणा में मूले जाट, पंजाब में मेघ, ओड़ तथा रहमतिये शुद्ध किये गये। अब भी आदिवासी क्षेत्रों में शुद्धि का यह आन्दोलन चल रहा है।

10. राष्ट्रीय एकता :

आर्यसमाज का यह दृढ़ विश्वास है कि जब तक भाषा, धर्म, संस्कृति और सभ्यता एक नहीं होगी तब तक राष्ट्र में एकता, सुख-शान्ति और प्रगति नहीं हो सकती ।

इन मान्यताओं को आधार मानकर अपने प्रारम्भ काल में आर्य समाज ने स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य कार्य किये। धार्मिक क्षेत्र में मूर्ति-पूजा छुड़वाना, अवतारवाद का खण्डन , मृतक श्राद्ध, कब्रपूजा तथा तीर्थविशेष पर जाकर मुक्ति या पाप छूटने की भ्रान्त धारणाओं पर प्रबल कुठाराघात किया।

आर्यजाति में फैली बाल-विवाह, वृद्धविवाह, अनमेल-विवाह, छुआछूत, भूतप्रेत, अन्धविश्वास जैसी कुरीतियों का निवारण करने के

लिए प्रचार अभियान चलाया।

स्त्री–जाति की शिक्षा के लिए कन्या–पाठशाला और अनेक कन्या–गुरुकुल खोले गये।

स्वाधीनता संग्राम का शंखनाद सर्वप्रथम स्वामी दयानन्दजी ने ही किया। उनके पश्चात पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपतराय, सरदार भगतसिंह आदि क्रान्तिकारी आर्यसमाज की ही देन है कांग्रेस में 80 प्रतिशत आर्यसमाजी ही थे।

स्वदेशी वेष–भूषा, आचार, व्यवहार हिन्दी भाषा एवं गोरक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज का अपूर्व योगदान रहा।

शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज द्वारा संचालित गुरुकुल, डी.ए.वी. विद्यालय, कन्या पाठशालाएँ, अनाथाश्रम, विधवा–आश्रम, व्यायामशालाएँ जिनकी वर्तमान संख्या सहस्त्रों में है, आज भी सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं।

जब भी देश पर संकट के बादल आये है तो आर्यसमाज ने सबसे पहले सेवा, सुरक्षा और राहत केन्द्रों की स्थापना की है।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि आर्यसमाज राष्ट्र का सजग प्रहरी, वैदिक संस्कृति का रक्षक, वेदों का उद्धारक, स्त्री–जाति के समान अधिकारों का समर्थक, बिछुड़े भाइयों को गले लगाने वाला, मानवमात्र को समान समझकर उनसे उचित व्यवहार करने वाला और प्रगतिशील संगठन है, जिसका द्वार सभी के लिए खुला हुआ है।

सत्संग

जब तक शरीर स्वस्थ है और जरा–अवस्था अभी नहीं आई, जब तक इन्द्रियों में शक्ति है और आयु समाप्त नहीं हुई, तब तक आत्मा को खोजने का, आत्मा को ऊपर ले जाने का यह काम मेरे भाई! बहुत प्रयत्न से कर, पूरी शक्ति के साथ। घर में आग लग जाने पर कुआँ न खोदो, उस समय यह प्रयत्न सफल नहीं होता।

परन्तु यह जरा–अवस्था क्या है?–हमारे शास्त्र कहते है कि 15 वर्ष तक मनुष्य शैशव–अवस्था में रहता है, 15 से 25 वर्ष तक बाल–अवस्था में, 25 वर्ष से 75 वर्ष युवा–अवस्था में रहता है, 75 वर्ष से 100 वर्ष तक वृद्धावस्था में रहता है और 100 वर्ष से 125 वर्ष तक जरा–अवस्था में रहता है। इसके पश्चात जीवन समाप्त हो जाता है।

जब तक इनमें से कोई भी अवस्था है तब तक आत्मा को पाने का प्रयत्न करो मेरे भाई! जब तक इन्द्रियों में शक्ति है, जब तक अवस्था 125 वर्ष की नहीं हुई, तब तक प्रयत्न कर, रुक मत, आगे बढ़ता चल, और जब ये सब समाप्त हो गये, जब आँखों ने देखने से कानों ने सुनने से, पाँवों ने चलने से, हाथों ने हिलने से मना कर दिया तो फिर क्या होगा? तू क्या करेगा फिर ? अरे! सुन, सुन और कान खोलकर सुन –

संदीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः?

आग लग गई जब इस मकान में तो कुआँ खोदने से बनेगा क्या? नहीं मेरे भाई! उस समय कुआँ नहीं खोदा जाता। जब मकान जल रहा हो, लपटें उठ रही हों तो पानी निकालने का प्रयत्न व्यर्थ है। कुआँ खोदना है तो पहले खोदो। उस समय खोदो जब मकान विद्यमान है, जब इन्द्रियों में शक्ति है, जब हाथ–पाँव काम करते हैं। जब मकान ही जल गया तब कुआँ किस काम आयेगा? जो कुछ करना है जवानी में करो–

नभो न रुपं जरिमा मिनाति पुरा तस्या अभिशस्तेरधीहि।।

घनघोर बादल आकाश में छाए हैं। दूर–दूर तक उमड़ती हुई घटाओं का अन्त दिखाई नहीं देता, ऐसा लगता है जैसे तूफान आ गया। बिजली चमकती है, बादल गर्जते हैं। कान पड़ी आवाज सुनाई नहीं देती, परन्तु तभी क्या होता है, एक बूँद नीचे गिरती है, फिर दूसरी गिरती है, तब बूँद के पश्चात् बूँद गिरती है, गिरती चली जाती है बूँदें। घटता चला जाता है बादल, मिटती चली जाती है घटाएँ। इसी प्रकार यौवन का यह बादल भी एक–एक दिन, एक–एक रात, एक–एक क्षण करके छिन्न–भिन्न हो जाता है, मिट जाता है, समाप्त हो जाता है।

जाग ऐ मानव! जब तक यौवन की यह घटा विद्यमान है, तब तक कुछ कर ले, तब तक आत्मा को पाने का यत्न कर। यह घटा सदा नहीं रहेगी, इसे एक दिन समाप्त होना है। यह तेरे जीवन का स्वर्ण–युग है, इस स्वर्ण–काल को व्यर्थ की बातों में खोयेगा तो स्मरण रखना, फिर वृद्धावस्था आयेगी निश्चित रुप से। उस समय हाथ काम नहीं करेंगे, फिर क्या करेगा? उस समय शरीर चलेगा नहीं, फिर आत्मा का दर्शन पाने के लिए जायेगा कहाँ? उस समय घुटनों में दर्द होगा, तब आसन में कैसे बैठेगा? उस समय कान सुनेंगे नहीं, तब सत्संग में जाने का क्या लाभ होगा? नहीं मेरे भाई ! मेरी माँ ! मेरी बच्ची ! समय अब है अब आगे बढ़। इस स्वर्ण–युग में स्वर्ण–पथ पर चलों।

यह ओ३म् क्या है ?

कई लोग इसका नाम सुनकर घबरा जाते है, सोचते हैं कि यह क्या बला गले पड़ गई! कई लोग कहते है कि परमात्मा है ही नहीं। दावे के साथ कहते हैं कि परमात्मा है तो दिखाई क्यों नहीं देता? बच्चों की भाँति वे कहते हैं, 'हमारे सामने यह घड़ी रक्खी है, हमको दिखाई देती है। परमात्मा यदि कहीं हो तो दिखाई देना चाहिए। यदि यह दिखाई नहीं देता

तो इसका सीधा अर्थ यह है कि वह कहीं नहीं है। परन्तु सुना ! यह वस्तु आँखों से दिखाई नहीं देती। वायु को हम आँखों से नहीं देख पाते, शरीर पर चढ़ी इस त्वचा से अनुभव करते हैं। गर्मी और सर्दी को हम आँखों से देख नहीं पाते, इसी त्वचा–खाल से अनुभव करते हैं। आवाज को हम आँखों से नहीं देख पाते, कानों से सुनते हैं, सुगन्ध को नाक से देखते हैं, स्वाद को जिह्वा से देखते हैं। प्रत्येक वस्तु जो विद्यमान है वह आँखों से दिखाई नहीं देती। हमारे ये रणवीर जी हैं न, बचपन से इनकी नाक काम नहीं करती। सूँघने की शक्ति ही इनकी नाक में नहीं। इनके लिए संसार के सबसे सुगंधित पुष्पों का इत्र और बदबू से भरा मिट्टी का तेल सब बराबर हैं। इनकी दशा कश्मीर के उस महाराजा जैसी है जिनके पास कन्नौज का एक गन्धी बढ़िया–बढ़िया इत्र लेकर पहुँचा, प्रार्थना की, "महाराज ! आपसे मिलना चाहता हूँ, कुछ इत्र लाया हूँ, आपको दिखाना चाहता हूँ।" महाराज ने आज्ञा दी, "हमारे दरबार में उपस्थित होकर दिखाओ।" अत्तार महोदय पहुँचे दरबार में। महाराज ने पूछा, "कहाँ है इत्र?" अत्तार ने अपनी शीशियाँ दिखाते हुए कहा, "इनमें है।" महाराज ने अपनी हथेली आगे करके कहा, "लाओ दिखाओ।" अत्तार लोग प्रायः रुई के साथ थोड़ा–सा इत्र लगाते है और ग्राहक के सामने कर देते हैं कि वह अपनी नाक के पास ले–जाकर या अपने वस्त्र या हाथ पर लगाकर सूँघ ले। महाराजा ने हथेली आगे की तो अत्तार घबराया। वह महाराजा थे, उन्हें वह रुष्ट नहीं कर सकता था। शीशी उठाकर थोड़ा सा इत्र उनकी हथेली पर डाल दिया। महाराजा साहब उसे चरणामृत की भाँति पी गयें। फौरन मुँह बिगाड़कर, नाक सिकोड़कर, त्यौरी चढ़ाकर थू–थू करते हुए बोले, "यह तो अत्यन्त कड़वा है। दौड़ जा यहाँ से, ऐसी वस्तु हम नहीं लेंगे।" प्रतीत होता है यह महाराजा भी रणवीर की भाँति थे। उनकी नाक काम नहीं करती थी।

नाक काम न करे तो सुगन्ध या दुर्गन्ध उपस्थित होने पर भी दिखाई नहीं देती। संसार की प्रत्येक वस्तु आँखों से देखी नहीं जाती, अन्य इन्द्रियाँ हैं, उनसे अनुभव होती है। परन्तु कुछ ऐसी वस्तुएँ भी हैं जो आँख, नाक, कान, त्वचा या जिह्वा से भी ज्ञात नहीं होतीं, परन्तु फिर भी होती है अवश्य। अब देखिए, ईश्वर न करे आपमें से किसी भाई या बहन के पेट में दर्द हो जाये। आप चिल्लाएँ कि दर्द होता है और दूसरा व्यक्ति कहे 'होता कैसे है? मुझे तो दिखाई नहीं देता है। 'तो उसे आप क्या कहेंगे' ?

पीड़ा को पीड़ित लखे, और न जाने कोय।
या वह जाने साजना, जिस तन पीड़ा होय।।

आप जब कहते है कि दर्द होता है तो ठीक कहते हैं, क्योंकि दर्द वस्तुतः विद्यमान है। दूसरा व्यक्ति जब कहता है कि आपका दर्द उसे दिखाई नहीं देता तो वह ठीक कहता है, क्योंकि दर्द देखने की नहीं अनुभव करने की वस्तु है, अनुभव से दिखाई देती है। इसी प्रकार ईश्वर भी अनुभव की आँख से दिखाई देता हैं। यह आँख जब तक बन्द है, तब तक किसी दलील, किसी युक्ति से वह समझ में नहीं आता और जब अनुभव की यह आँख खुल जाती है, तब बिना किसी दलील के , बिना किसी बहस के भी वह दिखाई देता है क्योंकि वह विद्यमान है। वह निश्चयरुपेण है, इसमें शक और सन्देह की रत्तीभर भी आशंका नहीं।

ईश्वर नहीं तो संसार की व्यवस्था कौन करता है? यह लाखों वर्गमील में फैली हुई भूमि, ये बड़े–बड़े सागर, ऊँचे–ऊँचे पर्वत, ये गर्जते हुए बादल, हू–हू करती हुई आँधी, ये तड़पते हुए तूफान, जलते हुए मरुस्थल और अनन्त वनस्पतियाँ, ये एक–एक इंच में अरबों की संख्या में समा जाने वाले , हिलते हुए, दौड़ते हुए कीटाणु, ये कीड़े, मकोड़े, साँप और छिपकलियाँ, सागर में करोड़ों प्रकार की मछलियाँ,

भूमि पर लाखों प्रकार के पशु—कौन इस व्यवस्था को चलाता है?

और फिर इस पृथिवी से पौने तीन लाख मील की दूरी पर चमकता हुआ चाँद, जो आकर्षण के तार से पृथिवी से बँधा हुआ है, इतना परे नहीं जा पाता कि दूर जाकर कहीं खो जाये, इतना निकट नहीं आ पाता कि पृथिवी के साथ टकरा जाये। कौन इस व्यवस्था का व्यवस्थापक है?

कौन इस पृथिवी को कहता है कि अपने चाँद को लेकर सूर्य के गिर्द घूमती जाओ? एक क्षण के लिए, एक सैकण्ड के हजारवें हिस्से कि लिए रुको मत। सैकड़ों, सहस्त्रों, करोड़ो वर्ष बीत जायें तो भी घूमती रहो। कौन ऐसा कहता है? कौन इस व्यवस्था को चलाता है?

और फिर यह आठ अरब मील लम्बा, इतना ही चौड़ा सूर्यमंडल अपने सभी ग्रहों के साथ इस महासूर्यमंडल में, इस आकाशगंगा में या आध्यात्मिक भाषा में कहें तो, इस ब्रह्माण्ड के अन्दर, सात मील प्रति सैकण्ड की गति से लगातार एक महासूर्य के गिर्द घूम रहा है तो किस प्रकार? कौन इस व्यवस्था को चलाता है?

निश्चित रुप से कोई शक्ति है, जो सर्वत्र विद्यमान है, उसी को हम परमात्मा कहते हैं। इसी शक्ति के कारण माँ के पेट में एक छोटा सा कीड़ा है जिसे हम आरम्भ में दूरबीन से ही देख पाते हैं। धीरे—धीरे वह बड़ा होता है। उसके हाथ पैर, मुँह बनते हैं, तब वह जन्म लेता है, देखना सीखता है, बोलना सीखता है, चलना सीखता है, लगातार बड़ा होता जाता है, जवान होता है, फिर बूढ़ा होने लगता है। तब एक दिन आता है है जब उसकी सभी शक्तियाँ समाप्त हो जाती है, उसका अन्त हो जाता है। कौन यह व्यवस्था करता है कि पहले प्रत्येक वस्तु बढ़े, फिर जवान हो; फिर बूढ़ी हो, फिर समाप्त हो जाये? मनुष्य की बनाई वस्तु तो ऐसी नहीं होती। मनुष्य की बनाई वस्तु पूर्ण और कार्य में समर्थ दशा में

हमारे सम्मुख आती है, तब धीरे–धीरे समाप्त हो जाती है। वह बढ़ती नहीं , फैलती और फूलती नहीं। भगवान के बनाये हुए पदार्थ भी बचपन से जवानी की ओर, वहाँ से बुढ़ापे की ओर जाते है और यह सारा संसार बचपन से जवानी की ओर, जवानी से बुढ़ापे की ओर जाता है। इसलिए हम कहते है कि इसको बनाने वाला भगवान् है।

देवताओं और असुरों में क्या फर्क है?

देवताओं और असुरों की एक मनोरंजक कहानी आपको सुनाता हूँ। एक धनी सज्जन ने एक बार बहुत–से विद्वानों को भोजन का निमंत्रण दिया। अतिथियों में देवता भी थे और असुर भी। सब अतिथि एकत्रित हुए तो असुरों ने गृहपति से कहा, ''आप लोग सदा हमारे साथ अन्याय करते हो, अब हम अन्याय सहन नहीं करेंगे।'' गृहपति ने पूछा, ''असुर विद्वानो! आपके साथ कौन–सा अन्याय होता है?''

असुर बोले, ''विद्या में, ज्ञान में, विज्ञान में, शक्ति में, हर बात में हम देवताओं से आगे हैं। इतना होते हुए भी जहाँ–कहीं भी हम दोनों को बुलाया जाता है, वहाँ पहले देवताओं को भोजन मिलता है, बादमें हमको। यह अन्याय सहन करने योग्य नहीं है। आप देवताओं के साथ हमारा शास्त्रार्थ कराइये किसी भी विषय पर, किसी बात के सम्बन्ध में। यदि हम जीत जायें तो इस अन्याय को समाप्त कीजिये अन्यथा हम इस अन्याय को चलने नहीं देंगे।''

गृहपति ने कहा, ''आप क्रोध न कीजिये, पहले आप ही भोजन करेंगे, देवता पीछे खा लेंगे, परन्तु एक शर्त आपको माननी होगी।'' असुरो ने पूछा, ''क्या शर्त है?''

गृहपति ने कहा, ''यह कि आपके दोनों हाथों के साथ कोई तीन–तीन फीट की लकड़ियाँ बाँध दी जायेंगी। एक लकड़ी दायें हाथ के साथ दूसरी बायें हाथ के साथ, इसी प्रकार आपको भोजन खाना होगा।''

असुरों ने कहा, ''ऐसे ही सही, हम खा लेंगे।'' बाँध दी गई

लकड़ियाँ। असुर लोग बैठ गये। सामने पत्तल रख दिये गये। उनमें भोजन परोसा जाने लगा। पूरी, कचौरी, हलवा, खीर, रसगुल्ले, गुलाब जामुन, गोभी, मटर, आलू, टमाटर सब रख दिये गये।

गृहपति ने कहा, "अब खाओ असुर विद्वानो !"

असुरों ने खाने के लिए हाथ बढ़ाए। हाथों में लकड़ियाँ बँधी थीं, उन्होंने हाथ से पूरी उठाई कि मुँह में डालें परन्तु वह मुँह में पहुँचने के बजाय सिर के पीछे जा गिरी। इस प्रकार प्रत्येक वस्तु का बुरा हाल हुआ। आध घण्टे तक असुर लोग प्रयत्न करते रहे परन्तु एक भी ग्रास उनके मुँह में नहीं गया।

आध घण्टे के पश्चात गृहपति ने कहा, "अब उठो असुरो! आपका समय हो गया। अब देवता भोजन करेंगे।" असुर बेचारे भूखे ही उठ गये। स्थान को साफ किया गया। नई पत्तले रखी गई। उनके पास देवताओं को बैठा दिया गया। उनके हाथों में भी तीन–तीन फीट की लकड़ियाँ बाँध दी गई। उनकी पत्तलों में भी खाना परोस दिया गया। उन्हें भी कहा गया, "अब खाओ, देवताओ"

देवताओं ने कहा, "हम खायेंगे अवश्य, परन्तु एक–दूसरे के सामने बैठकर खायेंगे। हम आधे लोग इधर बैठेंगे, आधे उधर उनके सामने। हमारी पत्तलें हम लोगों के सामने रख दीजिये।

गृहपति ने ऐसा ही किया। देवता एक–दूसरे के सामने बैठ गये। एक देवता ने अपने हाथों से सामने बैठे देवता की पत्तल से पूरी उठाई उसके मुँह में डाल दी। सामने बैठे देवता ने पहले देवता के आगे रखी पत्तल से कचौरी उठाई, उसके मुँह में डाल दी। इस प्रकार सब देवताओं ने एक–दूसरे को भोजन खिला दिया, वस्तुएँ समाप्त कर दीं, सबका पेट भर गया।

यह है देवता और असुर में अन्तर ! असुर केवल अपना पेट भरना चाहता है परन्तु भर नहीं पाता। देवता दूसरे को खिलाकर प्रसन्न होता है औरों को खिलाने से उसका अपना पेट भी भर जाता है।

क्या वेदों का ज्ञान सबके लिए है ?

हाँ, परमेश्वर यजुर्वेद के मंत्र में कहता है कि मैं सब मनुष्यों के लिए इस कल्याणकारी वेद वाणी का उपदेश करता हूँ । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, स्त्री, पुरूष सबके लिए वेद का प्रकाश है ।

वेद ज्ञान का प्रकाश किसने और क्यों दिया ?

वेदों का ज्ञान परमपिता परमात्मा ने चार ऋषियों (अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा) के माध्यम से समस्त मानव जाति के लिए दिया ।

वेदों में मनुष्य के कर्त्तव्यों तथा सब सत्य विद्याओं और पदार्थो के विषय में सब कुछ लिखा है।

अन्य धर्म ग्रन्थों को छोड़कर वेद क्यों पढ़े ?

अन्य सभी धर्म ग्रन्थ किसी व्यक्ति विशेष द्वारा रचित कृति है जो किसी महापुरूष विशेष के अनुकरणीय कार्यो को दर्शाता है। इन कृतियों में अलंकार रूप में कही गयी बातों को मनुष्य सच मानकर घोर अंधविश्वास में फस जाता है। जैसे रामायण श्री राम के चरित्र पर, महाभारत श्री कृष्ण के चरित्र पर, कुरान मोहम्मद साहब पर, बाईबिल महात्मा यीशु पर आदि। इन सभी धर्म ग्रन्थों में काव्य रूप में उन्हीं बातों को बताने का प्रयास किया है जो वेद में पहले से ही मौजूद है, लेकिन सम्पूर्णता किसी भी ग्रन्थ में नहीं है, सम्पूर्णता केवल और केवल वेद में ही है ।अब आप स्वयं निर्णय कर लिजिए कि आप नदी में नहाना चाहते हैं या उस सागर में जिसमें जितनी बार गोते लगायेंगे उतनी बार नये-नये ज्ञान के मोती लेकर बाहर आयेंगे। वेद ज्ञान मनुष्यकृत ज्ञान नहीं है, अर्थात वह किसी व्यक्ति द्वारा लिखा हुआ या किसी महापुरूष से सम्बन्धित नहीं है, न ही किसी व्यक्ति विशेष, समुदाय विशेष, धर्म विशेष या देशकाल में बंधा हुआ है। इसलिए संसार के सभी मत-मतान्तर और महापुरूष इसे मानते है। मानव जीवन की समस्त श्रेष्ठ इच्छाओं की प्राप्ति का मार्ग केवल वेद में प्राप्त हो सकता है। ईश्वर, प्रकृति, जीव, ज्ञान, विज्ञान, भूगोल, परिवार, व्यवहार, धर्म, राजनीति, संगीत, स्वास्थ्य, शस्त्रकला आदि सब कुछ इसमें है। इसलिए वेद के विरुद्ध और उसकी मान्यताओं का खण्डन आज तक संसार में कोई नहीं कर सका। इस प्रकार यह सर्वमान्य ज्ञान है। इस प्रकार हमें वेद पर दृढ़ता से विश्वास करना चाहिए।

एक - विचार

बड़ा कौन ?

एक मिट्टी की मूर्ति बनाने वाला कलाकार ईश्वर से कहता है-

'हे ईश्वर ' तू भी एक कलाकार है और मैं भी एक कलाकार हूँ। तुने मुझ जैसे असंख्य मानव बनाकर इस धरती पर भेजे हैं और मैंने तेरी असंख्य मूर्तिंया बनाकर इस धरती पर 'बेची' हैं ।

पर-

'हे परमपिता' उस समय बड़ी शर्म आती है, जब तेरी बनाई हुई मानव-मूर्तियाँ मेरी बनाई हुई पाषाण-मूर्तियों के आगे शीश झुकाती है।

बड़ा कौन है ?

सत्य पर विचार करें

वेद कितने हैं व इनमें कितने मंत्रों का समावेश है

ऋग्वेद	-	१०५८९ मंत्र
यजुर्वेद	-	१९७५ मंत्र
अथर्ववेद	-	५९७७ मंत्र
सामवेद	-	१८७५ मंत्र

पृथ्वी काल को चार युगों में बाँटा जाता है

सतयुग	-	१७२८००० वर्ष
त्रेतायुग	-	१२९६००० वर्ष
द्वापर युग	-	८६४००० वर्ष
कलियुग	-	४३२००० वर्ष

आर्य समाज भगवती नगर

महिला कार्यकारिणी सदस्य

।।ओ३म्।।

मानव धर्म सूत्र

आर्य समाज के नियम

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है।उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिये।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीति-पूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व-हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

मुद्रक : संगम ऑफसेट प्रिन्टर्स, उदेई मोड़, गंगापुर सिटी मो. 9928122362